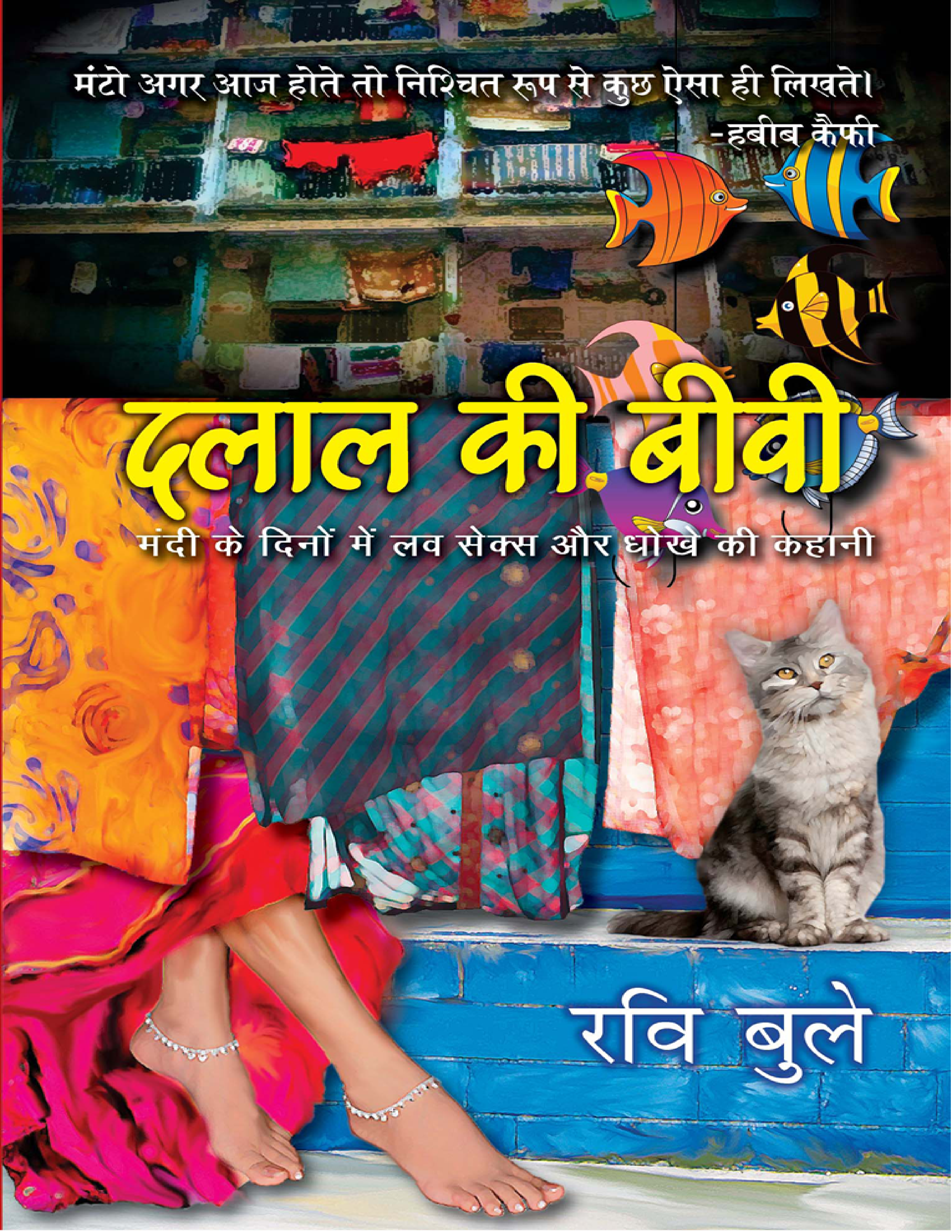
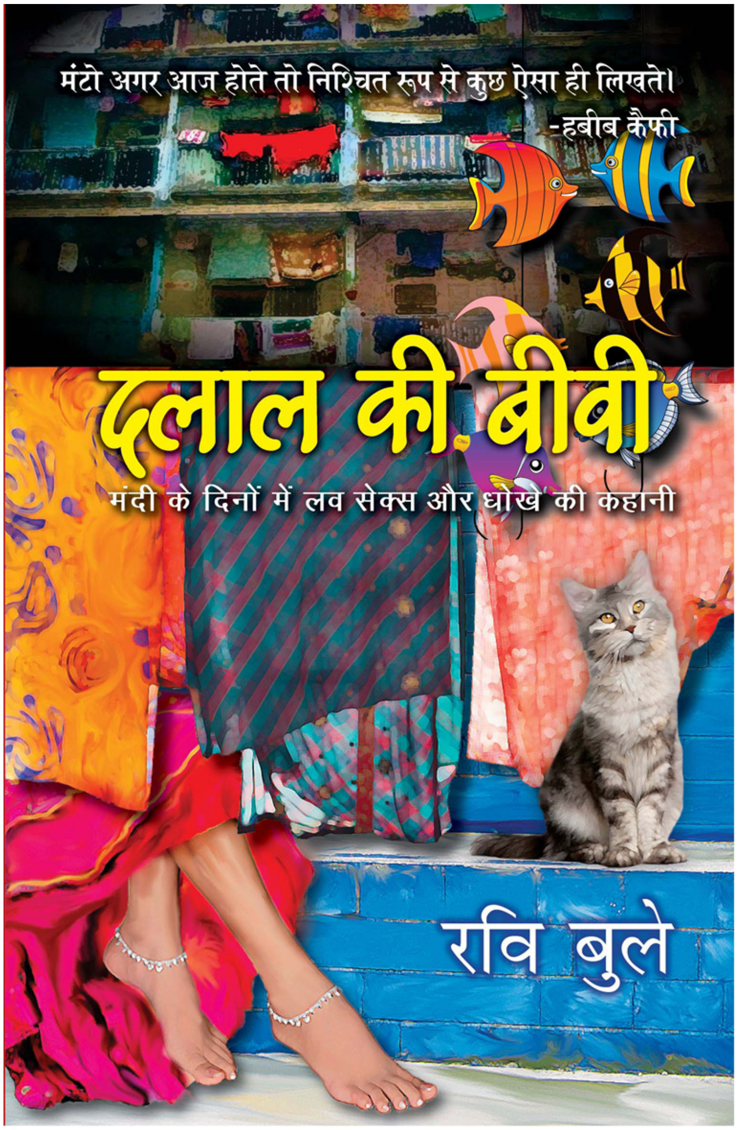
मंटो अगर आज होते तो निश्चित रूप से कुछ ऐसा ही लिखते।
-हबीब कैफी

दलाल की बीवी

मंदी के दिनों में लव सेक्स और धोखे की कहानी

रवि बुले




मंटो अगर आज होते तो निश्चित रूप से कुछ ऐसा ही लिखते।
-हबीब कैफी
दलाल की बीवी
मंदी के दिनों में लव सेक्स और धोखे की कहानी
रवि बुले

दलाल की बीवी

मन्दी के दिनों में लव सेक्स और धोखे की कहानी

रवि बुले

हार्परकॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया

आई
सौ.कां. रमण बुले की पुण्य स्मृति को

दलाल अकेला नहीं था।

उसके साथ पुलिस थी। एक सिपाही आगे, एक उसके साथ और एक पीछे। सब पैदल चल रहे थे। दलाल के दोनों हाथ सामने की तरफ़ रस्सियों से बँधे थे। उसके हाथों में हथकड़ी भी थी। हथकड़ी साथ चल रहे सिपाही की कमरपेटी से बँधी थी। दलाल के बाल बिख़रे थे। कपड़े अस्त-व्यस्त। चेहरे के बाएँ हिस्से में थोड़ी सूजन थी। इसके बावजूद उसके चेहरे पर शान्ति थी। वह संयत और सधे कदमों से चल रहा था। बिना प्रतिरोध के। पुलिस का एक इंस्पेक्टर तीनों सिपाहियों और दलाल के पीछे बाइक पर सवार था।

इन सबके आगे बच्चों की टोली थी। नकली चोर-पुलिस का खेल खेलने वाले बच्चे असली दृश्य देख कर चकित थे। वे दौड़ते हुए शोर कर रहे थे। पुलिस जब दलाल को लेकर मण्डी के बीचोंबीच पहुँची, तो बच्चों के शोर से वहाँ मौजूद लोगों को पता चला... दलाल ने ख़ून किया है...!!

ख़ून...!!

यह घटना हालाँकि लोकल थी, मगर इसके कारण ग्लोबल थे।

1.

रविवार का दिन था। बरसात का मौसम था। आसमान में बादल थे। बारिश किश्तों में हो रही थी। मण्डी की छोटी-संकरी गलियाँ, घुमावदार नुक्कड़ और जालीदार चौराहे कीचड़ से लथपथ थे। मण्डी के बीचोंबीच उनीन्दी मगर चमकीली आँखों वाला एक मांसल साँड़ खड़ा डकार रहा था। उससे बेपरवाह भूरे, काले, सफ़ेद चकत्तों वाली रोएँदार गायें इधर-उधर बिख़रा हरा कचरा चर रही थीं। इन जानवरों से बच कर चल रहे लोगों के पैरों तले सड़ी हुई सब्जियाँ कुचली जा रही थीं। सड़ी हुई सब्जियों से सड़ाँध उठ रही थी और ताजी सब्जियों की सुगन्ध से मिल कर एक खट्टी-मीठी गन्ध का निर्माण कर रही थी। सब्जियों की दुकानों के बीच कहीं-कहीं मसालों की दुकानें भी थीं। मसालों से उठने वाली गन्ध बाकी तमाम गन्धों से तेज़ थी और नाक से घुस कर दिमाग़ तक असर करती थी। मण्डी के आख़िरी मोड़ पर गोश्त की दुकानें थीं। खाल उतारे हुए बकरे और भैंसे, पुट्ठों में लोहे के मोटे काँटों को फँसा कर दुकानों के अन्दर-बाहर टाँगे गये थे। जबकि मुर्गियाँ लगे हाथ ग्राहकों की आँखों के सामने ही कट रही थीं। यहीं एक कोने में मछलियों की दुकानें थीं। हाथ-हाथ भर लम्बी मछलियाँ कतार से सजी थीं। उनकी आकर्षक, गोल, स्तब्ध और स्थिर आँखों के आगे यह नश्वर संसार अपनी गति से चल रहा था।

विश्व भर के बाज़ारों में मन्दी किसी जहरीली गैस की तरह फैली हुई थी। लोग नौकरियों को अपने प्राणों की तरह बचाने में जुटे थे। अन्तरराष्ट्रीय बाज़ार के विशेषज्ञ अपनी-अपनी भाषा में चिल्ला-चिल्ला कर चेता रहे थे... 'लिसन प्लीज़... दिस इज़ फ़ाइनेंशियल हरिकेन। सावधान... यह फ़ाइनेंशियल सुनामी है।' इस सुनामी में लोगों की आय के स्रोत उजड़े जा रहे थे। चारों दिशाओं में डर था। शंका-आशंका थी। हड़कम्प था। बाज़ार में हर किसी की ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे अटकी थी। इन अटकी हुई साँसों के सेंसेक्स में एक ही शब्द लटक रहा था... पैसा!! अर्थ की नब्ज पढ़ने वाले शास्त्री, घबराए हुए लोगों को समझा रहे थे कि धन की तरलता नष्ट हो रही है।

परन्तु विशेषज्ञों की शास्त्रीय समझाइशें मण्डी में सब्जियाँ, मसाले और गोश्त खरीदने वालों के लिए अबूझ पहेलियों-सी थीं। वे तो बस चीज़ों के दाम सुन कर दिल थाम रहे थे। आँखें फाड़ कर आश्चर्य से दोहरे हुए जा रहे थे...।

क्या...!!

कोई बाज़ार को कोस रहा था। कोई सरकार को।

ऐसे भी गरीब थे, जो अपने पेट को लानत भेज रहे थे।

मगर क्या हो सकता था?

संसार का कारोबार नियमों से बँधा था।

नियम ढीले नहीं हो सकते थे।

नियम कसाई के हृदय की तरह सख़्त थे और उन्हें किसी हाल में नहीं पिघलना था। मन्दी के इस निर्दय दौर में, विश्व मण्डी के तमाम मोड़ों पर कटे हुए बकरों और भैंसों की तरह खाल उतारे हुए इंसान भी पुट्ठों में लोहे के मोटे काँटों को फँसा कर टाँगे गये थे। कहीं-कहीं वे

मुर्गियों की तरह लगे हाथ कट रहे थे या फिर कतार से सजी मछलियों की तरह नश्वर संसार को कातर निगाहों से देखते हुए, बाज़ार में चाबुक की तरह पड़ रही कीमतों की मार से बेदम हुए पड़े थे!!

यह एक भयानक सपना था...!!

तीन ओर से महासागर से घिरे महानगर मुम्बई का पश्चिमी उप-नगर था, मलाड।

मलाड के अन्तिम छोर पर बसा था मालवणी।

मालवणी के आख़िरी सिरे पर थी मण्डी।

महानगर के मौसम विभाग ने दोपहर में 'हाई टाइड' की चेतावनी दी थी। परन्तु मण्डी में इस चेतावनी का कोई असर नहीं था। मण्डी एक खाड़ी से लगी थी। लेकिन खाड़ी दूर-दूर तक दलदली थी। इतनी दूर तक दलदली कि जहाँ तक नज़रें जातीं, वहाँ तक समुन्दर नज़र नहीं आता था। इसके बावजूद उस दिन तूफ़ान आया...!!

तेज़ हवाओं के बीच सब्जी, मसाले और गोश्त के अत्यधिक बढ़े हुए भावों पर भुनभुनाते लोग हाथ खींच कर, मन मार कर थोड़ी-थोड़ी खरीदारी कर रहे थे कि तभी मण्डी के एक छोर पर शोर उभरा...!!

लोगों के सिर उस तरफ़ घूमे।

सबसे पहले बच्चों की टोली दिखी, जो आगे बढ़ती हुई बार-बार पीछे मुड़ कर देख रही थी। बच्चे चकित थे और उनकी आँखों में विस्मय था। वे एक-दूसरे से फुसफुसा कर बातें करते थे और तेज़ी से आगे दौड़ कर चबूतरे जैसी किसी जगह पर चढ़ जाते थे। फिर पीछे देखने लगते थे।

पीछे कोई आ रहा था...!!

कौन...?

मण्डी की भीड़ ठहर कर पहले बच्चों को देखती और उसके बाद उस तरफ़, जिधर बच्चे देखते थे...। बच्चों की भीड़ मटमैले मौसम में रंग-बिरंगी तस्वीर की तरह थी। ...और थोड़ी देर बाद इस मटमैले मौसम और रंगीन तस्वीर के बीच एक चेहरा उभरा...!!

दलाल का चेहरा... !!

मण्डी में पसरा सन्नाटा गाढ़ा हो गया। जो जहाँ था, वहीं जड़ हो गया। आसमान में बादल और काले-घने हो गये। लगा कि ये बरसे... वो बरसे...। हवा में नमी बढ़ गयी और लोगों को जिस्म पर चिपचिपाहट महसूस होने लगी। दलाल किसी प्रेत की तरह चल रहा था। निर्विकार। शान्त।

पुलिसवालों से घिरा दलाल कीचड़ से लथपथ मण्डी की छोटी-संकरी गलियों, घुमावदार नुक्कड़ों और जालीदार चौराहों को पार करता, जानवरों से बचकर रास्ता बनाता, सड़ी हुई सब्जियाँ पैरों तले कुचलता, उनसे उठने वाली सड़ाँध और ताज़ी सब्जियों की सुगन्ध से मिल कर बन रही खट्टी-मीठी गन्ध के बीच से होता हुआ आगे बढ़ रहा था। जब वह मसालों की दुकानों के सामने से गुजरा तो पल दो पल के लिए उसके स्थिर चेहरे पर एक शिकन उभरी। मसालों से उठने वाली तेज़ गन्ध उसकी नाक में घुसी और सीधे दिमाग़ से टकराई। दलाल, जो अब तक जैसे किसी मूर्छा में चल रहा था, उसे पल-दो पल के लिए

होश आया। उसके चेहरे पर पीड़ा की लकीरें चमकीं। मगर तत्काल वह पहले की तरह संयत हो गया। सधे कदमों से बढ़ने लगा। बकरे और भैंसे के ताज़ा गोश्त से उठने वाली भाप और कटने की बारी का इन्तज़ार कर रही, चिंचियाती मुर्गियों का उसे होश नहीं था। सिर्फ़ दलाल क्या... पूरी मण्डी में लोग अपने-आप को भूले हुए थे। सबकी नज़रें दलाल पर थीं। तमाम दुकानों को पार करता दलाल अन्ततः मण्डी के अन्तिम मोड़ पर कतार से सजी, हाथ-हाथ भर लम्बी मछलियों के नजदीक पहुँचा कि तभी... वह अजीबोगरीब घटना घटी, जिसके गवाह कोई दो-चार-दस लोग नहीं, बल्कि सैकड़ों थे। दलाल के नजदीक आते ही अपनी आकर्षक, गोल, स्तब्ध और स्थिर आँखों से चारों ओर के संसार को मृत मान कर टुकुर-टुकुर निहारती मछलियाँ हँसने लगीं...!

बिक्री के लिए रखी हुई मछलियाँ दलाल को देख कर हँसने लगीं...!!

मछलियों की हँसी बर्फ़ की तरह ठण्डी और आसमानी नीली थी। मण्डी के ऊपर का आकाश मछलियों की हँसी से भर गया। थोड़ी ही देर में, आकाश में छाये बादल आसमानी नीले रंग की रुईदार बर्फ़ में बदल गये और मण्डी में छाये सन्नाटे की ठण्डी परतों पर कतरा-कतरा बरसने लगे। बरसात के साथ मछलियों की हँसी कतरा-कतरा बिखरती हुई वहाँ मौजूद लोगों पर गिरने लगी। कुछ पल तो सब सकते में रहे... फिर किसी के अन्दर ख़ौफ़ पैदा हुआ तो किसी के भीतर विस्मय। जाने क्या सोच कर वे पलटे और तेज़ी से अपने घरों को लौट गये। जो कुछ उन्होंने अपनी आँखों से देखा, वैसा कभी कानों से नहीं सुना था। न ही उन्होंने कभी इसकी कल्पना की थी।

उनके होंठ सिल गये। किन शब्दों में बयान करें...? क्या बयान करें...?

कोई कैसे यकीन करेगा, यह सोचना तो बाद की बात है।

मण्डी में सन्नाटा छा गया।

मण्डी सूनी हो गयी।

2.

जब यह अजीबोगरीब घटना घटी, यह नाचीज़ लेखक मण्डी में ही था।

बारिश की हल्की फुहारों में भीगने की उम्मीद लिए, रविवार की छुट्टी का आनन्द लेने का विचार करता हुआ वह मण्डी में खरीदारी करने पहुँचा था। परन्तु सब्जी, मसाले और गोश्त के दाम सुन कर छुट्टी का आनन्द लेने का उसका विचार क्रमश: चिड़चिड़ाहट में बदलता जा रहा था। लेखक ने महसूस किया कि मन्दी के दौर में मण्डी से गुजरना अपने लिए तनाव मोल लेना था। लेकिन दूसरे लोगों की तरह उसे भी घर चलाना था। उसकी बीवी थी। एक बच्चा था। एक नौकरी थी। ऐसे में उसके पास इतनी फ़ुर्सत नहीं थी कि दुनिया के हाल-चाल जान लेता। मण्डी से लौटते हुए उसने ख़ुद से सिर्फ़ इतना कहा कि मरी हुई मछलियों का हँसना कितना ही अजीबोगरीब क्यों न रहा हो, परन्तु मुँह फाड़ कर हँस रही मन्दी और महँगाई के आगे कम ही भयावह और चौंकाऊ है।

दलाल को पुलिस ने थाने की मच्छरों से भरी, अँधेरी और पेशाब की बदबू से गन्धाती कोठरी में बन्द कर दिया था। सब वापस अपने-अपने काम पर लग गये थे। लेखक भी अपनी नौकरी में प्राण-पण से चिपक गया।

इन तमाम परिस्थितियों के बीच लोकल घटना से शुरू होने वाली यह ग्लोबल कहानी यदि सहज नष्ट हो जाती तो कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। परन्तु यह नहीं हुआ। होनी को कुछ और ही मंजूर था।

एक दिन यह लेखक जब दफ़्तर पहुँचा तो मैनेजमेंट ने उसके हाथों में 'पिंक स्लिप' थमा दी!!

लेखक 'पिंक स्लिप' का मातम क्या करता...?

उसने ख़ुद को अपनी 'स्टडी की कस्टडी' में डाल दिया। यह सोच कर कि मन्दी की सुनामी के गुजर जाने तक इससे सुरक्षित और कोई जगह क्या हो सकती है?

लेखक के पास कम से कम 'स्टडी' का तो आसरा था, जबकि डार से बेमौसम झरे पत्तों जैसे लाखों-करोड़ों लोग दुनिया में थे, जिनके पास कोई सहारा न था। वे आर्थिक रूप से तो टूटे ही, दैहिक-दैविक-भौतिक रूप से भी बिख़र गये। मन्दी की सुनामी ने उन्हें कहीं का न छोड़ा। सारी जमा पूँजी डूब गयी। सारे इनवेस्टमेंट बेकार हो गये। उनकी भूख-प्यास मर गयी। वे अनिद्रा रोग के शिकार हो गये। ब्लड प्रेशर, शुगर, डिप्रेशन, स्ट्रोक, पैरालिसिस, हार्ट अटैक... खंजर की तरह जिस्म में उतरने लगे। आर्थिक मुश्किलों के बीच इस लेखक पर भी हाइपरटेंशन ने हमला किया। उसकी नींद कच्ची हो गयी...। कच्ची क्या... लगभग खत्म हो गयी। ...और तभी एक रात, जब लेखक नींद के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था, उसने वराण्डे में एक बिल्ली और उसके बच्चों के बीच हो रही बातचीत सुनी...!!

जी हाँ, जैसे आप चौंके हैं... वैसे ही यह लेखक भी चौंका था।

यह नाचीज़ समझ नहीं पा रहा था कि बिल्लियाँ आख़िर इनसानों की तरह कैसे बातचीत कर सकती हैं? या फिर मन्दी और महँगाई की मार से पैदा हुई मानसिक उलझनों के कँटीले

तारों में गुँथे हुए लेखक के मस्तिष्क में कुछ ऐसे रासायनिक परिवर्तन हो गये, जो उसे बिल्लियों की 'म्याऊँ' भी इनसानी बातचीत की तरह साफ़ सुनाई देने लगी!! यह बात दिमाग़ में आते ही लेखक को यह भी ख़याल आया कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मछलियों का हँसना सिर्फ़ उसने सुना हो...!!

हो सकता है कि मण्डी में मछलियाँ हँसी ही न हों...!!

यह ख़याल आते ही लेखक बिस्तर पर लेटे-लेटे सिर से पाँव तक पसीने में तर हो गया!!

क्या यह किसी साइकिएट्रिस्ट से मिल लेने के संकेत हैं? ख़तरे की घण्टी?

दुनिया के हर कोने में लोगों को मनोचिकित्सकों की ज़रूरत पड़ रही थी। बुरे वक़्त में और बुरे की आशंकाएँ डरा रही थीं। ऐसे में अगर कोई उनकी मदद कर सकता था तो उनका मन। मन को समझने के लिए मनोचिकित्सकों की आवश्यकता थी। लोगों की भीड़ मनोचिकित्सा केन्द्रों में बढ़ रही थी। तो क्या इस कल्पनाशील लेखक को भी क्लिनिक में जाकर अपनी जाँच कराने का वक़्त आ गया? जब मछलियों की हँसी कानों में गूँजने लगे..., जब बिल्लियों की म्याऊँ... म्याऊँ... में मनुष्यों की बोली सुनाई पड़ने लगे तो समझदार को इशारा काफ़ी है...।

डर कर लेखक ने कस के आँखें बन्द कीं, कान बन्द किये और प्रार्थना से बढ़ कर ईश्वर के आगे आधी रात को नींद के लिए गिड़गिड़ाने लगा। परन्तु कोई फ़ायदा नहीं हुआ। अन्तत: एक ही उपाय बचा कि लेखक अपने विस्मय और डर को त्याग कर बिल्लियों की वह बातचीत सुने, जो म्याऊँ... म्याऊँ... होकर भी मनुष्यों की बोली की तरह स्पष्ट थी!! सो, लेखक उठ कर बैठ गया और कुछ ऐसी मुद्रा में सुनने लगा, जैसे किसी की बात चोरी-छुपे दीवार से कान लगा कर सुनी जाती है...

बिल्ली अपने चार छोटे-छोटे बच्चों को भोजन करा रही थी। दिन भर इधर-उधर भटक कर उसने जो भोजन इकट्ठा किया था, वह उनके सामने परोस दिया था। परन्तु बच्चे जिद कर रहे थे कि उन्हें तो मछली का मांस ही खाना है।

'म्याऊँ... म्याऊँ... माँ, अब तो बहुत दिन हो गये... मछली का स्वादिष्ट मांस खाये... हमें ये खाना नहीं चाहिए...।'

यह सुन कर बिल्ली ने कहा कि थोड़े दिन और सब्र करो। इस इलाके के लोग डरे हुए हैं। जब से उन्होंने मण्डी में मछलियों का हँसना सुना है, उनके मन में मछलियों को लेकर डर बैठ गया है। इसीलिए आजकल मण्डी में कोई मछली नहीं खरीदता। जब कोई नहीं खरीदता तो यहाँ मछलियों की बिक्री भी बन्द हो गयी है।

'माँ... क्या मरी हुई मछलियाँ वाकई हँस सकती हैं?'

इस सवाल पर बिल्ली ख़ामोश हो गयी। कुछ पल रुक कर बोली कि यह संसार बहुत ही विचित्र है। इसमें असम्भव कुछ नहीं। कभी-कभी कुछ बातें सैकड़ों-हज़ारों सालों में एकाध बार होती हैं, इसलिए उन पर भरोसा करना नामुमकिन लगता है। जैसे मण्डी में मछलियों का हँसना...।

इस बार चौंकने की बारी बिल्ली के बच्चों की थी।

'माँ... तो क्या सचमुच इस संसार में कभी इससे पहले भी मरी हुई मछलियाँ हँसी थीं?'

बिल्ली ने बच्चों को डाँट लगाई कि वे बातों से ही अपना पेट भर रहे हैं। कुछ खा नहीं रहे। लेकिन बच्चे अड़ गये कि वे तभी बिना मछलियों वाला सामने रखा खाना खायेंगे, जब माँ उनके सवाल का जवाब दे देगी। बच्चों की जिद के आगे माँ हार गयी और बोली ठीक है, सुनो।

दो हज़ार साल पहले मनुष्यों के संसार में योगानन्द नाम का एक राजा था। उसकी एक रानी थी, जो उस समय दुनिया की सबसे सुन्दर स्त्री थी। रानी से राजा ख़ूब प्रेम करता था। परन्तु उसे सात दरवाज़ों में क़ैद रखता था। दरवाज़ों पर लटके तालों की चाबी वह ख़ुद रखता। रानी रोती थी, मिन्नतें करती थी। पर वह उसकी एक नहीं सुनता। राजा को यह रत्ती भर भी पसन्द नहीं था कि कोई रानी की तरफ़ आँख उठा कर देखे। ख़ुद योगानन्द भी रानी को कभी-कभार ही देखता था क्योंकि उसे लगता कि रानी नज़र पड़ने से भी मैली हो सकती है!! लेकिन एक बार जाने क्या हुआ कि राजा की असावधानी से सातों दरवाज़े खुले रह गये और रानी एक-एक दरवाज़े को पार करती हुई, महल के छज्जे पर आ खड़ी हुई। ठण्डी हवा और खिली धूप ने रानी के मन को छुआ और उसने भरपूर अँगड़ाई ली। रानी का सौन्दर्य फूल की तरह खिल उठा...। उसी समय छज्जे के नीचे से एक नौजवान राहगीर जा रहा था। रानी के सौन्दर्य को देख कर वह मन्त्रविद्ध-सा वहीं का वहीं खड़ा रह गया। पहरेदारों ने तत्काल बात योगानन्द तक पहुँचाई तो वह दौड़ा-भागा आया। पहले तो उसने रानी को फिर से सात दरवाज़ों में क़ैद करके ताले लगाये और तब नौजवान को पकड़ बुलवाया। योगानन्द ने रानी का सौन्दर्य निहारने के जुर्म में नौजवान को शीघ्रातिशीघ्र मौत के घाट उतारने की सजा सुना दी। सैनिकों ने नौजवान की दोनों बाँहों को कस कर रस्सियों से बाँधा और राज्य के मुख्य बाज़ार से होकर वधस्थल की ओर ले जाने लगे...।

राजा की आज्ञा के अनुसार जब नौजवान को वधस्थल की ओर ले जाया जा रहा था तब बाज़ार में बिक्री के लिए रखा हुआ एक विशाल मत्स्य उसे देख कर ज़ोर ज़ोर से हँसने लगा!!

मत्स्य को इस तरह हँसता देख कर लोग बुरी तरह डर गये। सिपाही दौड़े-दौड़े राजा के पास पहुँचे। पूरी घटना बयान की। राजा ने नौजवान का वध रुकवा दिया। कहा कि इसे आज नहीं, कल मौत के घाट उतारना। फिर वह एकान्त में चला गया और मत्स्य की हँसी के बारे में सोचने लगा। दिन गुज़र गया। रात हो गयी। राजा को मत्स्य की हँसी का रहस्य समझ नहीं आया। उधेड़बुन में लगे राजा को नींद नहीं आ रही थी कि महल के पिछवाड़े किसी के बातचीत करने की आवाज़ सुनाई दी। उसने झरोखे से झाँक कर देखा तो एक राक्षसी अपने चार बच्चों से बात कर रही थी। बच्चे उससे खाना माँग रहे थे। राक्षसी कह रही थी कि आज तो कुछ नहीं मिला, कल ज़रूर उस नौजवान का मांस मिलेगा, जो आज राजाज्ञा वापस होने के कारण नहीं मारा जा सका। बच्चों ने पूछा कि आज उसे क्यों नहीं मारा गया तो माँ ने बताया कि उसे देख कर बाज़ार में बिक्री के लिए रखा मत्स्य हँसने लगा था।

'लेकिन मरा हुआ मत्स्य क्यों हँसने लगा था?' बच्चों ने पूछा तो राक्षसी हँसने लगी। बोली, 'राजा के सात दरवाज़ों में क़ैद रखने के बाद भी उसकी रानी भ्रष्ट हो गयी है। रनिवास

में अनेक पुरुष जा चुके हैं और यह नौजवान बेचारा बिना अपराध के मारा जा रहा है...। यही सोच कर मत्स्य को हँसी आ गयी थी।’

यह बात सुन कर राक्षसी के बच्चे भी हँसने लगे।

उनकी हँसी सुन कर राजा को ऐसा लगा, जैसे उस पर कोई पत्थर बरसा रहा है।

बिल्ली ने देखा कि कहानी सुनते-सुनते बच्चे भूखे ही सो गये!!

बिल्ली ने चुपचाप सारा खाना उठाया और एक तरफ़ रख दिया। बुदबुदाई, ‘हे प्रभु... जाने कैसा समय आ गया है... बच्चों की छोटी-सी इच्छा भी मैं पूरी नहीं कर पा रही। मछली का मांस कौन-सी बड़ी बात है? पर...।’ ख़ुद को असहाय जान कर बिल्ली की आँखों में आँसू आ गये। वह भी बिना खाए बच्चों के पास लेट कर सो गयी।

3.

बिल्ली की बातों ने नाचीज़ की नींद के साथ होश भी उड़ा दिए।

तो वह अकेला नहीं, जिसने मण्डी में मछलियों का हँसना सुना...!

सचमुच मछलियाँ हँसी थीं... पुलिस की क़ैद में, हथकड़ी लगे दलाल को देख कर।

...और तब पहली बार आधी-अँधियारी रात में लेखक के मन में दलाल को लेकर दिलचस्पी पैदा हुई। सम्भावनाओं से भरी एक कहानी की दस्तक उसने अपने पड़ोस में सुनी...।

सुबह के दस बज चुके थे। दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ हुई तो दलाल तौलिया पहन कर उठा।

'कहिए?'

'कमाल ने भेजा है। आपके पास 302 नम्बर की चाबी है।'

दलाल ने चाबी लगा कर घुमाई, तो 302 नम्बर का दरवाज़ा खुला।

अन्दर एक जवान लड़की और लड़का फ़र्श पर लगे बिस्तर में थे। बीयर की बोतलें, फुँकी हुई सिगरेटों के टुकड़े, अधखाया नमकीन बिखरा था। वहीं इस्तेमाल किया हुआ 'छाता' सुरक्षित यौन सम्बन्ध की गवाही दे रहा था। कपड़े यहाँ वहाँ बिखरे थे। जो बिस्तर में थे, उनके जिस्मों पर कुछ बाकी नहीं रह गया था। लड़की पेट के बल सोई थी। उसकी पीठ खुली थी। उसके बाल लड़कों की तरह कटे हुए थे। लड़की की तरफ़ करवट लिए लड़का औंधा था और उसकी एक बाँह लड़की की नंगी पीठ पर थी। लड़की गहरी नींद में थी। हालाँकि ताला खुलने की आवाज़ से लड़का थोड़ा हड़बड़ाया था, मगर दलाल को देख कर आश्वस्त हुआ। हल्की मुस्कान उसके चेहरे पर आयी और वह पहले की तरह सो गया। उसकी आँखों में नशा और नींद, दोनों थे।

महानगर में जगह की जैसी कमी थी, उस अनुपात में कमरा काफ़ी बड़ा था। उससे लगा एक बैडरूम और एक किचन। लैट-बाथ अटैच। पीछे छोटा-सा वराण्डा कि आप दो कुर्सियाँ डाल सकें।

'स्टेशन यहाँ से सिर्फ़ दस मिनिट दूर है। पैदल चले जाइए। दो किलोमीटर पर शॉपिंग मॉल और मल्टीप्लेक्स है। बस और ऑटो चौबीस घण्टे मिलते हैं। पानी ट्वेंटीफोर आवर्स। लाइट ट्वेंटी फोर आवर्स। दरवाज़ा बन्द कीजिए तो आपकी लाइफ आपकी। कोई डिस्टर्ब करने नहीं आयेगा।'

'...किराया?'

'पन्द्रह हज़ार रुपये...। पचासी हज़ार डिपॉजिट। हाँ, डिपॉजिट एक लाख देंगे तो किराया ट्वेल्व थाउजेंड हो जायेगा।'

'आपको नहीं लगता कि ये बहुत ज़्यादा है?'

'पर देखिए, प्रॉपर्टी के मार्केट में कैसी आग लगी हुई है! ये तो फिर भी सस्ता ही है।'

'...कोई और फ़्लैट भी दिखा सकते हैं?'

‘ये तो मेरा काम ही नहीं है। कमाल ने आपको भेजा, इसलिए अपना सोच के दिखा दिया।’

लड़की ने करवट बदली और लड़के की छाती से चिपक गयी। लड़के ने उसकी कमर में हाथ डाला। उसे और नज़दीक खींचते हुए, उसके पैर अपनी जाँघों के बीच दबा लिए। लड़की नींद में मुस्कराई।

‘ये लोग यहीं रहते हैं...?’

‘नहीं... रात भर के लिए आये थे। अभी चले जायेंगे।’

इस नाचीज़ की दलाल से यह पहली मुलाकात थी।

पुराने मकान का कॉन्ट्रेक्ट खत्म हो रहा था और मकान मालिक उसे आगे बढ़ाना नहीं चाह रहा था। अकिंचन को नये मकान की तलाश थी। महानगर में सारे मकानों की चाबियाँ दलालों के पास थीं। वे ही असली मकान मालिक थे।

न्यूयॉर्क, लन्दन, दुबई, पेरिस, मुम्बई... सब जगह प्रॉपर्टी के रेट आसमान छू रहे थे। कांक्रीट के जंगलों की ऊँची बोली लग रही थी। लेहमन ब्रदर्स ने दुनिया को दिखा दिया था कि निवेश के लिए सबसे शानदार मैदान कौन-सा है। खिलाड़ी खेल रहे थे। पैसा गेंद था। पैसा बल्ला था। इधर से बढ़िया शॉट, उधर से बढ़िया रिटर्न। दनादन सौदे हो रहे थे। मंच सजे थे। चमकते विला। चमकती होटलें। चमकते मॉल। चमकते हवाईजहाज़। चमकती कारें। ब्राण्डेड कपड़े, ब्राण्डेड जूते, महँगी शराब, महँगी ज्वैलरी, विदेशी परफ़्यूम... और ख़ूबसूरत हसीनाएँ। नाच-गाना-पार्टी-जश्न... और जबर्दस्त शोर। इस शोर में भी कुछ आवाज़ें थीं कि बाज़ार गुब्बारे की तरह फूल रहा है... प्रॉपर्टी की कीमतें ज़रूरत से ज़्यादा हैं। लेकिन इन आवाज़ों को खिलाड़ी अनसुना कर रहे थे।

मुक्त बाज़ार एक पागल घोड़ा था। उसकी रफ़्तार खिलाड़ियों को आकर्षित कर रही थी। उसकी रफ़्तार पर दाँव लग रहे थे। लेकिन उसके पैरों तले कितने रौंदे जा रहे थे, किसी को देखने की फ़ुर्सत नहीं थी। जो बच रहे थे, वे कोने में धकेले जा रहे थे। उनके लिए खुले मैदान नहीं थे। खुले मकान नहीं थे। खुला आसमान नहीं था। खुली हवा-पानी नहीं थे। वे बाड़ों में, दड़बों में ठेले जा रहे थे। कीचड़ में और दलदल में भी। पूरी दुनिया में यह हो रहा था।

महानगर मुम्बई में भी ज़िन्दगी के लिए संघर्ष था। थकान, टूटन, तपन, तड़पन, निराशा, पीड़ा, खीझ और डर था। इसके बावजूद मन का कोई कोना भीगा हुआ था। प्रेम की जिजीविषा बलवती थी, लेकिन प्रेम के लिए जगह नहीं थी। हर जगह प्रेम सम्भव भी नहीं था। परन्तु प्रेम को जगह बनानी थी। झूठ बोल कर या फिर रिश्वत देकर।

प्रेम झूठ बोल रहा था।

प्रेम रिश्वत दे रहा था।

कमाल ज़ोर से हँसा। इतनी ज़ोर से कि उसकी कुर्सी लड़खड़ा गयी। उसने कुर्सी को सँभाला और फिर सँभल कर बैठा।

‘अरे दो लोग सोये ही थे ना...? कमरा बन्द था ना...?’

‘मैं नहीं चाहता कि कल को रहने लगूँ और आस-पास उल्टी सीधी बातें हों।’

'किसी से आपको क्या मतलब? फिर हम किसलिए हैं?'

'फिर भी...।'

'अरे, आप तो बहुत ज़्यादा सोचते हैं। यहाँ का हाल क्या किसी से छुपा है। आप ही बताइए कि जगह नहीं मिलेगी तो कहाँ जायेंगे? रेलगाड़ी के डिब्बे सरीखे तो घर हैं। माँ, बाप, भाई, बहन, बीवी, बच्चे... सब एक जगह रेलमपेल मचाये हैं। जेब में इतना पैसा नहीं कि होटल में कमरा ले लें...।'

'लेकिन जिसका मकान है...?'

'वो तो हम बतायेंगे, तो पता चलेगा ना?' कमाल कुटिल हँसी हँसा। फिर बोला, 'पहले तो हमें भी पता नहीं चलता था। कोई आया कि भाई चाबी दे दो। माँ-बाप को दिखाना है। बीवी को दिखाना है। हम भी दे देते थे। लेकिन फिर पता चलता था कि न तो माँ-बाप आये, न बीवी। बन्दा चिड़िया सैट करके लाया था... चुग्गा चुगा... और चाबी दे गया कि पसन्द नहीं आया। अब बैठे रहो चाबी पकड़ के...'

उसने अश्लील मुद्रा बनाई।

इस नाचीज़ को ऐसी बातों में दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन फ़्लैट पसन्द आने के बाद कमाल की उपेक्षा भी नहीं की जा सकती थी क्योंकि एक वही था, जो या तो किराया कम करा सकता था या अपनी दलाली में कुछ छूट दे सकता था।

नाचीज़ हँसा, 'आपकी बात सही है... आदमी को पहचानना बड़ा कठिन है...'

'अरे पहचान तो हम ख़ूब लेते हैं। पर क्या करना है? हमें अपने पैसे से मतलब...। कोई फ़्लैट देखने के बहाने आया और आधे घण्टे के दो सौ, पाँच सौ दे गया तो क्या बुरा है? रात भर के हज़ार देने वाले भी मिल जाते हैं...।'

सोसायटियों में खाली पड़े फ़्लैट ही क्या, आधी-अधूरी बनी इमारतें, पब्लिक टॉयलेट, जॉगर्स पार्क, रेस्तराओं के प्राइवेट केबिन, टैक्सियों में पीछे की सीट, साइबर कैफे के क्यूब... बीस रुपये से सौ रुपये की फीस में अनमोल प्रेम के गवाह बन रहे थे। यूँ तो सस्ते लॉज भी थे, समुन्दर के किनारे। लेकिन भागदौड़ के बीच प्रेम बहुत फुर्सत से कर पाना कहाँ सम्भव था। न उसके लिए ज़्यादा सोचने की ज़रूरत थी। भावुक होने से कमजोर पड़ने का डर था। कमजोर होकर महानगर में जीया नहीं जा सकता। जितनी ज़रूरत से काम चल सकता था, उतना ही प्रेम किया जा रहा था। तीन बाई तीन के क्यूब, छह बाई तीन के गद्दे और दस बाई दस के खाली कमरे... प्रेम के खुले आकाश से ज़्यादा थे।

समय भी ज़्यादा कहाँ था?

'साइंस कहती है कि फारिग होने के लिए दस मिनट बहुत हैं... आज ही अख़बार में छपा है।' कमाल ने टाइम्स ऑफ इण्डिया को हवा में लहराते हुए टेबल पर ज़ोर से पटका।

'ज़्यादा टाइम लगा कर भी ज़्यादा क्या कर लोगे?' प्रश्न उसकी आँखों में मौजूद था।

लेखक ने कमाल की आँखों को न पढ़ पाने का बहाना किया और सीधे मुद्दे पर आ गया। किराया या दलाली... कोई एक कम करो। कमाल ने ही पिछले दो फ़्लैट दिलाये थे। थोड़ा कम-ज़्यादा करके आखिर सब तय हो गया। एग्रीमेंट के पेपर बनने थे, पुलिस वेरिफिकेशन होना था, फ़्लैट की साफ़-सफाई, रंग-रोगन... कमाल के लिए यह रोज़ का काम था।

4.

नए फ़्लैट में महीना भर गुजर चुका था। सोसायटी में चहलपहल रहती थी। एक सुबह हँगामे के कारण आँख खुली।

सामने के ब्लॉक में छठी मंजिल से कूद कर एक युवती ने आत्महत्या कर ली!!

पुलिस आ चुकी थी। युवती के शरीर पर शॉर्ट कुर्ता और जींस थी। उसके आस-पास ख़ून बिखरा हुआ था। माथा फट चुका था। आँखें बाहर आ गयी थीं। चेहरा ख़ून से लथपथ था। ख़ून जम गया था। देखने से ही लगता था कि एक हाथ और एक पैर टूट गया है। पास ही खड़ा एक युवक रो रहा था। पुलिस उससे पूछताछ कर रही थी। वह थोड़ी-थोड़ी देर में मोबाइल फ़ोन पर नम्बर मिला कर किसी से बात करता था और फिर सुबकने लगता था।

दलाल वहीं खड़ा था। पुलिसवालों से बात करता। फिर युवक को सान्त्वना देता। थोड़ी देर में अस्त-व्यस्त-सा कमाल भी आ गया। फिर आधे घण्टे में एक कार आकर रुकी। उसमें से एक बूढ़ा और एक जवान निकले। बूढ़ा रो रहा था। युवक उसके गले लग कर ज़ोर से रोने लगा। पुलिस अपना काम करती रही। इस बीच कुछ कैमरामैन और रिपोर्टर भी आ गये। लाश को पंचनामे के लिए भेज दिया गया। एक लोकल चैनल पर ख़बर भी आने लगी। युवती की मौत पर से परदा उठने लगा...।

युवती का नाम अमिता था। उम्र 25 साल। वह एयरहोस्टेस थी। शाम को वह अपने बॉयफ्रेंड के घर उसके जन्मदिन की पार्टी में पहुँची थी। पार्टी में दोनों के कुछ दोस्त भी थे। मगर आधी रात होते-होते सभी अपने घरों को लौट गये। युवती भी लौटना चाहती थी। सुबह की फ़्लाइट में उसकी ड्यूटी लगी थी। परन्तु बॉयफ्रेंड ने उसे रोक लिया। इसके बाद दोनों ने बालकनी में बैठ कर कुछ और शराब पी। वे बातें करते रहे। युवती फिर लौटने की जिद करने लगी। मगर दो बज चुके थे। इसके बाद युवती ने युवक से सिगरेट माँगी। वह तनाव में आ गयी थी। लेकिन युवक ने उसे सिगरेट देने से मना कर दिया। वह युवती को समझाने लगा कि उन्हें चल कर सो जाना चाहिए। सुबह वह उसे जल्दी जगा देगा। लेकिन युवती सिगरेट पीने के लिए अड़ गयी। इस पर दोनों में बहस होने लगी। युवती ने युवक को इस बात के लिए ख़ूब फटकारा कि वह जब अभी उस पर इतनी पाबन्दियाँ लगाता है तो शादी के बाद कितनी लगायेगा? युवती का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया और उसने युवक से साफ़ कह दिया कि वह उसका कोई नहीं। उसे रोकने वाला कोई नहीं। वह वही करेगी, जो उसका मन चाहेगा। इसके बाद जाने क्या सूझी कि उसने बालकनी से छलाँग लगा दी और युवक के देखते-देखते नीचे आ गिरी...!!

'जिस पल आपके सामने यह घटना हुई, आप कैसा महसूस कर रहे थे?'

जब टीवी रिपोर्टर ने युवक से यह सवाल पूछा तो वह फूट-फूट कर रोने लगा। युवक उसी एयरलाइंस में पायलट था, जिसमें युवती एयरहोस्टेस थी। युवक का नाम सुरेश प्रसाद था। युवती उसे प्यार से एसपी बुलाती थी। युवक युवती से पाँच साल बड़ा था। वह एक

छोटे नगर से आया था। वह लड़की से प्रेम करता था। उससे शादी करना चाहता था। उसने अपने घर में प्रेम की बात बता दी। घरवालों को आपत्ति नहीं थी। युवती के माता-पिता को भी लड़का पसन्द था। युवक का युवती के घर पर आना-जाना था। युवती का युवक के फ़्लैट पर आना-जाना था। युवती आत्मविश्वास से भरी और ख़ूबसूरत थी। युवक जवान था और ख़ूब पैसा कमाना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि उम्र ढलने तक युवती नौकरी करे। उसने दोनों को लेकर कुछ सपने देखे थे।

'सपने बिखर चुके हैं...। एसपी की आँखों में सूनापन आप साफ़ पढ़ सकते हैं। अमिता अपनी नादानी के चलते एसपी को ज़िन्दगी भर का गम दे गयी है। क्या एसपी फिर किसी अमिता को अपना पायेगा...?' रिपोर्टर ने इस 'इमोशनल नोट' के साथ अपनी स्टोरी पूरी की।

दो दिन बाद लिफ़्ट में इस नाचीज़ की मुलाकात दलाल से हुई। उसकी बात ने चौंकाया...

'अरे... टीवी वाले सब आधा-अधूरा बताते हैं।'

'...तो फिर?'

'लड़की हफ़्ते भर से टेंशन में थी कि कहीं नौकरी न चली जाये। एयरलाइंस में ख़ूब छँटनी चल रही है आजकल...।'

सभी कम्पनियों में छँटनी हो रही थी। स्टाफ कम किया जा रहा था। बजट में कटौती हो रही थी। वेतन पर कैंची चल रही थी। तनख्वाह के साथ मिलने वाले 'बेनिफिट्स' बन्द हो रहे थे। घबराहट बढ़ रही थी। तनाव बढ़ रहा था। ब्लडप्रेशर बढ़ रहा था। शराब और सिगरेट की बिक्री बढ़ गयी थी।

युवती परेशान थी। दो महीने से उसे मासिक धर्म नहीं आया था। पहले तो उसे एसपी पर गुस्सा आया। वह कभी 'प्रोटेक्शन' इस्तेमाल नहीं करता। वह लाख समझाती है, पर नहीं मानता। हालाँकि वह इमरजेंसी कॉन्ट्रासेप्टिव पिल अपने पास रखती है। लेकिन दो-एक बार ऐसा हुआ कि उसके पास पिल नहीं थी और तब भी एसपी नहीं माना। युवती के मन में डर पैदा हुआ। वह डॉक्टर के पास गयी। जाँच करने के बाद डॉक्टर ने कहा कि वह 'प्रेगनेंट' नहीं है। सुन कर युवती को बहुत राहत मिली। लेकिन दो महीने से मासिक धर्म...? डॉक्टर ने दवाएँ लिख कर दीं। ख़ून की कमी से युवती कमजोर थी। एयरलाइंस ने अपनी एयरहोस्टसों को डाइट प्लान दे रखा था। हर हफ़्ते जाँच होती थी। फिगर में कोई चेंज नहीं आना चाहिए, वर्ना नौकरी जा सकती है। शराब से कैलोरीज मिलती हैं। सिगरेट से टेंशन दूर होता है।

युवती टेंशन में थी। तबीयत ख़राब होने के कारण दो महीनों में पहले ही वह दो हफ़्ते की छुट्टियाँ ले चुकी थी। इस पर युवक ने आज फिर रोक लिया। उसका बर्थ डे था। वह कम्पनी नहीं देगी तो कौन देगा?

मतलब वह समझ रही थी।

आज फिर...?

वह अपने साथ पिल नहीं लायी थी।

सुबह उसे ड्यूटी पर जाना था।

यदि फ़्लाइट मिस हो गयी तो इस बार क्या एक्सक्यूज देगी? बॉस को फेस कर पाना आसान नहीं है। वह ऊपर से नीचे तक स्कैन करने वाली नज़रों से देखता है। उसके सामने खड़े रहना युवती को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।

उसे सिगरेट की तलब महसूस होने लगी।

युवक ने मना कर दिया। शराब का नशा युवती पर ख़ूब चढ़ गया है। रात भी काफ़ी हो चुकी है। अब सिगरेट नहीं...। लेकिन युवती जिद करने लगी। युवक उसे सोने के लिए कहने लगा। युवती को गुस्सा आ गया। युवक की जगह उसे बॉस दिख रहा था। उसकी स्कैन करती नज़रें दिख रही थीं। अपनी फ़्लाइट उसे मिस होती दिख रही थी। उसे नौकरी हाथ से निकलती दिख रही थी...। उसकी आँखों के आगे यह सिनेमा की तरह चल रहा था।

युवक उसे बाँहों में लेने की कोशिश कर रहा था और पिल का न होना भी युवती को गुस्सा दिला रहा था... कितनी लापरवाह है वह!!

युवती अपने आप से नाराज़ हो गयी। ऐसी लापरवाही से आखिर ज़िन्दगी में क्या हासिल हो सकता है? अगर वह कुछ हासिल नहीं कर सकती, तो इस ज़िन्दगी के होने का क्या मकसद?

शादी, बिस्तर और बच्चे...?

धीरे-धीरे शराब का असर इतना बढ़ा कि उसे पता ही नहीं चला, वह क्या सोच रही है?

बस, उसे आँखों के आगे रन-वे पर जेट दौड़ता दिखायी दिया। युवती से फ़्लाइट मिस हो रही थी। युवती हर हाल में फ़्लाइट पर होना चाहती थी। वह दौड़ी। जेट को पकड़ने के लिए। लेकिन जेट तब तक टेक-ऑफ कर चुका था। हवा में था। युवती ने पूरी ताकत लगायी और बालकनी से हवा में छलाँग लगा दी। उसे लगा कि सिर्फ़ दो पल की देर हो गई... उँगलियाँ फ़्लाइट को छू भर ग्ंइं...। वह छठवीं मंजिल से धड़ाम से नीचे आ गिरी।

5.

मृत्यु एक सख़्त विचार थी, जिसके अन्त में ईश्वर पूर्णविराम की तरह खामोश उपस्थित था...!

मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजाघर... उसके हर दरवाज़े पर भीड़ बढ़ रही थी।

जिन्हें ईश्वर से सीधे सम्पर्क करने में कठिनाई मालूम होती थी, उनके लिए गुरु थे। बाबा थे। तान्त्रिक थे। मान्त्रिक थे। मौलवी थे। पादरी थे। दाढ़ी वाले थे। बिना दाढ़ी वाले थे। माला वाले थे। माइक वाले थे। भजन वाले थे। प्रवचन वाले थे। श्रद्धा खरीदने वाले थे। सबूरी बेचने वाले थे। सबका कारोबार फल-फूल रहा था।

तभी एक दिन अपने दो शिष्यों और एक शिष्या के साथ स्वामी नयनानन्द ने सोसायटी में प्रवेश किया।

वह हिमालय की तराई से आकर दलाल के घर पर ठहरे।

भजन-कीर्तन होने लगा। अगरबत्ती-धूप की खुशबू फैलने लगी। दलाल के घर पर आने-जाने वालों की संख्या बढ़ गयी। स्वामीजी के पास हर समस्या का समाधान था। वह श्रद्धालु को हिमालय से लाये चमत्कारी जल के छींटे मारते थे। हल्दी का तिलक लगाते थे। नींबू-नारियल देते थे।

पैसा नहीं लेते थे। अगर कोई चाहे तो श्रद्धा से उनके पास बैठे शिष्य के सामने रख सकता था।

यह जानने के बाद सोसायटी के अधिक से अधिक लोग उनका आशीर्वाद लेने पहुँचने लगे।

फिर स्वामीजी के प्रवचन शुरू हुए।

उन्होंने आँखें मूँदीं और कहा, 'संसार दुखों से भरा पड़ा है। किसी को औलाद न होने का दुख, किसी को दौलत न होने का। किसी के नौकरी नहीं है तो कोई अपनी नौकरी में दुखी है। किसी के घर में ख़ूब झगड़े हैं, तो किसी को न खत्म होने वाली बीमारी खा रही है। किसी की शादी में रुकावट है तो कोई शादी से परेशान है।'

'इंसान अपने कर्मों का फल भोगता है। कर्म ही कष्टों का कारण है...'

वह कुछ पल मौन हुए। फिर आँखें खोलकर श्रद्धालुओं पर निगाहें डाल कर कहना शुरू किया, 'दुनिया में ऐसा कोई कष्ट नहीं जो दूर न किया जा सके... तुम मेरी शरण में आये हो तो मुझ पर भरोसा रखो। कुदरत ने हर चीज़ की दो सूरतें बनाई हैं। काँटे हैं तो फूल भी हैं..., धूप है तो छाँव भी है, शैतान है तो भगवान भी है... उसी भगवान की इच्छा से मैं तुम्हारे पास आया हूँ... ऊपर बैठा वह देख रहा है... मुझसे कुछ न छुपाओ, सब कुछ कह दो, अपने दिल में कुछ न रखो। डरो मत... '

उनकी बातों का असर हुआ। लोग जो दुनिया में किसी से न कह पाते, वह स्वामीजी से कहने लगे।

स्वामीजी के पास हर दुख का इलाज था। तन्त्र-मन्त्र, जाप-अनुष्ठान, जादू-टोना, पूजा-पाठ, गण्डा-ताबीज। लोग भी हर प्रकार के थे। हर धर्म-मजहब के। अमीर-गरीब। अनपढ़-

पढ़े लिखे। भोले-चालाक। स्वामीजी दुखियारे को दिलासा देते, 'आदमी पर मुश्किल वक़्त क्या उसकी जात-धर्म, अमीरी-गरीबी और पढ़ाई-लिखाई देख कर आता है?'

धीरे-धीरे उनमें लोगों की श्रद्धा लाचारी की हद तक बढ़ गयी। दुखी, बीमार, परेशान, हताश लोग... वृद्ध और स्त्रियाँ...। स्वामीजी के भक्तों की संख्या लगातार बढ़ रही थी। श्रद्धा के बाज़ार में बैठे स्वामीजी के चेहरे के पीछे एक और चेहरा था।

वास्तव में स्वामी नयनानन्द मानवतस्करी के धन्धे का बड़ा खिलाड़ी था। उसकी पहुँच ऊपर तक थी। वह उत्तर के मैदानी इलाकों और हिमालय की तराई के गाँवों से लेकर पूरब के दूर-दराज के पहाड़ों में घूमा करता था। जहाँ गरीबी थी, अभाव थे...? वह यहाँ के अनपढ़, गरीब और लाचार लोगों को पैसा देता। बदले में उनके लड़के-लड़कियों को अपने साथ ले आता। उन्हें ख़ूबसूरत ज़िन्दगी के सपने दिखाता। महानगर में वह लड़कों को भीख माँगने का धन्धा करने वाले गिरोहों को बेच देता जबकि लड़कियों के खरीदार बहुत होते थे...।

देश में भी... विदेश में भी...!

लेकिन मन्दी का पेंच यहाँ भी था। डिमाण्ड तो बरकरार थी मगर रेट गिर गये थे। उस पर गोरी चमड़ी की माँग अचानक बढ़ गयी थी। उजबेकिस्तान, यूक्रेन, कजाखिस्तान, जॉर्जिया, चेचन्या और रूस से आमद भरपूर थी। इससे देसी लड़कियों का बाज़ार टूट रहा था। नयनानन्द इस बार नेपाली लड़की लाया था। जिसकी उम्र सोलह साल से ज़्यादा नहीं थी। नयनानन्द को उम्मीद थी कि इसकी मोटी रकम मिलेगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। नयनानन्द को कम पर सौदा मंजूर नहीं था। उसे विश्वास था कि थोड़ा वक़्त गुजरने की देर है, लड़की अच्छे दामों में जायेगी। जिसको भी उसने लड़की दिखाई, उसका मन ललचाया था। अत: वह दलाल के यहाँ आसन जमा कर ठहरा हुआ था।

...और तभी एक रात जब पूरी सोसायटी में सन्नाटा पसरा था कि दलाल के फ़्लैट से चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें आने लगीं। सबसे ऊँची आवाज़ दलाल की बीवी की थी, फिर दलाल की और बीच-बीच में नयनानन्द का स्वर सुनाई पड़ रहा था। चीखों-चिल्लाहटों का शोर कुछ हल्का पड़ने के बाद अन्त में दीवारों को चीरती औरत की तीखी आवाज़ को सबने सुना, 'दल्ला... कमीना... रण्डियों का भड़वा...!'

फिर सन्नाटा छा गया।

इन आवाज़ों के बाद नयनानन्द को किसी ने नहीं देखा।

दलाल इस तरह आता-जाता रहा, जैसे कोई बात ही नहीं हुई। हर सुबह वह फ़्लैट से निकलता और बाइक पर बैठ कर हवा हो जाता। लेकिन दबी जुबान में लोगों के बीच चर्चाएँ होने लगीं। धीरे-धीरे सोसायटी की फिजा में सुबह-दोपहर-शाम हल्की बुदबुदाहट का अहसास बना रहने लगा। लगता जैसे हवा में शब्दों की लहरें हैं। ऐसे ही माहौल में एक रात बिल्लियों की मद्धम आवाज़ें सुनाई पड़ीं...! इंसानी आवाज़ें...!!

बिल्ली के पास उसकी दो पड़ोसनें आयी थीं। तीनों बतिया रही थीं।

'दलाल का घर तो उजड़ ही जायेगा समझ ले...'

'ऐसे आदमी के साथ कौन औरत रहेगी...'

‘अरे लेकिन यही कौन-सी सति सावित्री है?’

‘तू तो बस ऐसे ही बोलती है...’

‘तो तू ही बता...?’

‘अरे इसकी सुन ना... ये रोज़ उसके घर में मँडराती है...’

‘अच्छा... शुरू से बताना...’

‘ठीक है सुन...’

एक जगह है दतिया। वहीं है इन्दरगढ। दलाल की बीबी वहीं की रहने वाली है। इसका नाम है बिन्दिया। पन्द्रहवाँ बरस खत्म होते ही पिता ने इसकी शादी कर दी थी। लेकिन ये तीन ही महीने में वापस आ गयी। बोली, पति निकम्मा है और ससुराल वाले नौकरानी जैसा रखते हैं। मारते-पीटते भी हैं। दोनों तरफ़ से इस पर तकरार हुई और इतनी बढ़ी कि ससुराल वालों ने कहा कि अपनी बेटी रख लो।

बिन्दिया माँ-बाप के पास रहने लगी। कुछ दिनों बाद उसके पेट में अचानक ज़ोर का दर्द उठा। उसने माँ को बताया तो वह घबरा गयी कि कहीं इसके गर्भ तो नहीं ठहर गया। लेकिन ऐसा नहीं था। दाई को दिखाया तो उसने शंका का समाधान किया। कहा, लड़की अभी ढंग से सयानी भी नहीं हुई है। इधर-उधर खेलती-कूदती है। इसका लड़कपन गया नहीं। पाँव यहाँ-वहाँ पड़ने से लगता है, पेट उखड़ गया। दाई ने बिन्दिया के पेट की मालिश की और चली गयी। बिन्दिया को आराम मिल गया।

हफ़्ता भर बीता, फिर वैसा ही दर्द उठा। उस वक़्त उसकी सहेली रूपा साथ थी। रूपा ने ठिठोली की, ‘इस उमर में लुगाई को मरद की ज़रूरत होती है... उसी से तेरा ये दरद ठीक होगा।’ बिन्दिया दर्द में भी शरमा गयी। फिर बोली, ‘तुझे मजाक सूझ रही है, मेरी जान निकल रही है।’ तब रूपा ने कहा कि ज़रूर तेरे पर किसी का साया पड़ गया है। तू इतनी सुन्दर है, मरद नहीं तो कोई भूत-जिन्न तेरे बदन में घुस जायेगा। मैं झूठ नहीं कह रही... या तो तेरे को किसी की बुरी नज़र लगी है या किसी बला की छाया है।

बिन्दिया घबरा गयी। बोली, ‘मैं क्या करूँ...?’

रूपा बोली कि तेरी किस्मत अच्छी है, आज कल नयनानन्द नाम का एक तान्त्रिक आया हुआ है। वह ये सब बीमारी ठीक कर देता है। उससे मिल ले।

बिन्दिया बोली, ‘ठीक है। तू पता दे, मैं माँ के साथ कल जाऊँगी।’

तब रूपा ने कहा, ‘तू अब तक बच्ची बनी है। हर बात माँ से कहेगी तो ज़िन्दगी भर दर्द से तड़पती रहेगी।’

बिन्दिया दर्द से छुटकारा चाहती थी। वह रूपा पर विश्वास कर बैठी।

तान्त्रिक ने कस्बे के एक सस्ते होटल में कमरा ले रखा था।

बिन्दिया अगले दिन अकेली तान्त्रिक से मिली और तकलीफ बताई। तान्त्रिक ने उसे सामने बिछौने पर लिटाया और पेट को छूकर देखा। बिन्दिया डरी, लेकिन लेटी रही। कुछ पल बाद तान्त्रिक चार कदम दूर अपनी जगह जाकर बैठ गया और उसे बुला कर सामने बैठाया। उसने हवन की वेदी में लकड़ियाँ डालीं। धुआँ किया। मन्त्र पढ़ना शुरू किए और थोड़ी देर बाद पास रखे एक गिलास से प्लेट में कुछ डाल कर बिन्दिया की तरफ़ बढ़ाया।

बिन्दिया ने इन्कार किया तो तान्त्रिक ने कहा, 'इसे पीना नहीं है। यह पवित्र फूलों का अर्क है। बस आधा मिनट मुँह में रखना और वेदी में उलट देना... तेरी तकलीफ निकल जायेगी।'

बिन्दिया ने अर्क मुँह में लिया और कुछ ही पल में उसे चक्कर आ गये। वह बैठे-बैठे लुढ़क गयी। उसका शरीर निढाल हो गया। उसे होश नहीं रहा।

जब होश आया तो बदन भारी हो रहा था। तान्त्रिक सामने बैठा था। उसकी आँखें लाल थीं। बिन्दिया एकदम से उठ बैठी। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त थे। वह बरस पड़ी, 'तू मर जाये... कीड़े पड़ेंगे तुझको... मैं सबको बताती हूँ तेरी करतूत... कमीने...। पुलिस में पकड़ाऊँगी तेरे को...।'

तान्त्रिक मुस्करा दिया। बोला, 'ऐसी नादानी मत करना। ले देख...'

तान्त्रिक ने बिन्दिया की तरफ़ कुछ कागज फेंके। ये बिन्दिया की तस्वीरें थीं...! नंगी छाती... नंगी टाँगें... नंगी...। बिन्दिया घबरा कर फूट-फूट के रो पडी। तान्त्रिक बोला, 'तेरी फिलम भी उतारी है... बहुत सुन्दर दिख रही है तू उसमें... देखेगी...? किसी से बोलेगी, तो सबको दिखा दूँगा...। ये रोना बन्द कर... कोई तेरी इज़्ज़त नहीं ली है मैंने...'

बिन्दिया उठ कर चुपचाप जाने लगी तो तान्त्रिक बोला, 'मैं जब बुलाऊँ तब चुपचाप आ जाना... रूपा के हाथ तेरे को ख़बर भिजवा दूँगा...।'

रूपा का नाम सुनते ही बिन्दिया को लगा कि उसके सिर पर हथौड़ा पड़ा। यदि वह ख़ुद को नहीं सँभालती तो लड़खड़ा कर गिर जाती।

'सच्ची... औरत ही औरत की सबसे बड़ी दुश्मन होती है...' एक बिल्ली उदास स्वर में बोली।

'तू चुप रहेगी... बाद में बोल लेना...' दूसरी ने उसे डपट कर चुप किया।

रूपा जब मिली, तो बिन्दिया उससे ख़ूब झगड़ी। तब उसे पता चला कि रूपा भी तान्त्रिक के जाल में फँसी हुई है। वह उसे भी ब्लैकमेल कर रहा है। मरती क्या न करती...? तान्त्रिक का मन रूपा से भर चुका था। उसने रूपा से कहा था कि दूसरी लड़की ला दे, तेरे फ़ोटो और फिलम जला दूँगा। लेकिन बिन्दिया को पाकर वह ऐसा क्यों करता...? तान्त्रिक अब दोनों को साथ बुलाता और गन्दी मुद्राओं में उनकी तस्वीरें खींचता। फिलम बनाता। दोनों उसके सामने रोती-गिड़गिड़ातीं, लेकिन वह नहीं पसीजता। एक दिन उसने दोनों से कहा कि इन्दरगढ़ छोड़ कर मेरे साथ चलो। बम्बई जा रहा हूँ। वहाँ तुम दोनों को अच्छे से रखूँगा। दोनों ने मना किया तो वह हँसा। बोला कि अगर तुम्हें यहाँ सबके सामने नंगा कर दूँगा तो किस मुँह से रहोगी...? मेरे साथ मेरे मन से रहोगी, तो कोई कमी नहीं होने दूँगा। बम्बई में सब कुछ मिलेगा। यहाँ क्या रखा है तुम्हारा...? माँ-बाप कब तक पेट पालेंगे...?

रूपा और बिन्दिया से रोते भी नहीं बना। एक-दूसरी का मुँह देखने लगीं। तान्त्रिक ने मटके से निकाल कर उन्हें पानी पीने को दिया और कहा, 'ठण्डा पानी पीयो और ठण्डे दिमाग़ से सोचो...।'

दोनों ने पानी पीया और दो मिनट बाद ही बेहोश हो गईं।

बिल्ली ने इतना कह कर गहरी साँस ली...।

‘बेचारी बिन्दिया और रूपा…’ दोनों पड़ोसनों ने एक साथ कहा।

फिर एक बोली, ‘अच्छा यह तो बताओ कि उस रात दलाल के घर में क्या हुआ था?’

दूसरी ने रोका, ‘अभी नहीं, अगली बार। मेरा बिलौटा शोर मचा रहा है। मरे को बिना मेरे नींद नहीं आती।’

‘ठीक है बहन, रात भी अब बहुत हो गयी है…’ बिल्ली बोली।

पड़ोसनें उठ खड़ी हुर्इं। उन्होंने अँगड़ाई ली। पूँछ हवा में सीधी तान दी और बदन को झटका।

जाते-जाते उनमें से एक बोली, ‘सारे मर्दों को बस एक ही चीज़ की चाह होती है!’

‘सच्ची…’ बाकी दो ने इस बात पर मुहर लगाई और फिर तीनों मिल कर एक साथ मुस्करा दीं।

‘चल… बाकी कल…’ जाती हुई बिल्लियों में से एक की आवाज़ आयी।

6.

बिन्दिया को जब होश आया, तो सिर बहुत भारी लग रहा था। आँखें खोलने के लिए उसे ज़ोर लगाना पड़ा। चारों तरफ़ कुछ नहीं दिख रहा था। सिर्फ़ मटमैला-सा अँधेरा था। उसने सोचने की कोशिश की कि यह क्या जगह है? उसके सिर में तेज़ दर्द उठा। वह उठ कर बैठ गयी। चरमराने की आवाज़ के साथ उसके दिमाग़ में पहला ख़याल आया, पलँग...! अनिष्ट की आशंका ने उसे डराया। फिर उसकी देह में दर्द की लहर उठी। उसके होठों से हल्की कराह निकली। धीरे-धीरे उसकी आँखें उस मटमैले-से अँधेरे में देखने लायक हुइं। यह एक कमरा था। कमरे में एक कुर्सी नज़र आयी। पास ही एक टेबल। एक कोने में गुसलख़ाने जैसा कुछ, जिस पर टाट लटक रहा था। एक बाल्टी लुढ़की पड़ी थी। ...और कुछ नहीं, बस इतना ही। उसकी नज़र दीवारों पर पड़ी। पत्रिकाओं और अख़बारों से काटे गये हीरोइनों के फ़ोटो यहाँ वहाँ चिपके थे। एक तरफ़ एक नंगी...!

अचानक उसे तान्त्रिक की याद आयी, और... रूपा की भी!!

'रूपा...' उसके होंठ काँपे। वह सिर से पाँव तक काँपने लगी। कहाँ है रूपा...? कहाँ हूँ मैं...? उसका मन हुआ कि ज़ोर से चिल्लाए... लेकिन किसे आवाज़ लगाये? उसे दरवाज़ा नज़र आया। वह पास गयी और देखा कि शायद उसमें कोई दरार हो, सुराख हो। लेकिन ऐसा नहीं था। दरवाज़ा लोहे का था। एक पल्ले का। उसका दिल घबराने लगा और धड़कनें बढ़ गयीं। उसे घर और माँ-बाप याद आये। उसकी आँखें भर आयीं। आँसू टप-टप गिरने लगे। वह दरवाज़े के पास ही निढाल हो गयी। जाने कब तक वैसी पड़ी रही। कमरे में भरा हुआ अँधेरा उसकी ज़िन्दगी में प्रवेश कर रहा था। उसे अपनी देह और आत्मा काली होती लग रही थी। उसने सोचा कि मरते वक़्त शायद ऐसा ही लगता होगा। उसने महसूस किया कि वह मर रही है। वह धीरे-धीरे मरने लगी। फिर एक पल आया, जब उसे लगा कि वह मर गयी है! सचमुच।

दरवाज़ा खुला और उसकी देह से टकराया। उसके कानों में आवाज़ पड़ी, 'ये साली यहाँ क्या कर रही है?'

'ऐ उठ...' एक सख़्त और मजबूत पंजे ने उसकी बाँह पकड़ कर ऐसे उठा लिया, जैसे वह बिना वजन की गुड़िया है। वह हड़बड़ा गयी।

सामने एक आदमी खड़ा था। काला भुजंग। हट्टा-कट्टा। वह थरथराने लगी।

'चल आ रे नानू... अन्दर...।'

एक और आदमी आया। इसकी उम्र कुछ कम थी। लेकिन था यह भी काला भुजंग। हट्टा-कट्टा। उसने अन्दर आते हुए बिन्दिया को धकेला, 'जा उधर बिस्तर पर...।' उसके हाथ में बोतल थी और एक थैली। उसने दरवाज़े को अन्दर से कुँड़ी मारी और पास दीवार की पर जैसे हाथ फिराया, कम रोशनी का एक बल्ब जल उठा। बिन्दिया के सामने कमरे की तस्वीर और साफ़ हुई। उसका डर बढ़ गया।

'मुझे जाने दो...' कुछ पल बाद वह साहस बटोर कर बोली।

'चली जाना, हम तुझे रखने नहीं वाले।'

‘अभी जाना है।’

कोई जवाब नहीं आया तो बिन्दिया का मन रोने को हुआ।

जो बाद में अन्दर आया था, उसने टेबल पर बोतल और थैली रखी। बिन्दिया ने देखा कि टेबल पर प्लास्टिक का एक मग्गा भी रखा है। उस आदमी ने बोतल खोली और मग्गे में आधी खाली कर दी। फिर गुसलख़ाने जैसी जगह का नल खोला और मग्गे को नीचे लगा दिया। कुछ पल बाद मग्गा दूसरे के सामने बढ़ा दिया, ‘ले भाऊ...।’

भाऊ ने लिया और गटागट पी गया।

मग्गे में फिर बाकी बोतल खाली हुई। नल के नीचे मग्गा लगा। फिर वह आदमी भी गटागट पी गया।

पहले वाले ने टेबल पर रखी थैली उठायी और कोई चीज़ बिन्दिया की तरफ़ बढ़ायी। बिन्दिया ने ड़रते-ड़रते ली। यह एक एलबम था।

‘देख...’

एलबम खोलते ही बिन्दिया ने उसमें अपनी तस्वीर देखी... नंगी! एलबम उसके हाथ से छूट कर गिर गया।

‘देख... आगे...’

बिन्दिया की हिम्मत जवाब दे गयी। वह अन्दर-अन्दर घुट रही थी। रोना चाह रही थी। उस आदमी ने एलबम उठा कर उसके हाथ में दे दिया।

‘देख...,’ वह गुर्राया।

बिन्दिया बुत बनी बैठी रही।

तभी एक भारी हाथ उसके गाल पर पड़ा और वह बिस्तर के दूसरे सिरे पर जाकर गिरी। एलबम फ़र्श पर गिरा।

‘भाऊ...’

‘तू बीच में मत बोल... इस हरामजादी को कैसे ठीक करना है, मुझे पता है।’ वह आदमी आगे बढ़ा और एलबम उठा कर फिर बिन्दिया को देते हुए बोला, ‘देख... पूरा देख।’

बिन्दिया ने जैसे होश खो दिया था। इस बार हाथ उसकी पीठ पर पड़ा और वह औंधे मुँह बिस्तर पर गिर पड़ी। उस आदमी ने बाल पकड़ कर उसे उठाया।

‘तू ऐसे नहीं मानेगी...’

पल भर में उसने बिन्दिया के बदन पर पड़ी कुर्ती फाड़ दी ...और अगले ही पल शलवार को खींच कर अलग कर दिया। बिन्दिया बेबस और असहाय पड़ गयी। वह आदमी उस पर सवार हो गया...। बिन्दिया को होश नहीं रहा।

इसके बाद जब-जब बिन्दिया को होश आया, वह अपनी किस्मत को कोसती रही। वह रोती। विनती करती। वे उसे जबर्दस्ती खाना खिलाते। शराब पीते और उसे रौंदते। उसे नहीं पता चलता कि दिन है कि रात? क्या समय है? कितने दिन हो गये? कभी-कभी उनके साथ कोई और भी आता। बिन्दिया की और दुर्गति होती।

फिर एक दिन उनके साथ एक औरत आयी। अधेड़ औरत। उसने बिन्दिया को ऊपर-नीचे, आगे-पीछे देखा, उसके जिस्म में उँगलियाँ गड़ाईं...। बोली, 'इसकू तो फूक इच दिया तुमी लोक ने...।' दोनों खी-खी करके हँसने लगे। औरत ने गाली दी तो वे और ज़ोर से हँसे। वह बिन्दिया की तरफ़ मुड़ी और बोली, 'डर मत। मेरे संग चलना तू। मय अच्छे से रकूँगी। इन भड़वे लोक के सरीका नइ...। टैम से रोटी-कपड़ा सब दूँगी। मेरे लिए कमाइगी, तो पइसा बी दूँगी... तेरे हक का। अक्का किसी का हक नइ रकती...।'

बिन्दिया उसका मुँह देखती रही।

'चल जास्ती मत सोच। सोचने से कुच नइ मिलता।' वह औरत मुड़ी और भाऊ के हाथ में सौ-सौ के दो नोट रखते हुए बोली, 'साड़ी ब्लाउच का इन्तेजाम कर इसके वास्ते।' वह हँसने लगा। वह औरत बिन्दिया से बोली, 'मय आएगी कल। तेरे कू लेने। तैयार रैना।'

अगले दिन वह आयी तो उसके साथ मैले-कुचैले कपड़ों में एक मर्द भी था।

बिन्दिया बहुत कमजोर हो चुकी थी। औरत ने उसे साड़ी पहनने में मदद की। लेकिन इससे पहले उसके साथ आये मर्द ने बिस्तर पर लिटा कर उसकी डॉक्टरी जाँच जैसा कुछ किया और बाईं जाँघ के अन्दरूनी हिस्से में एक इंजेक्शन लगाया। बिन्दिया सोचने-समझने की ताकत खो चुकी थी। विरोध करने का रत्ती भर खयाल भी नहीं आया। वे लोग जैसा-जैसा कहते गये, वैसा-वैसा वह करती गयी। एक कार बाहर खड़ी थी। वे उसमें बैठ कर चल पड़े। एक तरफ़ वह औरत और दूसरी तरफ़ मर्द बैठा। बिन्दिया बीच में। बाहर रात थी। सन्नाटा था। घण्टा-आधा घण्टा खाली, लम्बी सड़कों पर रफ़्तार से दौड़ती कार अचानक कुछ गलियों में बाएँ-दाएँ होती एक मकान के सामने रुक गयी। इन गलियों में रोशनी थी। मकान रोशनी से चमक रहा था। वह औरत उतरी, वह मर्द उतरा। मर्द ने उसकी बाँह पकड़ कर उतारा, तो कइयों की हँसी एक साथ खनकी। सीटियाँ बजीं। फिकरे उछले। मकान में चहल-पहल थी। संगीत बज रहा था। धुआँ और अजीब-सी गन्ध के भभके आ रहे थे।

वह मर्द उसे धकेलते हुए सीढ़ियों पर बढ़ा और एक कोठरी में डाल कर निकल गया। पीछे-पीछे वह औरत आयी।

'यां तू मेरी है। सब भूल जा। सब मेरे को अक्का बोलते... बड़ी भैन। तेरे को कोई परेशानी नइ होयेंगी। अबी तू इत्ता तो समज इ गयी होयेंगी कि यां पे तू कायको है... अक्का जो है मुँह पे बोलती है... तेरे को पूरा तीस हज़ार रुपै दे के मय खरीदी है... समजी... अबी जब तक तू मेरे को इत्ता कमा के नइ देंगी, तब तक मेरी गुलाम... आगे फिर तेरी मर्जी होयेंगी तो रैना अक्का के पास... नइ तू आज़ाद...।'

'तू डरे मत... हफ़्ता भर, दस दिन जित्ती तेरी मर्जी उत्ता आराम कर... मेरे कू सब पता कि वो भड़वे लोक तेरे कू क्या क्या नइ किए होयेंगे... मय बी समजती औरत की तकलीप... मइने बी सब इसी बदन पे झेला है। पन धन्धा तो धन्धा है...। उसमें मय तेरी नइ सुनेगी...। अबी तू आराम कर ले। ...सुबै मेरे कू बताना कि तेरे कू खाने में क्या क्या पसंन... मय सब मंगा के देगी तेरे लिए...। ये खोली आज से तेरी...। पन हाँ, फोकट में नइ हो... किराया

लगेंगा... हफ़्ते के हफ़्ते पाँच सौ रुपै...। चल, बाकी बात बाद में समजाइंगी मय तेरे कू... सो जा...।'

'धड़ाम' की आवाज़ के साथ दरवाज़ा बन्द हो गया। बिन्दिया ने बाहर से कुँड़ी लगने की आवाज़ सुनी। अन्दर घना अँधेरा था। कुछ भी देख पाना नामुमकिन था।

कमाठीपुरा।

बिन्दिया की ज़िन्दगी का यह नया पता था। उसके जैसी यहाँ कई थीं। उसी की तरह लायी हुइं। बहकाई, भगाई, ललचाई, उठाई, डराई। यहाँ से कोई रास्ता बाहर को नहीं जाता था। मजदूर, गरीब, रिक्शेवाले, ठेलेवाले, बीमार, कमजोर, गरम मिजाज, ठण्डे बदन, कुली, मवाली, लफँगे, गुँडे, अपराधी, स्कूल-कॉलेज के छोकरे, अफसर, अधिकारी, पुलिस, छोटे-बड़े व्यापारी, बाहर से दो-चार दिन को शहर में आने वाले, बाहर से आकर बस जाने वाले... सब आते। शाम होते होते ज़िन्दगी शुरू होती और सुबह होने तक गुलजार रहती। यहाँ किस्मत का माप ऐसे होता कि रात में कितने ग्राहक मिले। कितने के मिले। कैसे मिले। वे सब कोसतीं, गालियाँ देतीं, कराहतीं, आँसू बहातीं... मगर जिन्दा रहतीं।

बिन्दिया ने भी इस तरह जिन्दा रहना सीख लिया था।

छह महीने बीत गये। एक दिन उसके पास ऐसा ग्राहक आया जो किसी डाँस बार वाले का करीबी था। उसने कहा कि तेरे जैसे फिगर वाली को तो बार में होना चाहिए, ख़ूब कमाएगी...।

'चल नाच के दिखा...'

उसने गाना बजाया... *'मुँगड़ा मुँगड़ा... मैं गुड़ की डली... मँगता हो तो आजा रसिया नाही तो मैं ये चली...'*

बिन्दिया नाची। जितना आता था, उतना नाची। वह आदमी खुश हुआ। बोला, 'अन्ना को लाऊँगा, तू उसके बार की आइटम बन जायेगी..।' बिन्दिया हँसी। नशे में लोग बहुत कुछ बोल कर जाते थे। बिन्दिया का काम था, उन्हें इतना खुश करना कि वे लौट कर आयें।

दो दिन बाद वह आदमी सच में लौटा। लेकिन अकेला नहीं। एक आदमी उसके साथ था। फिर गाना बजा, *मुँगड़ा मुँगड़ा... मैं गुड़ की डली... मँगता हो तो आजा रसिया नाही तो मैं ये चली... ।* बिन्दिया फिर नाची, जितना उस दिन नाची थी, उससे बढ़ कर नाची। अन्ना को भी नाच पसन्द आया। उसने अक्का से बात की। ठण्डी-गरम आवाज़ में बातचीत हुई। भाव-ताव हुआ। अन्ना ने चालीस हज़ार में बिन्दिया को खरीद लिया।

बिन्दिया अन्ना के साथ जाने लगी तो अक्का ने ख़ूब आशीर्वाद दिया। बोली, 'तू नसीबवाली है। तू यां के लिए नइ थी। जा...।'

बिन्दिया अब अन्ना के बार में डाँसर बन गयी। उसने सोचा कि चलो, कुछ तो दिन फिरे। ...लेकिन कहाँ?

यहाँ एक साथ दर्जनों नज़रें उसके जिस्म को भेदती थीं। कोई कोई उसे छू भी लेता। शाम से लेकर आधी से ज़्यादा रात बीत जाती, उसे फुर्सत नहीं मिलती। वह नाचती रहती। उसने पीना शुरू कर दिया। बिना होश गँवाए यह काम कैसे हो सकता था? अन्ना बहुत सख़्त आदमी था। जरा सी भी उसके मन की नहीं हुई तो लुँगी घुटने के ऊपर तक मोड़ के

खोंस लेता और हाथ छोड़ बैठता। 'मद्रासी' में गालियाँ बकता। तब वह बहुत भयानक नज़र आता। बिन्दिया जैसी उसके पास दर्जनों थीं। उसके कई डाँस बार थे। उसके यहाँ दूसरे डाँस बारों से ज़्यादा छूट रहती, इसलिए लोग ज़्यादा आते। अन्ना का साफ़ कहना था कि कोई ग्राहक जेब में पैसा लेकर वापस नहीं जाना चाहिए। ग्राहक के आते ही किसी न किसी लड़की की ड्यूटी उस पर लग जाती और लड़की को हर हाल में ग्राहक को खल्लास करना होता। रोजाना के ग्राहकों की लड़कियाँ भी बँधी होतीं। वे किसी ख़ास लड़की को पसन्द करते। वह उनके आगे नाचती। वे उस पर पैसा लुटाते। बिन्दिया के भी ग्राहक बँध गये थे। वह उनके सामने नाचती। जैसा वे चाहते। जितना वे चाहते, उतना झुकती। जहाँ वे चाहते, उन्हें छूने देती। अन्ना के लिए ग्राहक भगवान था। उसे शिकायत बर्दाश्त नहीं होती। अगर किसी ग्राहक को लड़की पसन्द आ जाती तो उसके लिए ऊपरी मंजिल पर पूरा इन्तजाम था। लेकिन बार बन्द होने के बाद। इस काम के लिए रेट बहुत ऊँचे थे। हर कोई उन पर राजी नहीं होता। लेकिन अगर ग्राहक पैसा देने को राजी हो तो अन्ना का साफ़ कहना था कि कोई लड़की मना नहीं करेगी।

हालाँकि अन्ना लड़की से इसका एक पैसा नहीं लेता। वह कहता, 'मय रण्डी का दल्ला नइ है।'

बिन्दिया भी किसी को मना नहीं कर सकी।

धीरे-धीरे उसने महसूस किया कि डाँस बार का काम बहुत ज़्यादा थकाने और जिस्म तोड़ देने वाला है। कई बार तो जागने पर उसे होश ही नहीं रहता कि रात को कौन था और उसने क्या किया? असल में रात क्या और दिन क्या... उसे पता नहीं था कि वह जिन्दा भी है... या किसी नर्क में पड़ी अनजाने दुष्कर्मों का फल भुगत रही है!

अकेले में कभी उसे यह ख़याल आता तो एक अज्ञात डर उसके मन के किसी कोने में पैदा होता। वह बेचैन हो जाती। उस दिन उसका मन बार में नहीं लगता। वह ढंग से नहीं नाचती। यह देख कर अन्ना ख़ुद आता और उसके कान में भद्दी-सी गाली देता जो तेज़ फूहड़ संगीत में सिर्फ़ उसे ही सुनाई पड़ती। उसे अन्ना से डर लगता। वह आँखों-आँखों में उससे क्षमा याचना करती और डाँस फ़्लोर के पीछे जाकर एक गिलास शराब गटक लेती।

फिर नाचती। ख़ूब नाचती। पसीने से उसके कपड़े तर हो जाते। कपड़ों का उसे होश नहीं रहता। ऐसे में अक्सर दूसरी लड़कियों से बँधे ग्राहक भी उस पर पैसा लुटाने लगते। तब स्थिति को सँभालना मुश्किल हो जाता। कभी झगड़े की नौबत भी आ जाती। बात बढ़ती, तो अन्ना ख़ुद बीच-बचाव के लिए आता। उसे गाली देता और कहता 'रण्डी आकिर में रण्डी इच रैगी। हटा यां से इसकू... बाज़ार के इच लाइक है, वहीं भेजो...। साली... दूसरी लड़कियों का धन्धा ख़राब करती...।'

तभी एक बिल्ली बोली : रण्डी और धन्धे से याद आया। पता नहीं इंसान क्या तो बी बोलते... सबका टैम ख़राब चल रे ला है। यां तक के रण्डियों के धन्धे का भी हाल बहुत बुरा! हज़ार देने वाला पाँच सौ क्या, दो सौ देने कू राजी नइ है। मय तो जूहू के फाई इश्टार होटलों के पीछे घूमती। सब देकती। बड़े पैसे वाले तफरी को आते हैं वाँ। आज इच देका, धन्धेवालियों

ने अपना रेट इत्ता गिरा लियेला है कि दस रुपये में हाथ से 'पानी' निकाल देने कू तैयार हैं...!

बाकी बिल्लियाँ खी खी खी... कर के हँस पड़ीं और एक-दूसरी की आँखों में आखें डालकर बोलीं, 'पानी...'

'हाँ, पानी...। आज इच एक मरद से एक रण्डी बोल री थी...' वह बिल्ली पूरी मासूमियत से बोली।

7.

पानी...!

यह नए संकट का नाम था। महानगर के अधिकतर इलाकों में पन्द्रह से तीस फीसदी तक पानी की कटौती शुरू हो चुकी थी। बृहन्मुम्बई नगर पालिका ने लोगों को चेतावनी दी कि आने वाले दिन और मुश्किल हो सकते हैं। पानी का इस्तेमाल सँभल कर करें। सबको किफायत से पानी खर्च करने के लिए जागरूक बनाने की कोशिशें हो रही थीं। लेकिन कई जगहों पर कटौती का विरोध शुरू हो गया था। चौबीस घण्टे बिजली और चौबीस घण्टे पानी, यह मुम्बईकरों की ज़रूरत है। ज़रूरत क्या... जितनी भाग-दौड़ और तनाव उनके जीवन में है, उसे देखते हुए हक है। मुम्बई देश में सबसे ज़्यादा टैक्स भरती है, सबसे ज़्यादा धन उगाती है! ऐसे में नल में पानी नहीं... सिर्फ़ इतने से ही ठहर जाने की फुर्सत किसके पास थी...? लेकिन पानी न होने का अहसास तनाव पैदा करता था, चिड़चिड़ा बनाता था और गुस्से को भड़काता था।

मार्च आ गया था। गर्मियाँ शुरू हो चुकी थीं। सोसायटी के नल सूखने लगे थे। पानी आने का वक़्त सुबह चार बजे था। पौने चार से घरों में अलार्म बजने लगते थे... और इन्तज़ार शुरू होता था। पहले एक दिन छोड़ कर, फिर दो दिन... इसके बाद हफ़्ते में दो दिन और फिर एक ही दिन!

अन्त में पानी खत्म हो गया!!

लोगों का धैर्य भी चुक गया। वे प्रॉपर्टी ब्रोकरों से झगड़ने लगे। यह कहाँ फँसाया... पैसा तो पूरा लिया...। पैसा वापस लाओ... नहीं तो नया फ़्लैट दिलाओ...। पानी वाला फ़्लैट...।

कमाल को भी बुलाया। वह आया। बोला, ‘अक्खी मुम्बई में येई हाल है। पानी खल्लास... कहीं भी जाओ।’

तो क्या मुम्बई छोड़ के जाएँ...?

इसकी ज़रूरत नहीं थी। कमाल ने रास्ता निकाला।

ओसामा से मिल लो...।

ओसामा का एक पैर नहीं था, लेकिन उसके पास सबकी ज़रूरत का पानी था। पानी पर उसका कब्जा था। ओसामा सोसायटी से पीछे बनी झुग्गियों का मालिक था। सोसायटी की तरफ़ आने वाले पानी के पाइप झुग्गियों से होकर आते थे। ओसामा ने नल बीच में ही काट लिए। उन्हीं से केन और टैंकर में भर-भर कर वह पानी बेचता था।

बीस रुपये में बीस लीटर की केन... चाहे पीने के लिए लो, चाहे धोने के लिए...!

लेकिन एक केन में कैसे गुजारा हो सकता है...?

ओसामा से जितनी कही जाये, उतनी केन दे देगा...। बस, पैसा पूरा लेगा।

ओसामा पानी का देवता था...। उसके आदमी घर तक पानी पहुँचाते थे। होम डिलेवरी फ्री।

...लेकिन अपने ही हक का पानी खरीदना?

कमाल बोला, 'ऊपर तक ये पैसा पहुँचाता है। अफसर से ले कर नेता तक। सारी पार्टियाँ मिली हुई हैं। शिकायत करके भी कुछ नहीं होगा। सब साल भर का कमायेंगे दो-तीन महीने में...। इसलिए कोई नहीं बोलता ओसामा के खिलाफ़। थोड़ा कम्प्रोमाइज किधर नहीं करना पड़ता मुम्बई में...? यही कोई दस बरस हुआ... नॉर्थ मुम्बई में पानी के लिए दंगे हुए थे। पानी के चोरों ने पानी को ख़ून से रंग दिया था। ख़ून-ख़राबा बोलो किसको पसन्द?'

कमाल सच कहता था।

पानी को लेकर लगातार ख़बरें आ रही थीं...!

एक युवती अपनी बड़ी बहन के साथ रहती थी। एक प्राइवेट फर्म में टेलीफ़ोन ऑपरेटर थी। उसे बार-बार हाथ धोने की आदत थी। पानी की इस बर्बादी के लिए बहन उसे रह-रह कर डाँटने लगी। इससे युवती डिप्रेशन का शिकार हो गयी। लाख कोशिशों के बाद भी वह अपने को हाथ धोने से नहीं रोक पाती थी और डाँट सुनती थी। एक दिन बड़ी बहन ने साफ़ कह दिया कि यदि वह इसी तरह पानी बर्बाद करती रहेगी तो अपने रहने का अलग बन्दोबस्त कर ले। युवती को इतना धक्का लगा कि उसने ख़ुद को तेज़ रफ़्तार से आती लोकल ट्रेन के आगे फेंक दिया। घटना घाटकोपर में हुई।

दादर में बीएमसी के दफ़्तर के बाहर विरोध प्रदर्शन में एक एनजीओ कार्यकर्ता की मौत हो गयी। एक बड़े नेता का बेटा पानी पर आन्दोलन चला कर अपनी राजनीति चमका रहा था। उसके चमचे नारा लगा रहे थे, 'राव साहब अँगार हैं, बाकी सब भँगार हैं...।' उसी के नेतृत्व में वह मोर्चा निकला था, जिसमें एनजीओ कार्यकर्ता की मौत हुई। पुलिस ने उसे लाठियों से ख़ूब पीटा था। इस मौत के बाद हँगामा बढ़ा और नेता पुत्र के चमकने के मौके भी बढ़ गये।

ख़बरें और भी थीं... अश्लील...!

बान्द्रा, सान्ताक्रूज और अँधेरी के पाँच सितारा होटलों और रईसों के क्लबों के स्वीमिंग पूल पानी से लबालब थे। गर्मी में ठण्डक पाने के लिए अमीर तरणतालों में पड़े बीयर की चुस्कियाँ ले रहे थे। देसी-विदेशी सुन्दरियाँ बिकनी में उनके इर्द-गिर्द मँडरा कर उनकी आँखों को भी ठण्डक पहुँचा रही थीं। हालाँकि ये अमीर गहरे रंग के चश्मे चढ़ाए थे और उनकी आँखों की बेशर्मी को पकड़ पाना किसी के लिए भी मुमकिन नहीं था।

बॉलीवुड का एक फिल्म निर्देशक प्रेस कॉन्फ्रेंस में गर्व से बता रहा था कि उसकी फिल्म, मुम्बई में 26 जुलाई 2005 की भीषण बरसात पर है। मुम्बई को पानी में डूबी दिखाने के लिए उसे दो सौ टैंकर पानी बहाना पड़ा। दूसरे निर्देशक ने अपनी कॉमेडी में सुनामी का क्लाइमेक्स फिल्माया और सात सौ टैंकर पानी बहा दिया। तीसरे ने न्यूयॉर्क का सैट मुम्बई में बनाया और बाढ़ दिखाने के लिए हर दिन बीस टैंकर पानी बहाया। शूटिंग हफ़्ते भर से ज़्यादा चली। इनमें से हर टैंकर में करीब बारह हज़ार लीटर पानी था और एक हज़ार टैंकरों के पानी से सवा लाख से ज़्यादा मुम्बई निवासियों की ज़रूरत पूरी हो सकती थी।

आँकड़े कह रहे थे कि मुम्बई को हर दिन 21 करोड़ बाल्टी पानी की ज़रूरत है। मगर 17 करोड़ बाल्टी ही उपलब्ध है। मुम्बई के हर परिवार की ज़रूरत प्रतिदिन साठ लीटर पानी

की है और पिछले मौसम में बरसात औसत से 21 प्रतिशत कम हुई है। ऐसे में अगर 15 से लेकर 30 प्रतिशत तक की कटौती पचास फीसदी तक बढ़ा दी जाये... तो आश्चर्य कैसा?

सिर्फ़ ओसामा का सहारा था। मरते के मुँह में पानी देने का पुण्य उसके ही हिस्से लिखा था।

कमाल ने कहा, 'मैं उससे बात करता हूँ। सोसायटी वालों को चाहिए कि मुश्किल वक़्त में मिलकर साथ खड़े हों। हर परिवार कम से कम छह से आठ केन मँगाता है। यानी हर दिन सवा सौ-ड़ेढ़ सौ रुपये का खर्च। अलग-अलग पानी मँगाना महँगा पड़ता है। ओसामा से टैंकर खरीदो। सस्ता पड़ेगा। दूसरों को दो हज़ार में देता है, मैं बात करूँगा तो पन्द्रह सौ तक दे देगा। सोसायटी मिल कर पैसा इकट्ठा करे तो हर परिवार के हिस्से अस्सी-नब्बे रुपये के करीब आयेंगे। पानी भी भरपूर मिलेगा। इतना कि दो दिन चल जाये।'

वाकई कमाल बुद्धिमान था। इस सौदे में किसी को खोट नहीं दिखा।

ढूँढने पर ओसामा शराब के ठेके पर मिला। बात चली तो बोला : 'जितना चाहिए ले लो सर जी, पानी तो आपका ही है...'

'हमारे लिए तो पानी लक्जरी है...'

'हम तो दारू में भी पानी नहीं मिलाते...'

'सर जी, हम तो सोडा मिला के पीते हैं...' कहते हुए उसने ज़ोर का ठहाका लगाया।

कमाल ने पूरे उत्साह से उसका साथ दिया तो वह पन्द्रह सौ में टैंकर देने को राजी हो गया।

सोसायटी का जल-संकट समाप्त हुआ।

लेकिन दलाल के लिए एक नया संकट खड़ा हो गया। उसकी बीबी ने बाहर निकल कर टैंकर से पानी भरने से इंकार कर दिया। इस पर दोनों में ख़ूब झगड़ा हुआ।

...और तब वह लड़की निकली, जो अब तक सबकी नज़रों से छुपी थी। वह, जो स्वामी नयनानन्द की शिष्या बन कर आयी थी। जिसे वह बेचने के लिए नेपाल से लाया था। लेकिन मनमाफिक सौदा न होने के कारण दलाल के पास छोड़ गया।

जब सोसायटी में पानी का टैंकर आता, तब वह लड़की बाहर निकलती। बाल्टी, हण्डे और घड़े से पानी भरते हुए तर-ब-तर हो जाती। उसका बदन गठीला था और वह कभी हाँफती नहीं थी। उसका चेहरा सदा भावशून्य रहता और वह कतार में खड़ी होकर अपनी बारी का इन्तज़ार करती। किसी से बात नहीं करती। टैंकर के पाइप को दलाल ख़ुद सँभाल रहा होता। लड़की जब उसके सामने पहुँचती तो वह उसके भीगे कपड़ों में नज़रें गड़ा देता। लड़की शलवार-सूट पहने होती। दुपट्टा नहीं होता। पाइप को थामे हुए दलाल के चेहरे के भाव बदलते। लड़की उसकी आँखों में आँखें डाल कर देखती और चुपचाप पानी के बर्तन उठा कर चली जाती। दलाल लड़की को देखता रहता और वहाँ मौजूद लोग दलाल का लड़की को ललचाई नज़रों से देखना देखते रहते।

दलाल इस बात से बेपरवाह था कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं।

दलाल में धीरे-धीरे परिवर्तन नज़र आने लगा। सबसे पहले उसका हेयरस्टाइल बदला। घने घुँघराले बाल 'स्ट्रेट' हो गये। फिर उसके कपड़े पहनने का अन्दाज़ बदला। कपड़े रंग-

बिरंगे हुए। उसकी ऑखों पर स्टाइलिश काला चश्मा आ गया। उसके जूते स्पोर्टी हो गये। कुल मिला कर वह अपनी उम्र से कम और ज़्यादा जवान दिखने की कोशिश में नज़र आने लगा। जैसे-जैसे दिन बीतते गये, दलाल का रूप बदलता गया। उसके साथ धीरे-धीरे लड़की का भी रूप बदला। वह अब पहले से ज़्यादा नज़र आती और अक्सर सज-धज कर दलाल के साथ बाहर जाती।

हमेशा पहले लड़की तैयार होकर बाहर निकलती और उसके पीछे दलाल...। कभी दलाल लड़की से कोई चुहल करता और कभी लड़की दलाल से। कभी दलाल उसका दुपट्टा खींच लेता तो कभी वह उसके बालों को बिखेर देती। कभी दलाल उसकी कमर में चिकोटी काट लेता तो कभी लड़की दलाल के गाल खींच देती।

दोनों को सोसायटी की दर्जनों जोड़ी आँखें देखतीं, लेकिन वे किसी को नहीं देखते और बाइक पर सवार हो कर निकल जाते। लड़की अपनी दोनों बाँहें पीछे से दलाल की छाती पर कसती और उसकी पीठ से चिपक जाती। दलाल झटके से बाइक को रेस देता और लड़की 'ओ माँ...' कहती हुई खिलखिला कर हँस पड़ती...।

दलाल के फ़्लैट की खिड़की से एक जोड़ी आँखें यह देख रही होतीं। दलाल की बीवी की आँखें।

दलाल की बीवी अकेले में रोती रहती। अपनी ज़िन्दगी के दुखों के बारे में सोचती हुई सोफे पर अधलेटी, कमरे में मँडराती बिल्ली को देखती रहती। जाने क्यों उसे बिल्ली अपनी-सी लगती। वह उठ कर रसोई में जाती और एक प्लेट में दूध लाकर उसके सामने रख देती। बिल्ली दूध को देखती और फिर दलाल की बीवी को। दलाल की बीवी की आँखों में दूध पीने का आग्रह होता। बिल्ली आग्रह को स्वीकार लेती। दूध पीने के बाद वह प्लेट को इतने बढ़िया ढंग से अपनी लम्बी गुलाबी जुबान से चाटती कि प्लेट धुली हुई मालूम पड़ती। हालाँकि पूरी सफाई से दूध पीने के बाद भी बिल्ली की मूँछ के एक बाल में ओस बराबर दूध की बूँद चिपकी रह जाती... और यह देख कर दलाल की बीवी के मन में हँसी का हल्का-सा ख़याल आता। लेकिन उसके दुख उसकी मुस्कान को स्थगित कर देते। वह गहरे प्रेम से बिल्ली पर नज़र डालती और उसे उठा कर गोद में बैठा लेती।

बिल्ली को उसकी गोद में बैठना अच्छा लगता। वह पैरों को सिकोड़ लेती और सिर निढाल छोड़ देती। दलाल की बीवी उसका सिर ख़ूब सँभाल कर अपनी जाँघ पर रख लेती। बिल्ली की आँखें मुँद जाती। दोनों के बीच मौन खिंचा रहता। कुछ मिनट यूँ ही बीतते और उसके बाद दुख से भरी दलाल की बीवी अपना मन खोलने लगती...

'जब से ये रण्डी आयी है, हरामी इस पर लट्टू है। कमीना मुझसे कटा-कटा रहता है। अपने दिन भूल गया, जब मेरे पैसों पर टुकड़े तोड़ता था। कुत्ता भी नहीं पूछता था इसको। मेरी गोद में सिर छुपा के रोता था। मेरी मति मारी गयी थी कि इस पर दया खाती रही। किसी को कम में भी ले आता तो उसके साथ चली जाती थी कि इसको चार पैसे मिल जायेंगे...। इसके पास दो के चार ग्राहक आयेंगे...। आज मुझे ही आँखें दिखाता है।'

उसकी आँखें नम हो जातीं...।

‘मेरी किस्मत ही फूटी है। मरे मिनिस्टर ने डॉस बार बन्द न कराये होते तो क्या मेरे को कोई कमी थी? रोज़ अच्छा कमा लेती थी। कोई न कोई मिल ही जाता था। बार बन्द हुए तो किस्मत पर भी ताले पड़ गये। क्या करती और कब तक करती? तभी ये बोला कि चल मेरे साथ बैठ जा, तुझे ब्याह करके रखूँगा। ...सच्ची कहती हूँ, जब उसने ये बात बोली थी तो मैं बहुत खुश हुई थी! कौन औरत गन्दे धन्धे में रहना चाहती है? कौन नहीं चाहती कि ब्याह हो, घर बसे...? मुझे इस पर इतना प्यार आया था कि क्या बोलूँ? मैंने जरा भी नहीं सोचा...।’

‘वैसे झूठ क्यों बोलूँ... इसने मुझसे ब्याह किया तो फिर धन्धा नहीं करने दिया। माँ कसम... उस दिन के बाद आज तक बैठ के खा रही हूँ। पर सच तो यह है कि इसकी दलाली मुझसे ब्याह करने के बाद फूली-फली...। डाँस बार बन्द होने के बाद लड़कियाँ कहाँ किसको ढूँढ़तीं...? इसने ही उन्हें ग्राहक ढूँढ़ के दिये। मेरी पहचान की तो सारी इससे लग गईं...। सब मुझसे जलन खाती हैं कि इसके पास कुछ ‘अलग-सी’ है क्या...?’

कहते कहते दलाल की बीबी के गाल लाल हो जाते। उसके होठों पर हल्की मुस्कान खिंचती और वह बिल्ली का नर्म-रोएँदार बदन सहलाने लगती। बिल्ली कुनमुनाती और आँखें खोल कर उसे देखती। दोनों की नज़रें मिलतीं और दलाल की बीवी को लगता कि उसकी आखिरी बात पर बिल्ली भी शरारत से मुस्करा रही है। उसके गाल कुछ और लाल हो जाते...।

‘मैंने जितना पैसा जमा करके रखा था, उससे ये फ़्लैट खरीद लिया। हाँ, उसने थोड़ा कर्जा इधर-उधर से लिया। लेकिन अब सब निपट गया। उस समय इतनी दूर कोई रहने नहीं आता था और इतना महँगा भी नहीं था। सोसायटी के पीछे दलदल ही दलदल था... और इतनी बदबू और मच्छर कि पूछ मत। पर... मुम्बई में अपना फ़्लैट... मैंने सोचा नहीं था कि मेरी कभी इतनी औकात होगी। वैसे तो ये भी कहाँ सोचा था कि मेरे साथ क्या-क्या गुजरेगी? आज तक यहाँ किसी को मेरे और इसके बारे में पता नहीं लगने दिया मैंने, पाँच साल हो गये सोसायटी में। हर किसी को मैंने यही बताया कि मड आइलैंड में इसका चाइनीज रेस्टोरेंट है। सब यही जानते हैं। लेकिन कभी-कभी डर लगता है। जब से ये लड़की आयी है और ये खुल्ला उसके साथ घूमता है...। किसी को शक हो गया तो मैं मुँह दिखाने के काबिल नहीं रह जाऊँगी। मैंने समझाया भी, पर...।’

‘वैसे तो मुझे ख़ास दुख नहीं देता, लेकिन हम दोनों को साथ में छह साल के ऊपर हो गये, अभी तक बच्चा नहीं हुआ। ये तो सोचता ही नहीं। मैं ही मरती रहती हूँ। अरे बच्चे के बिना औरत कैसी...? मैंने अपनी सारी जाँच करा ली...। डॉक्टर बोला कि सब ठीक है। डॉक्टर ने इसको भी जाँच कराने को कहा, लेकिन ये मानता ही नहीं। कई बार मैं झगड़ी। लेकिन बच्चा क्या झगड़े से पैदा होगा...? प्यार भी ख़ूब किया...। लेकिन अब समझ नहीं आता कि क्या करूँ? कभी-कभी मुझे डर लगता है कि ये मेरे हाथ से निकल न जाये...। इधर-उधर मुँह मारने लगा है... मुझे सब पता है। ...और जब से ये रण्डी आ पड़ी है घर में, तब से तो... क्या कहूँ? जब तक इसका सौदा नहीं हो जाता, तब तक मेरी जान पर आफत बनी रहेगी।’

दलाल की बीवी निराश लम्बी साँस खींचती...

‘अपनी तो अपने को ही ढंक के रखनी पड़ती है। क्या करूँ, समझ नहीं आता...। आजकल ये एकदम खुल्ला साँड हो गया है। बस उसके पीछे लगा रहता है। झूठ क्यों बोलूँ, मैं तो मरी से पूरा काम लेती हूँ, कस के। कपड़े-बर्तन, साफ़-सफाई सब कराती हूँ। मुफ़्त की रोटी क्यों तोड़ने दूँ...? ये एक बार बोला भी कि तूने उसको नौकरानी बना रखा है...। मैंने भी साफ़ कह दिया, घर के बाहर बना तू इसको महारानी। मेरा घर है, नौकरानी जैसी रहेगी तो रहने दूँगी... नहीं तो जहाँ तेरी मर्जी ले जा इसको। यह चुप हो गया।’

‘मैं देखती रहती हूँ दोनों को। पहले ये मेरी नज़र से छुप के उसके यहाँ-वहाँ हाथ लगाता था, अब तो सामने ही कभी शलवार में तो कभी कुर्ती में हाथ डाल देता है, मुर्दा...। ये रण्डी भी कम नहीं... ऐसे कपड़े पहन के मँडराती है कि बदन का कुछ भी छुपता नहीं। कल तो लेकिन हद हो गयी... इसने मेरे सामने उसकी शलवार इतनी ज़ोर से खींची कि सीधे नीचे आ गयी... कमीनी कुछ नहीं पहनी थी... दोनों ही... ही... करके हँसने लगे... सच्ची... आँख का पानी मर गया दोनों का... मुझे ही शर्म आयी... मैं दूसरे कमरे में चली गयी।’

दलाल की बीवी की आँखों में तैरते आँसू गालों पर लुढ़क पड़े।

8.

दलाल जब-जब उसे छूता, उसे अपनी उम्र लौटती मालूम पड़ती। उसके नजदीक जाकर हर बार वह ख़ुद को पहले से ज़्यादा जवान महसूस करता। नेपालन के जिस्म की गर्मी से उसे अपने अन्दर किसी ठण्डे कोने में पड़ी हुई इच्छाएँ जागती मालूम पड़तीं और वह हैरत में पड़ जाता। वह समझने की कोशिश करता कि आखिर उसकी देह में ऐसा क्या है जो उससे कुछ लेता नहीं, बल्कि उसमें नई ऊर्जा का संचार करता है?

दलाल को लगता था कि कपड़ों के अन्दर हर औरत एक-सी होती है। देश-दुनिया के हर कोने की हर औरत। दलाल ने जाने कितनी औरतों को अपने आगे नंगा देखा था। कितनी को ख़ुद बेलिबास किया था। उसे याद नहीं कि कितनी औरतों के साथ कब-कब वह सोया...। लेकिन वह बात जो नेपालन के जिस्म में थी, उसे किसी में नहीं मिली। क्या था उसमें ऐसा? दलाल सोचता तो दुविधा में पड़ जाता। उसे ख़ूब गौर से देखता। उसके अंग-अंग को। उसे प्यार करता तो अनजानी तरंग उसकी देह में दौड़ पड़ती। मन में रोमांच पैदा होता। वह उसे चूमता।

नेपालन के जिस्म का कोई कोना बाकी नहीं रह जाता।

वह दम साधे रहती और खाली आँखों से उसे घूरती। वह समझ नहीं पाती कि क्या करे? लेकिन जैसे ही दलाल उसकी छातियों को अपनी हथेलियों में भर कर बीचों-बीच चूमता, वह खिलखिला कर हँस पड़ती। वहाँ उसे गुदगुदी होती और वह दलाल का सिर या तो कस कर भींच लेती या फिर उसे धकेल देती। दलाल बेबस हो जाता। वह फिर उसकी छातियों के बीच में ज़ोर से चूमना चाहता और वह बस, यही नहीं करने देती। वहाँ चूमे जाने के खयाल से ही वह खिलखिलाती रहती...। दलाल उसे देखता रहता। नेपालन का पूरा जिस्म हँसी से खिल जाता। पहले इस हँसी से धीरे-धीरे हल्का गुलाबी रंग झरता... और फिर पूरे जिस्म से। इस रंग में दलाल के लिए निमन्त्रण होता।

वह निमन्त्रण जो पहले किसी देह में उसने नहीं देखा।

ऐसा सत्कार...! ऐसा स्वागत...!

नेपालन उसे और भी सुन्दर और जादुई लगती।

वह निमन्त्रण को स्वीकार करता। वह गुलाबी रंग में शराबोर हो जाता। इतना कि ख़ुद को भी नहीं पहचान पाता।

वह चकित होता कि आखिर नेपालन में क्या जादू है?

यह सोचते हुए वह खरगोश बन जाता और वह नर्म-नर्म घास में बदल जाती।

खरगोश घास पर उछल-कूद करता... और फिर थक कर घास में ही छुप जाता।

घास खरगोश को अपने भीतर छुपा लेती।

खरगोश की गुलाबी आँखें देखती रहतीं...।

निर्वस्त्र गुलाबी रंग...।

गुलाबी धरती, गुलाबी आसमान। गुलाबी पेड़, गुलाबी चिड़िया। गुलाबी पहाड़, गुलाबी नदी। गुलाबी सूरज, गुलाबी बादल। गुलाबी तारे, गुलाबी चाँद। गुलाबी सड़क, गुलाबी गेंद...।

गुलाबी गेंद सड़क पर लुढ़कती चली जाती और दलाल उसे पकड़ने की इच्छा लिए उसके पीछे दौड़ता...।

अपनी उम्र से पीछे... पाँच... दस... पन्द्रह... बीस... बाईस साल...। अन्तत: गेंद ठहर जाती... तेईस साल... पीछे। वह लपक कर उसे उठा लेता और तेज़ी से पलट कर फेंकता...। फेंकते हुए उसका हाथ थोड़ा ज़्यादा घूम जाता और गेंद दिशा भटक जाती। सीधे एक लड़की की पिण्डली पर जाकर लगती...! वह लड़खड़ाकर गिरने को होती कि जैसे-तैसे सँभल जाती। उसे महसूस होता कि पिण्डली पर जहाँ गेंद लगी वहाँ जैसे कोई माचिस की तीली रखी थी, जो रगड़ के साथ ही जल उठी...। होते-होते कुछ ही पल में वहाँ गेंद के आकार का सुर्ख गुलाबी धब्बा बन जाता। गोरी पिण्डली पर सुर्ख गुलाबी धब्बा...!!

मैदान में शोर उठता। सारे लड़के उछलते और खिलखिला कर हँसने लगते।

लड़की अपने चेहरे पर गहरी पीड़ा की छाया लिए पलट कर उस लड़के को देखती, जिसने गेंद फेंकी थी...।

लड़के की सूरत पर क्षमा माँगने का भाव आता...। जानबूझकर नहीं मारी... आँखों ही आँखों में वह कहता। लड़की उसे भरपूर नज़र से देखती। फिर सहज विश्वास कर लेती और गेंद उठा कर वापस उछाल देती। लड़का लपक लेता। लड़की मुस्कराती और पलट कर अपनी राह चल देती। उसकी गोरी पिण्डली पर बना सुर्ख गुलाबी धब्बा भी उसके साथ चलता चला जाता।

मैदान में एक बार फिर शोर उठता और इस बार कुछ लड़के सीटी भी बजाते। लड़का किसी विजेता की तरह तन जाता। आँखों से ओझल होने तक लड़की स्कूल के गलियारे में सधे हुए कदमों से चलती चली जाती। लड़के का मन फिर क्रिकेट खेलने में नहीं लगता। मैदान में जिस तरफ़ भी गेंद जाती, उसे लड़की की पिण्डली दिखाई देती।

फिर उसकी जगह रह जाता, सुर्ख गुलाबी गोल धब्बा...। मैदान में चारों तरफ़ दौड़ता...।

सुर्ख गुलाबी गोल धब्बा...!!

उस दिन जब लड़का क्लास में लौटा तो पहली बार उस लड़की की तरफ़ आकर्षित हुआ।

वह भी उसकी तरह क्लास की आखिरी बैंच पर बैठती थी। खिड़की के नजदीक। उसके ठीक विपरीत छोर पर। लड़के की नज़रें रह-रह कर उसकी तरफ़ उठ जातीं। चोरी-चोरी। वह सबकी नज़रें बचा कर उसकी तरफ़ देखता। उसके चेहरे पर। लड़की का गोल चेहरा खिड़की से आने वाली धूप में गुलाबी हो जाता। उसकी आँखें रोशनी में चमक रही होतीं। रोशनी से उसके गाल भी चमकते। लड़की के कानों में पड़ी बालियाँ दमकतीं। धूप उसके बालों पर गिरती। बिखरे बालों के बीच से झरती रोशनी... लड़के की आँखों में चुभती। लेकिन यह चुभन उसे मीठी लगती।

नज़र की ख़बर लड़की तक पहुँच जाती। वह लड़की एक नज़र लड़के पर डालती और फिर खिड़की से बाहर देख कर मुस्करा पड़ती। हालाँकि वह मुँह फेर कर मुस्कराती, लेकिन उसकी मुस्कान लड़के से छुप नहीं पाती।

धीरे-धीरे धूप खिड़की से होती हुई रेशा-रेशा नीचे उतरती जाती तो लड़के को लगता, जैसे कोई जादू घट रहा है। लड़की अपनी जगह बैठी रहती। लड़का उसे निहार रहा होता। वह देखता कि तेज़ चमकती धूप लड़की के बालों और चेहरे से उतरती हुई, उसके पतले-लम्बे गले तक आती और फिर उससे नीचे...। वह मन्त्रमुग्ध देखता और धूप लड़की के बालों, उसकी बालियों और उसकी हँसी को पारदर्शी बनाती हुई उसकी छाती पर छा जाती। ...और तभी लड़की का सफ़ेद शर्ट धूप में पारदर्शी हो जाता...! शर्ट के भीतर अचानक दूधिया विस्फोट होता... और लड़के की आँखों में सफ़ेद रंग भर जाता। कुछ पल में वह सँभलता और देखता कि एक-एक कर हज़ारों रंग उस सफ़ेदी में पैदा होकर हवा में खो रहे हैं। उन रंगों के साथ उसके मन में उठ रहे खयाल भी खोते जाते। देखते-देखते हल्की बेहोशी उस पर तारी होती। ...और उसकी आँखों में गुलाबी रंग उतर आता। रोशनी को गुजरने की जगह देते हुए लड़की के शर्ट में दो सुर्ख गुलाबी धब्बे आकार लेते...!! ठोस आकार...!!

लड़के के दिल की धड़कन ठहर-सी जाती। ठहरी हुई साँस से दम फूल जाता...। उसके जिस्म में एक भट्टी धधक उठती और रगों में ख़ून तेज़ रफ़्तार से दौड़ने लगता। वह हाथ बढ़ा कर उस गुलाबी रंग को अपनी हथेली में भर लेना चाहता... यह इच्छा करते ही उसकी हथेलियाँ पसीने से तर हो जातीं...। वह सोचता कि इस गुलाबी रंग में एक छलाँग के साथ ख़ुद को डुबा दे... उसके माथे पर नमी छलछला जाती... उसे अपनी तेज़ होती साँसों से गुलाबी रंग झरता मालूम पड़ता... और तब लगता कि बस, उसकी चोरी पकड़ी जाने वाली है; वह घबरा कर आँखें मूँद लेता।

दलाल ने जब पहली बार यह बात कमाल को बताई थी, तो वह हँस हँस कर लोटपोट हो गया था। जब उसकी हँसी ठहरी तो उसने गम्भीर चेहरा बनाते हुए पूछा था, 'सच्ची बोलना... रंग ही झरा था कि कुछ और...?'

इसके बाद उसने एक जोरदार अश्लील ठहाका लगाया। हँसी का यह दौरा कमाल पर कितने घण्टे रहा, दलाल को ठीक से याद नहीं। लेकिन धीरे-धीरे वह ख़ुद उसकी हँसी में शामिल हो गया और दोनों ख़ूब हँसे थे। कमाल ने नौकर को भेज कर दूसरी बोतल मँगाई थी और उन्होंने ख़ूब पी थी।

कमाल अपनी ज़िन्दगी में अकेला था। बीवी उसे छोड़ कर चली गयी थी।

जिस लड़की से उसने प्यार किया था, उससे ही निकाह भी।

लड़की के कहने पर वह एक बढ़िया नौकरी छोड़ कर दुबई से अपने देश लौटकर आया था। यहाँ प्रॉपर्टी ब्रोकर का धन्धा शुरू किया। काम चल निकला।

ज़िन्दगी अच्छी चल रही थी कि अचानक एक दिन उसकी बीवी लापता हो गयी...। ख़ूब ढूँढ़ा, पर नहीं मिली। कुछ दिन बाद उसका फ़ोन आया : ढूँढ़ने की कोशिश मत कर। जहाँ हूँ, बहुत खुश हूँ। हाँ, तुझे याद करती हूँ। मुझे ख़ूब प्यार करता है तू, यह जानती हूँ...। मैं भी तुझे ख़ूब प्यार करती हूँ...। तू ख़ूब अच्छा आदमी है, पता है..., लेकिन मैं ख़ुद को कब तक धोखा देती...?

निकाह के दो साल, पाँच महीने, अठारह दिन बाद जब वह कमाल को छोड़ कर भागी थी, तो कुँवारी ही थी...।

वह ख़ूब रोई फ़ोन पर...। कमाल भी रोया। उसने नहीं पूछा कि क्यों छोड़ कर गयी? कहाँ है? किसके साथ है?

कमाल जब पीकर बहक जाता तो फूट-फूट कर रोता। दलाल के पैरों में लोट जाता।

'भाई... ढूँढ़ ना उसको...(हिच्च)। मैं उसके बिना जिन्दा नहीं रहूँगा... जान दे दूँगा... (हिच्च)। मैं अब भी उसको प्यार करता हूँ...(हिच्च)। कितना करता हूँ... कैसे बताऊँ... उसके बिना मैं...(हिच्च)।'

दलाल पहले तो कमाल को ढाढस बँधाता और फिर सख़्ती से कहता कि रोना बन्द कर। जो औरत इस दुनिया में एक बार खो जाती है, फिर वह दोबारा नहीं मिलती। औरत बहती नदी है। उसके साथ रहने का एक ही तरीका है, उसमें डूब कर उसके साथ तैरते रहो। एक बार जो वह छोड़ कर चली गयी तो फिर खो ही जाती है।

यह कहते हुए दलाल के स्वर में गहरी निराशा पैदा होती और वह सामने रखी बोतल को उठा कर नीट ही गटकने लगता। उसके गले से सीने तक जैसे कोई शोला भड़क जाता। उसकी आँखों में अँगारे जल उठते। तेज़ सनसनी के साथ खौलता हुआ ख़ून उसके धड़कते दिल में खलबली मचा देता... उसे मेघना मोरे की सुर्ख़ गुलाबी धब्बे वाली गोरी पिण्डली याद आती... उसके बालों और गालों पर गिरती सुनहरी धूप... उसके कानों में पड़ी दमकती बालियाँ... और पारदर्शी शर्ट के भीतर दूधिया रोशनी का विस्फोट...!

दलाल की आँखों के आगे सफ़ेद रंग छा जाता। पल भर को उसे साँस अटकती मालूम पड़ती, लेकिन वह तुरन्त अपने मस्तिष्क का सन्तुलन साधता और ज़ोर से खँखार कर एक भद्दी-सी गाली हवा में उछाल देता।

मेघना मोरे के नाम... एक भद्दी-सी गाली।

मेघना मोरे 'चिथाड़' है।

पढ़ने में फिसड्डी। आठवीं तक आते-आते दो बार फेल। हमेशा सीनियर लड़कों से सेट रहती है। उन्हीं से पता चला है... किसी के साथ कहीं भी चली जाती है। होटलों में, सिनेमाघरों में, कॉलेज के होस्टलों तक में जा चुकी है। स्कूल के पिछवाड़े स्टोर रूम में तो झाड़ू मारने वाले को जाने कितनी बार 'निरोध' मिले हैं! एक बार केमेस्ट्री लैब में अधेड़ अटेंडेंट के साथ चपरासी ने पकड़ लिया था। उसने चपरासी को भी 'चुप' किया!

सीनियर कहते हैं, साली निंफ है...! निंफ...!! जाने कितने जन्मों की भूखी...!! भूखी शेरनी की तरह हमला करती है...!!

मेघना मोरे क्लास के लड़कों को भाव नहीं देती। क्लास की लड़कियों से भी ज़्यादा बात नहीं करती। बात करे तो क्या...? ये लड़कियाँ तो उसके आगे बच्चियाँ हैं।

पढ़ाई में भले ही मेघना मोरे पिछड़ी हो, लेकिन उसने उम्र को पीछे छोड़ दिया है। है सोलह की, लगती है बीस की। हर तरफ़ से भरी-पूरी। गदराई। तराशी हुई।

नज़र पड़ते ही अटक जाती है।

साली क्या खाती है...? मस्ताए लड़कों का झुँड सवाल करता।

फिर उन्हीं में से कोई बाँका जवाब उछालता, 'केला...।' एक सामूहिक अश्लील ठहाका पैदा होकर हवा में बिखर जाता।

लड़के को अब अश्लील ठहाके नहीं सुहाते थे। वह उस झुँड में शामिल नहीं होता, जो सदा जिज्ञासु रहता कि मेघना मोरे क्या खाती है...? उसे लगता कि यह सवाल करने वाले और इसका जवाब देने वाले के मुँह पर कस के मुक्के मारे। ऐसे कि दाँत टूट जायें। ख़ून के फव्वारे फूट जायें। लेकिन झुँड बड़ा था और वह अकेला। फिर वह यह भी नहीं चाहता था कि किसी को पता चले, वह मेघना मोरे को लेकर दूसरों की तरह नहीं सोचता...।

मेघना मोरे उसे बहुत सुन्दर लगती। उसके चेहरे पर जो मासूमियत थी, वह क्लास की किसी और लड़की के चेहरे पर कहाँ? नन्ही बच्ची की तरह उसका चेहरा हमेशा खिला रहता। जब मुस्कराती तो लगता कि सब कुछ ठहर जाये। वह बस मुस्कराती रहे। उसकी मुस्कराहट को वह अपनी कॉपी में मोरपंख की तरह रख लेना चाहता। वह देखता कि खिड़की के पास बैठी मेघना मोरे के बालों पर जब धूप उतरती तो उनमें मोरपंखी रंग पैदा हो जाते...। लड़का इन क्षणों की प्रतीक्षा करता।

प्रतीक्षा के इन क्षणों में लड़के ने गौर किया कि लड़की के चेहरे पर अधिकतर उदासी का भाव होता है। कभी-कभी वह गहरा हो जाता और लड़की बीमार-सी दिखने लगती है। लड़का बेचैन हो जाता। वह लड़की को बीमार-सी बना देने वाली उदासी का कारण जानना चाहता। लड़की के नजदीक जाकर उसे छूना चाहता। उसका हाथ अपने हाथों में लेना चाहता। उसे वह हल्की-सी उदास और थोड़ी-सी बीमार लड़की सुन्दर लगती। उसे लगता कि लड़की के लिए कुछ करना चाहिए, जिससे वह खुश हो। उसके चेहरे पर फूल-सी ताजगी लौट आये। वह मुस्कराए।

तभी कोई सीनियर लड़का क्लास के दरवाज़े पर आकर इशारा करता और मेघना मोरे उठ कर चल देती।

लड़का उसे जाते हुए देखता रहता।

मेघना मोरे अपना उदासपन और बीमारपन उसे सौंप कर नज़रों से ओझल हो जाती।

लड़के का मन क्लास में नहीं लगता।

उसे बहुत सारे सवाल बेचैन करते।

उसने जवाब ढूँढ़ने शुरू किए तो पता चला कि वह पतिता-बाल उद्धार समिति के गर्ल्स हॉस्टल में रहती है। हॉस्टल की रिकॉर्ड बुक में दर्ज है कि उसकी माँ कुछ साल पहले मर चुकी है। उसे एड्स हो गया था। उसका बाप पहले ही एक सड़क दुर्घटना का शिकार हो चुका था। मेघना मोरे उन आदमियों को खोजना चाहती है, जिन्होंने उसे अनाथ बनाया। वह उन्हें सजा देना चाहती है। अपनी बदकिस्मत ज़िन्दगी से नाराज़ वह ख़ुद को भी सजा देना चाहती है। क्रोध, निराशा, हताशा और अवसाद के दौरों में वह दो बार कलाई की नसें काट चुकी है, लेकिन डॉक्टरों ने बचा लिया। उसकी कलाई पर काटे हुए के निशान साफ़ दिखते हैं। लड़का उन्हें दूर से देख चुका है। वह उसके दिल में बने घावों के निशान को सहलाना चाहता। वह उससे कहना चाहता... मैं हूँ... मेघना।

वह जब अकेले में उसका नाम लेता तो यही कहता... मेघना।

इसके आगे वह अपना नाम उसके नाम में जोड़ कर देखता और मन ही मन मुस्कराता। रात में बिस्तर पर लेटे हुए उसके अपने साथ होने की कल्पना करता। उसके बालों में अपनी उँगलियाँ फिराता, उसके गालों को चूमता, उसके कानों में लटकी बालियों से खेलता और उसकी छाती पर अपना सिर रख देता...। तब एक सफ़ेद सपना उसे अपने आगोश में ले लेता और वह खो जाता।

जाने कैसे एक दिन वह क्लास में ही सपने के आगोश में चला गया और दूसरे लड़कों ने उसका सपना देख लिया। सब उस पर ख़ूब हँसे...।

यही मिली!

वह झगड़ पड़ा। कुछ से मार-पीट की नौबत आयी तो कुछ ने बीच-बचाव किया। बात बढ़ी और उसने कहा कि सब झूठे हैं। किसी ने मेघना मोरे के दिल में झाँक कर देखा है क्या...? इस बात पर फिर हँसी के फव्वारे छूटे और लड़कों ने कहा कि सुबह जल्दी आकर वह ख़ुद अपनी आँखों से नंगी हकीकत देख ले।

शर्त लगी...।

रात कटी। सुबह आयी। स्टोर रूम के पिछवाड़े सब जमा हुए।

लड़कों ने कहा मेघना मोरे निंफ है...। रोज़ सुबह यहाँ आती है। ‘डेली डोज’ लेने।

लड़के की आत्मा पर जैसे ज़ोर का मुक्का पड़ा। वह लगभग रो पड़ा। बोला, ‘कितनी ही बार, कितना ही चीख कर कहने पर भी झूठ सच में नहीं बदल जाता।’

सबने ज़ोर का ठहाका लगाया। लड़का चुप रहा।

वह अन्तहीन बेचैनी से पैदा हुए अन्तहीन सवालों से घिरा था, जिनका कुल जवाब सिर्फ़ मेघना मोरे के न आने में निहित था। उसे मेघना मोरे के न आने की प्रतीक्षा थी। वह उस प्रतीक्षा के अन्तहीन होने की प्रार्थना में डूबा हुआ बुदबुदा रहा था... प्रेम, विश्वास, उम्मीद, ज़िन्दगी... अन्तत: इन्हीं की जीत होती है।

अब तक की कक्षाओं में पढ़े तमाम पाठ कैसे गलत हो सकते हैं? अगर पाठ गलत हैं तो ज़िन्दगी गलत है। पढ़ा-लिखा, देखा-सोचा गलत है। अगर ये गलत है तो इसकी ज़रूरत क्या है? अगर इसकी ज़रूरत नहीं तो ये स्कूल क्यों हैं? हम यहाँ क्या कर रहे हैं? स्कूल के पिछवाड़े, स्टोर रूम की खिड़की के नीचे...? यह सब क्या है...?

छल है... छल है... छल...!

छल है... छल...!

छल...!

मेघना मोरे को नंगी आँखों से मैथुनरत देख कर लड़के छलछलाए...!

वह रो पड़ा... आँखें छलछलाीं... प्रेम, विश्वास, उम्मीद, ज़िन्दगी... अन्तत: हार गये।

उसके हताश होंठ घृणा से ऐंठ गये।

उनसे एक ही शब्द निकला...

‘चिथाड़...’

9.

लोग बदल रहे थे। सोच बदल रही थी। आदतें बदल रही थीं। रुचियाँ बदल रही थीं। बाज़ार बदल रहा था। सैकड़ों एस्कॉर्ट कम्पनियाँ आ चुकी थीं। औरतों-मर्दों के बहुत सारे क्लब और सोसायटियाँ बन गयी थीं। इंटरनेट ने लोगों के तार सीधे जोड़ दिए थे। दुनिया सिकुड़ गयी थी। हर कोना पड़ोस में बदल चुका था। हर इंसान दूसरे की नज़र में था। सब कुछ आँखों के आगे था। छुपाने को कुछ नहीं रह गया था। छुपाने की ज़रूरत भी कम महसूस होने लगी थी। अगर कुछ छुपा था तो पहले से कहीं सघन अँधेरे में था। खुलेपन की रोशनी इतनी तीखी थी कि अँधेरा दिखता भी तो आँखों का धोखा मालूम पड़ता था। धोखे का किसी को डर नहीं था। धोखे के हर सवाल का एक ही जवाब था, 'हू केयर्स...'

एक मल्टी नेशनल कम्पनी में काम करने वाले छब्बीस साल के रोहित दासगुप्ता और अड़तीस साल की नलिनी नायर के बीच प्यार, सेक्स और धोखा घट रहा था। ...और क्या पता उन्हें यह अहसास था या नहीं कि उनकी कहानी पर फ़िल्म भी बनायी जा सकती है?

'हू केयर्स...'

कमाल ने रोहित को सोसायटी में एक फ़्लैट किराये पर दिलाया था। नलिनी उसके पड़ोस में रहती थी। उसका छह साल का बेटा था, यश। नलिनी का पति से तलाक हो चुका था। वह भी एक एमएनसी में नौकरी करती थी। रोहित को नलिनी कई बार लिफ़्ट में दिखी, कई बार बस स्टैंड पर। एक बार रात जब ज़्यादा हो चुकी थी और मलाड रेलवे स्टेशन के बाहर भीड़ में वह बस का इन्तज़ार करती नज़र आयी तो रोहित ने उसे बाइक पर लिफ़्ट दे दी। इसके बाद धीरे-धीरे नलिनी का बस से जाना-आना छूट गया। रोहित उसे ले भी जाता और वापस लेकर भी लौटता। नलिनी उसे रात का खाना नहीं बनाने देती और अपने घर में ही हाथ से बना कर खिलाती। मर्द के दिल तक पहुँचने का रास्ता उसके पेट से हो कर जाता है... वह जानती थी। हालाँकि एक फ़िल्म में उसने नायिका को अपनी सखी से यह कहते हुए भी सुना था कि हकीकत में यह रास्ता पेट के नीचे से होकर जाता है...!! यह सुन कर वह अपना पेट पकड़ कर हँसी थी। वह खाना खाते हुए रोहित को देखती तो सोचती, इसके दिल की राह कहाँ से होकर गुजरती है?

रोहित के आने से पहले नलिनी यश को खाना खिला कर सुला देती।

रोहित नलिनी को देखता। भर आँख देखता। उसका स्नेह माँ की याद दिलाता। वह उसे पस्त हो जाने तक खिलाती। वह खा कर वहीं लुढ़क जाना चाहता। लेकिन यश को देख कर भारी मन से डोलता फ़्लैट में लौट आता।

दीवाली आयी तो यश के साथ नलिनी माँ-बाप के घर चली गयी। लौटी मगर अकेली।

अकेले रोहित और आज़ाद नलिनी की ज़िन्दगी में अचानक रफ़्तार आ गयी। बाइक मेट्रो की भीड को चीरती हुई अतिरिक्त रफ़्तार से हवा से बातें करने लगी। लेट नाइट, लॉंग ड्राइव, क्लब, म्यूजिक, ड्रिंक और डिनर...। रातें चंचल हो उठीं।

यश के लौट आने से पहले की रातें।

यश के लौट आने के बाद की रातें।

सुबह होने तक नलिनी रोहित के बैडरूम में रहती। यश के साथ रात में रहने के लिए उसने मेड रख ली। मेड को वह दोगुने पैसे देती। राज को राज बनाये रखने के। एक दिन नलिनी ने रोहित को बताया, 'मॉम एन डैड आर कमिंग नेक्स्ट वीक...। वी कैन प्लान अ हॉलीडे अलोन। आइ विल टैल दैम देट आइम गोइंग आउट ऑफ स्टेशन फॉर सम ऑफिस वर्क। दे विल टेक केयर ऑफ यश...।'

रोहित चौंका, 'ह्वाय...? वी कैन मैनेज हीयर ओनली...! यू कैन कम टू माइ प्लेस... एज यूजवल...।'

'लेकिन सोचो रोहित... हम दोनों अकेले होंगे, सिर्फ़ मैं और तुम...'

'बट ह्वाय...?'

'आइ लव यू रोहित... डोंट यू...?'

रोहित ज़ोर से हँसा... 'आर यू अ फूल...?'

नलिनी बोली, 'या... आइ एम अ फूल...'

उसे जवाब मिला, 'यू आर अ होर... फकिंग बिच...'

रोहित के गाल पर एक जोरदार तमाचा पड़ा तो उसने महसूस किया कि उसके सामने एक भरी-पूरी औरत खड़ी है। कोई खिलन्दड़ी-सी किशोरी या युवती नहीं। तमाचे की गूँज पूरी सोसायटी में सुनाई पड़ी।

उस दिन के बाद छब्बीस साल का रोहित दासगुप्ता किसी को नज़र नहीं आया।

अड़तीस साल की नलिनी नायर के मॉम और डैड नहीं आये। कुछ दिन बाद वह भी फ़्लैट छोड़ कर अपने छह साल के बेटे यश को लेकर चली गयी।

कमाल बोला, 'जो हुआ ठीक हुआ। कैसे निभती, दोनों की उम्र में पूरे बारह साल का फ़र्क था। यह लौंडा जब अड़तीस का होगा, तब वह पचास की बुढ़िया नहीं हो जायेगी...?'

पचास की बुढ़िया...?

दलाल के खयाल में अचानक बीवी आयी। जब वह पचास की होगी, तो वह कितने का होगा...? उसने हिसाब लगाया। बीवी जब पचास की होगी, वह बयालीस का होगा। वह उससे आठ साल बड़ी है...! नहीं... इससे भी बड़ी। आठ साल, तीन महीने, पाँच दिन... उसने और बारीकी से हिसाब जोड़ा। उसे घुटन होने लगी। उसे लगा कि उसकी बीवी ने अभी-अभी पचास को छू लिया! बुढ़िया हो गयी...!!

दलाल का जिस्म बेजान हो गया। मांस-पेशियाँ ढीली पड़ गईं। हड्डियाँ खोखली होती-सी लगीं। त्वचा पर झुर्रियाँ तैरने लगीं। हाथ, पैर, जाँघें, पेट और छाती लटक-से गये...। दलाल ने महसूस किया, चेहरे के नीचे उसकी बीवी का धड़ है...!! उसकी साँसें भारी हो गईं। उसे बेचैनी होने लगी। कमरे में एसी चल रहा था, फिर भी उसे पसीना छूट गया। शरीर में दौड़ते ख़ून की रफ़्तार और गर्मी बढ़ गयी।

उसे गुस्सा आया। फिर शर्मिंदगी महसूस हुई।

ख़ुद पर गुस्सा और ख़ुद पर शर्मिंदगी।

यूरोलॉजिस्ट की रिपोर्ट उसकी आँखों के आगे तैर गयी।

फिजिकिल एक्जामिनेशन

(कम्प्यूटर एनालिसिस ऑफ स्पर्म)
क्वांटिटी : 2.2 सीसी
कंसिस्टेंसी : विसिड ऑन कलेक्शन, लिक्विफाइड ऑन स्टेंडिंग
कलर : ग्रेइश ह्वाइट
पीएच : एल्कलाइन
स्पर्मकाउंट : 12,500,000 सेल्स/एमएल
मोटिलिटी मोटाइल : इममोटाइल
नॉर्मल : 79%
एबनॉर्मल : 10%
पिन हेड : 7%
बिग हेड : 3%
डबल हेड : 1%
पस : 2-3/एचपीएफ

बीवी ने दलाल के वालेट में वह पर्ची रख दी थी, जिसमें गायनिकोलॉजिस्ट ने स्पर्म टेस्ट के लिए लिखा था। जाने कितने दिन वह वालेट में पड़ी रही। बीवी बोल-बोल कर हार गयी। फिर उसने कहना बन्द कर दिया। एक दिन जाने क्या हुआ कि दलाल ने बाइक उठाई और यूरोलॉजिस्ट के यहाँ चल पड़ा।

आज तक किसी औरत ने उसके मर्द होने को नहीं नकारा। ख़ुद उसने हर पल अपने आप को तैयार पाया। कितने पल... कितनी औरतें...! यूरोलॉजिस्ट के क्लीनिक की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए वह सोच रहा था। अपनी जाँच कराना...! वाकई इससे ज़्यादा हास्यास्पद क्या हो सकता है? ज़िन्दगी में उसे इतनी शर्म कभी नहीं आई थी। भरे दिन में सीढ़ियों पर अँधेरा था...। दलाल को यह बन्द कमरों के अँधेरे से बहुत अलग लगा। अँधेरे-अँधेरे में भी फ़र्क होता है, सीढ़ियों पर उसने महसूस किया! यह अँधेरा पता नहीं क्यों उसे डरावना लगा। इस अँधेरे में ठण्डक थी। मुर्दा-सी ठण्डक। मनहूस-सी। यह ठीक जगह नहीं...। दलाल का मन डोला कि लौट जाये, लेकिन तब तक चौथी मंजिल पर मौजूद क्लीनिक के दरवाज़े के सामने पहुँच चुका था। रिसेप्शन पर एक युवती फ़ोन पर किसी को बता रही थी कि उसकी रिपोर्ट अभी क्यों तैयार नहीं हुई और कब तक हो जायेगी। उसके पास लगभग अधेड़ उम्र का एक आदमी कागजात व्यवस्थित कर अलग-अलग लिफाफों में भर रहा था। यह लोगों की रिपोर्टें थीं। ख़ून की, थूक की, पेशाब की और वीर्य की भी।

दलाल के बदन में फुरफुरी-सी पैदा हुई। दरवाज़े के बाहर जूते खोल कर वह अधेड़ आदमी के सामने जाकर खड़ा हो गया। काम निपटा तो उसने पूछा, ‘कहिए...?’

दलाल ने वालेट से पर्ची निकाल कर चुपचाप उसे थमा दी।

पर्ची पर नज़र डाल कर वह बोला, ‘दो दिन से तो नहीं किया ना?’

अचानक दागे इस सवाल से दलाल अचकचा गया।

हल्के से हिले होठों से धीरे-से निकला, 'नहीं...।'

'बैठ जाओ...।' उसने सामने कुर्सी की तरफ़ इशारा किया।

दलाल जाकर बैठ गया। उसे घबराहट महसूस हो रही थी। रिसेप्शन वाली युवती ने उसकी ओर देखा, तो उसने नज़र घुमा ली। क्या उसे पता चल गया कि वह क्यों आया है? वह भाग कर कहीं छुप जाना चाहता था। उस युवती की नज़र से दूर। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। दलाल को लगा कि वह कोई और आदमी है। उसे आश्चर्य हुआ। कौन है वह...?

ठीक दो मिनट बाद वह आदमी आया। उसके हाथ में एक छोटी-सी डिब्बी थी। उसने इशारे से दलाल को बुलाया। जाँच रिपोर्ट के एडवांस छह सौ रुपये लेकर रसीद काटी और डिब्बी देकर बोला, 'सामने वो कमरे में जाके...।'

दलाल ने फुर्ती से डिब्बी ली और बिना मुड़े उस कमरे की तरफ़ बढ़ गया। उसे लगा युवती की नज़रें पीछा कर रही हैं। उसे घबराहट हो रही थी। कमरे में ऊँचाई पर एक छोटी गोल खिड़की थी और धूप का एक टुकड़ा सूरज की तरह चमक रहा था। इतने उजाले में...? दलाल को गर्मी लगने लगी। उसने इधर-उधर नज़र डाली। कुछ नहीं था। सिर्फ़ तिपाया स्टूल पड़ा था। वह बैठा तो स्टूल एक तरफ़ झुक गया। दलाल समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे...? कैसे...? दीवारें सफ़ेद थीं और धूप से चमक रही थीं। दलाल को लगा जैसे दीवारें नहीं, बड़ी-बड़ी आँखें हैं। क्या करे...? कैसे...? फिर वही सवाल। कमरे में जैसा सन्नाटा था, इससे पहले उसने कभी महसूस नहीं किया। उस सन्नाटे में चमक थी। स्टूल पर बैठे-बैठे वह जैसे हाँफने लगा। उसके माथे पर पसीना चू आया। गर्मी और तेज़ हो गयी। उसका मन हुआ कि भाग जाये। तभी उसे लगा कि जैसे ही बाहर निकलेगा, उस युवती की निगाहों की पकड़ में आ जायेगा। उसे डर लगा। वह यहाँ क्यों आया...? उसने बहुत बड़ी भूल की। ज़िन्दगी की एक बड़ी भूल। उसके मन में खीझ पैदा हुई। उत्तेजित होने को इस भरी रोशनी और सफ़ेद दीवारों वाले कमरे में कुछ नहीं था।

अचानक उसे मृत्यु का खयाल आया। उसने सुना था कि मरते हुए लोगों को ऐसा ही कुछ महसूस होता है। चमकदार सन्नाटा और सफ़ेद रोशनी... दूर किसी अँधेरी सुरंग से आती हुई! उस सुरंग के पीछे कई हज़ार सूर्यों जैसा प्रकाश होता है। इतना प्रकाश कि वह गहरे-गाढ़े अँधेरे में बदल जाता है। उसी अँधेरे में कोई छिद्र होता है, जहाँ से किरण फूटती है और रोशनी की सुरंग में तब्दील हो जाती है। पवित्र और सफ़ेद रोशनी...। शान्त और शीतल...।

दलाल हार गया... उससे नहीं होगा।

यहाँ नहीं होगा...। इस मृत्यु के द्वार पर खड़े होकर।

वह दरवाज़ा खोल कर कमरे से बाहर आ गया। पसीने से तर-ब-तर। लगभग हाँफता हुआ। हथेली से उसने गीले माथे को साफ़ किया और उस अधेड़ आदमी के पास गया। डिब्बी उसके सामने रख दी। आदमी उसका मुँह देखने लगा। दलाल बोला, 'यहाँ नहीं...'

'तो...?'

'घर जा के ला दिया तो...?'

'कल सुबह करके लाना, बहुत लेट मत करना...'

‘ज़्यादा दूर नहीं है घर, पन्द्रह मिनट में...।’

‘चलेगा...।’

दलाल ने डिब्बी उठाई और पेंट की जेब में रख कर दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया। बाहर कदम रखते ही उसे लगा जैसे कोई बहुत बड़ा बोझ सीने से उतर गया है। मुड़ कर देखा, रिसेप्शन वाली युवती सीट पर नहीं थी और फ़ोन बज रहा था। उसने गहरी साँस ली। जल्दी-जल्दी जूते पहने और तेज़ी से अँधेरी सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

‘नो चांस...’ डॉक्टर ने यूरोलॉजिस्ट की रिपोर्ट को शुरू से अन्त तक पढ़ा और कहा।

‘मतलब...?’

‘डबल प्रॉब्लम है। तुम नेचरल-वे में बच्चा नहीं पैदा कर सकते। तुम्हारा स्पर्म काउंट तो नॉरमल से बहुत कम है ही, उससे भी ज़्यादा मुश्किल यह कि स्पर्म मोबिलीटी नहीं है... यानी कि वो आगे नहीं बढते हैं।’ दलाल का मुँह लटक गया। वह डॉक्टर का चेहरा देखने लगा।

डॉक्टर ने कहना जारी रखा, ‘हम मिनिमम बीस मिलियन पर मिलिलीटर को नॉर्मल मानते हैं और इसमें से भी फिफ़्टी परसेंट की मोबिलिटी ज़रूरी है। अब कुदरत का खेल इसमें यह है कि इन करोड़ों में से एक ही स्पर्म प्रेगनेंसी के लिए ज़रूरी है!’

‘कोई तो रास्ता होगा...?’

डॉक्टर बोला, ‘लो स्पर्म काउंट का इलाज बहुत मुश्किल है। इसकी न कोई मेडिकल थेरेपी है और न ही सर्जिकल। पक्के तौर पर यह कह पाना भी मुश्किल होता है कि किसी का स्पर्म काउंट क्यों लो है? हालाँकि हारमोन टेस्ट करके यह ज़रूर जाना जा सकता है कि स्पर्म काउंट बढ़ाने में मेडिसिन हेल्प करेंगी या नहीं। लेकिन स्पर्म मोबिलिटी नहीं होने से तुम्हारे लिए सबसे बेस्ट एडवाइस यही है कि आइवीएफ ट्राई करो... यानी टेस्ट ट्यूब बेबी।’

दलाल के पैरों तले जमीन खिसक गयी।

अपनी नज़र में वह बैल बन गया...!!

उसे लगा जैसे शरीर की सारी ताकत निचुड़ती जा रही है। उसने सिर को झटका दिया और सामान्य होने की कोशिश की, लेकिन नहीं हो सका। उसने पाया कि पूरे शरीर में जोंकें चिपक गयी हैं और सारा रक्त सूख रहा है। फेफड़े जाम हो गये हैं। उसे अपनी साँसें पेड़ों की टहनियों के बीच से सीटी बजाते गुजरती हवा सरीखी लगी। उसने बोलने की कोशिश की तो भीतर से ऐसी आवाज़ें आयीं, जैसे तेज़ हवाओं में टीन की चादरें आपस में टकरा रही हैं।

वह जड़ हो गया। उससे हिलते नहीं बन रहा था।

उसकी ‘मोबिलिटी’ जैसे खत्म हो गयी।

जैसे उसके स्पर्म, वैसा वह...!

ऐसा नहीं कि दलाल के भीतर बाप बनने की इच्छा ने बहुत ज़ोर मारा था। ऐसा कभी नहीं हुआ था।

हाँ, जब बीवी बहुत भावुक होकर बोलती थी तो किसी एक पल को उसके मन में कुछ करवट लेता था। वह क्या होता था?

कोई इच्छा...? कतई नहीं...।

फिर...? वह सोचता...।

वह एक गन्दी-गरीब चाल में पैदा हुआ था। जहाँ बच्चों से प्यार नहीं किया जाता था। होता भी कैसे...? वे प्यार की निशानियों की तरह पैदा नहीं होते थे। वे बस एक नैसर्गिक परिणाम होते थे। अपनी माँ के लिए बोझ, जो उसके जिस्म को रौंदते 'मरद' के कारण असमय, अनचाहे उसके गर्भ में आ जाते थे। वे एक निश्चित समय चक्र में एक के बाद एक पैदा होते जाते थे। वे सचमुच उसके मांस-मज्जा की कीमत पर बने होते थे। वे उसकी बीमारी और कमज़ोरी का सबब होते थे, जिनसे उबर पाना ताज़िन्दगी उसके लिए नामुमकिन होता था। ऐसे में वह उन्हें याद रखने की बजाय बुरी यादों की तरह भुला देना बेहतर समझती थीं।

बाप उन बच्चों को गालियाँ देते थे और अक्सर सन्देह से भरे होते थे कि वे उनकी ही करतूत का नतीजा हैं या...। वे हमेशा शराब पीए होते और उन्हें पीटते क्योंकि उनका पेट भरना पड़ता था। पेट भरा नहीं होने पर बच्चे ज़ोर-ज़ोर से रोते थे। बाप हमेशा ही उचक्कों की तरह दिखाई देते, जिन पर दुनिया में कोई भी आदमी विश्वास नहीं करता होगा। उनके मुँह से हमेशा बीड़ी की बास आती। ऐसा भी होता कि थोड़ी रात हो जाने पर वे किसी गली में किसी से टकरा कर किसी नाली में गिर जाते और उनके औरत-बच्चों को कोई इसकी ख़बर करता। तब वे सब इकट्ठा होकर उन्हें उठाने के लिए जाते। बदले में ख़ूब सारी गालियाँ और लात खाते। इस बीच कोई पल आता, जब औरत बोल पड़ती और मार-पीट शुरू हो जाती। मोहल्ला इकट्ठा हो जाता और बिना टिकट का एक तमाशा सबका मनोरंजन करता। हर झोपड़ी के बाहर होने वाले तमाशे एक जैसे होते थे। वही बातें, वही गालियाँ, वही इशारे... वही लात-घूँसे, वही जूतम-पैजार। फिर भी सब इसे चाव से देखते... और जब तक भूख मर नहीं जाती, वहीं इकट्ठा रहते।

ऐसे ही किसी तमाशे में उसकी माँ ने बाप के माथे पर सिल दे मारा था और भीड़ को चीरती हुई सड़क पर आ गयी थी। उसने पलट कर भी नहीं देखा कि वह जिन्दा है या मर गया...? उस दिन उसने महसूस किया था कि उसकी माँ उस जैसे दूसरे बच्चों की माँ जैसी नहीं है। उसे याद नहीं कि वह तब कितना बड़ा... या कितना छोटा था?

सच पूछो तो उसे कुछ भी याद नहीं। वह सब कुछ भूल चुका है। वह याद करना भी नहीं चाहता।

उसे याद नहीं कि माँ उसे लेकर किस आदमी के पास गयी। दोनों वहीं रह गये। कितने दिन...? वह आदमी माँ से प्यार से पेश आता था। उससे भी। लेकिन माँ के पास और भी आदमी आते थे। तब वह आदमी उसे लेकर दूसरे कमरे में चला जाता। कुछ दिन ऐसे ही चलता रहा। फिर माँ बाहर जाने लगी। वह उस आदमी के पास ही रहने लगा। कभी-कभी माँ रात भर और कभी दो-दो रात नहीं आती। जब आती, बहुत थकी होती। यह देख कर उसका मन नहीं करता माँ के पास जाने का। एक दिन माँ ने उसे बहुत प्यार किया और कहा कि उसे इस आदमी के साथ दूसरी जगह पर जाना होगा। अब वह माँ के पास नहीं रहेगा। माँ उससे मिलने आया करेगी।

नई जगह पर बहुत सारे बच्चे थे। लम्बे गलियारों में पलँग पड़े थे। सामान रखने को अलमारियाँ थीं। नजदीक ही एक स्कूल और खेल का मैदान था। माँ कभी-कभी उससे मिलने आती और थोड़ी देर में चली जाती। धीरे-धीरे उसे पता चला कि अब उसे बड़े होने तक यहीं रहना है। बड़े होने तक यानी जब तक पढ़ाई पूरी नहीं कर लेता। पढ़ाई यानी बारहवीं कक्षा तक...।

जब उसे पता चला कि यह किसी पतिता-बाल उद्धार समिति के द्वारा बनाया गया बॉय्ज हॉस्टल है तो उसे नहीं मालूम था कि 'पतिता' क्या होता है और 'बाल उद्धार' से क्या मतलब है? जिस दिन उसे इन दोनों बातों के मतलब का पता चला, उसने फिल्मी अन्दाज़ में ठहाका लगाया क्योंकि उसकी नज़र में माँ पतिता नहीं थी और जैसा समिति वाले चाहते थे, वैसा उसका उद्धार हुआ ही नहीं था।

दलाल के बचपन की बातें खत्म हुईं तो कमाल और ओसामा ने ज़ोर का ठहाका लगाया और अपने-अपने गिलास एक ही घूँट में खत्म कर गये।

ओसामा बोला, 'देख भाई लाइफ भी क्या चीज़ है...? कहाँ से चले थे कहाँ आ गये...! इसीलिए भाई... अपन कबी टेंशन लेता इच नइ। अपन एक बात बोलता, याद रखने का...। बोले तो अपन लोग क्या...? सोचो... सोचो... (हिच्च) काल के झाँट के बाल... वो किधर हिलायेंगा, किधर गिरायेंगा... किसी को कुछ पता नइ...। जब नइ पता, तो कायको टेंशन...? वोइच सबसे बड़ा बाप है...'

'बाप...' दलाल के दिमाग़ में शब्द अटक गया।

10.

बिल्ली परेशान-सी वराण्डे में टहल रही थी। उसका चेहरा बहुत गम्भीर था। बच्चे खामोश एक कोने में बैठे थे। खाना उन्होंने थोड़ा खाया और थोड़ा बिखराया था।

यूँ तो बिल्ली के चारों बच्चे नटखट थे और हमेशा शरारत करते हुए डाँट खाते थे। लेकिन उनमें एक कुछ ज़्यादा ही चंट था, जिसे काबू करने में बिल्ली को खासी मशक्कत करनी पड़ती थी। असल में वह सोचता बहुत था। उसके पास ढेर सारे सवाल होते थे, जिनके जवाब देने में बिल्ली को ख़ूब माथापच्ची करनी पड़ती थी। लेकिन उस दिन तो हद हो गयी। उसने बिल्ली को धर्म संकट में डाल दिया। जब सब बच्चे खाने के बाद ऊधम मचा रहे थे, तब उसने बिल्ली पर एकाएक सवाल दाग दिया, 'माँ, हम बच्चों का बाप कौन है?'

बिल्ली पर जैसे बिजली गिरी। उसे ऐसा लगा, जैसे दुनिया ठहर गयी। बिल्लियों की प्रजाति में किस बच्चे के दिमाग़ में कभी यह सवाल आया था? वह सोचने लगी...। साधारण बच्चे ऐसा सवाल नहीं करते। ख़ुद उसने कभी नहीं सोचा था! न अपने बाप के बारे में और न इन बच्चों के!

बिल्लियों में तो आज तक माँएँ ही बच्चों को पालती आयी थीं। उनसे ही बच्चों की पहचान होती थी।

बाप का सवाल...!!

बच्चे समझ गये कि आज कोई साधारण बात नहीं हुई। उनके भाई ने बहुत ही गम्भीर सवाल कर दिया है, जिससे माँ परेशान हो गयी है। वे सब खामोश बैठे माँ की प्रतिक्रिया का इन्तज़ार कर रहे थे। बिल्ली टहलते-टहलते जब थक गयी तो अचानक जैसे उसे भूली-सी बात याद आ गयी। वह रुकी और बोली, 'आओ, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाती हूँ। मार्जर उपनिषद् की कहानी...।'

'माँ, ये उपनिषद् क्या होता है?' वही बच्चा बोला।

बिल्ली ने गहरे स्नेहपूर्ण नेत्रों से उसकी जिज्ञासा को सराहा और बोली, 'नजदीक बैठकर ज्ञान की प्राप्ति करना। हम गुरु से ज्ञान पाते हैं, इसलिए गुरु के पास बैठ कर मिलने वाले ज्ञान को उपनिषद् कहा गया है। हमेशा खयाल रखना, बच्चे की पहली गुरु माँ होती है...'

'म्याऊँ...म्याऊँ...म्याऊँ...म्याऊँ...' बच्चों ने एक स्वर में सहमति दी तो बिल्ली की आँखें स्नेह से भीग आईं।

'माँ, कहानी सुनाओ ना...'

'सुनो... कई हज़ार साल पुरानी बात है। इसके जैसा ही एक नटखट, जिज्ञासु और बातूनी बच्चा बिल्लियों के समूह को छोड़कर मनुष्यों के समूह में चला गया। बिल्लियाँ डर गईं कि उन्होंने उसे खो दिया। मनुष्य और बिल्ली के रिश्ते तब आज की तरह नहीं थे। मनुष्य भी तब इतना विकसित नहीं था और अपनी प्राथमिक भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाले उपाय ढूँढ़ने में लगा हुआ था। हालाँकि तब भी कुछ लोग थे, जो तत्व ज्ञान के गूढ़ सवालों के जवाब तलाश रहे थे। बिल्ली का बच्चा ऐसे ही एक ऋषि के आश्रम में पहुँच कर उनकी बातें सुनता रहता था। धीरे-धीरे उसके मन में तत्व ज्ञान को पाने की प्यास पैदा हो

गयी। इसलिए वह ऋषि के सामने उपस्थित हुआ और अपनी जिज्ञासाएँ उनके आगे रखीं। ऋषि उसे अपना शिष्य बनाने को तैयार हो गये, लेकिन पहले उसके पिता का नाम और गोत्र जानना चाहा।

वह बच्चा लौट कर अपनी माँ के पास आया तो सब बिल्लियाँ बहुत खुश हुर्इं क्योंकि उसकी उम्मीदें खो चुकी थीं। सबने उसे ख़ूब प्यार किया, लेकिन तभी उसने माँ से कहा कि वह वापस जाने के लिए आया है। उसे तत्व ज्ञान पाना है... सत्य का साक्षात्कार करना है...। सारी बिल्लियाँ हतप्रभ रह गर्इं। ऐसी बातें आज तक किसी मार्जर ने नहीं की थीं। बूढ़ी-बुज़ुर्ग बिल्लियों ने उसे समझाया कि ये बातें हमारे लिए नहीं हैं। मनुष्यों को ही यह सब सुहाता है। लेकिन वह जिद पर अड़ा रहा। अन्तत: माँ ने दिल पर पत्थर रख कर अपने कलेजे के टुकड़े को इजाजत दे दी। तब उसने सवाल किया, ‘हे पूजनीय माँ, मेरा पिता कौन है और मेरा गोत्र क्या है? इस प्रश्न का उत्तर मिले बिना गुरु मुझे ज्ञान नहीं देंगे...।’

माँ ने शान्त स्वर में कहा, ‘पुत्र, तेरा पिता कौन है और तू किस गोत्र का है, इस प्रश्न का उत्तर मेरे पास नहीं है। हम बिल्लियों में जैसी परम्परा है कि हम युवावस्था को प्राप्त करते ही अपने परिवार से स्वतन्त्र हो जाती हैं और आत्मनिर्भर, स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करती हैं, वही मैंने किया। मैंने अपने मार्जर धर्म के अनुसार अपने ऋतुकाल में जीवन में आये अतिथियों, आगन्तुकों और आत्मीयों को पूरे हृदय से अंगीकार किया। इस अवस्था में मैंने तुझे किससे प्राप्त किया, यह मैं नहीं बता सकती। तू उस ऋषि को यही जवाब देना। वे अवश्य प्रसन्न होंगे।’

बिल्ली के बच्चे ने लौट कर अपनी माँ की बात ज्यों की त्यों ऋषि से कह दी। उस वक़्त ऋषि पत्नी भी वहीं मौजूद थीं। बिल्ली के बच्चे की बात सुन कर ऋषि पत्नी का हृदय भर आया और उन्होंने उसे उठा कर सीने से लगा लिया। ऋषि भी बिल्ली के बच्चे के सत्य भाषण से पुलकित और अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने उसके सिर पर करुणा से हाथ फेरा और उसे ‘सत्यबोल’ नाम दिया। फिर उन्होंने अपने कमण्डल का जल हाथ में लिया और आँखें बन्द कर के मन्त्र बुदबुदाए। कुछ पल बाद उन्होंने जल आकाश में उछाल दिया और घोषणा की, ‘आज के बाद बिल्लियाँ जंगली नहीं रहेंगी और उन्हें मनुष्य अपने घर में स्थान देंगे। वे मनुष्य की पालतू होंगी, वे उनके घरों में रहेंगी और वहाँ भोजन प्राप्त करेंगी।’ फिर उन्होंने अपनी पत्नी पर नज़र डाली, जिसकी छाती पर अपने नन्हे-नन्हे पंजों को गड़ाता हुआ वह बिल्ली का बच्चा चढ़ने का प्रयास कर रहा था, जिससे होने वाली गुदगुदी से ऋषि-प्रिया अलौकिक हँसी हँस रही थी। प्रिया को ऐसी निश्छल हँसी हँसते देख कर ऋषि का हृदय कमल की तरह खिल गया और उन्होंने अपनी घोषणा में आगे कहा, ‘आज से संसार में स्त्रियों को बिल्लियाँ विशेष प्रिय होंगी।’

...और उस दिन के बाद से बिल्लियाँ मनुष्यों के साथ उनके समाज में, घरों में रहती हैं। स्त्रियों को उनसे ख़ास लगाव होता है।

कहानी खत्म करने के बाद बिल्ली ने अपने बच्चों को देखा। कहानी सुनते-सुनते सब किसी और ही दुनिया में खो गये थे। बिल्ली ने एक-एक कर सबके सिर पर हाथ फेरा और बोली, ‘तुम सब मेरे ‘सत्यबोल’ हो। जब भी कोई पूछे, तो यही नाम बताना। ...चलो अब आँखें बन्द करो और सो जाओ, सुबह स्कूल जाना है।’

बच्चे अपलक माॅ को देखते रहे तो वह फिर बोली, ‘चलो ऑंखें बन्द करो...।’

तब एक बोला, ‘माँ, इस लेखक के कमरे की बत्ती जल रही है और खिड़की से रोशनी हमारे बिस्तर तक आ रही है। ऐसे में नींद कैसे आएगी?’

माँ बोली, ‘यह तो अभी आधी रात तक लिखता रहेगा। तब बत्ती बुझायेगा। तुम सब आँखें बन्द कर लो, अँधेरा अपने आप हो जायेगा।’

बच्चों ने आँखें बन्द कर लीं। अँधेरा हो गया। लेकिन किसी के घर में टेलीविजन का वॉल्यूम तेज़ था और आवाज़ कानों में पड़ रही थी...। प्रवचन चल रहा था...

अँधेरा... एक भयानक खयाल भी है!

हकीकत की हर तस्वीर आज अँधेरे से भरी है। ऐसे में ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त परिजनों और प्रियजनों के साथ बिताएँ। अपनी आत्मा के उजाले में झाँकें और सुकून की तलाश करें। ईश्वर में विश्वास रखें। उसे हर व्यक्ति की ख़बर है। पैसा सब कुछ नहीं है। इस बात को परखने और समझने का इससे बेहतरीन मौका दूसरा नहीं हो सकता। अपनों का सहारा कठिन वक़्त में सबसे ज़रूरी है।

चैनल बदल गया...। सनसनीखेज अन्दाज़ में एक रिपोर्टर की आवाज़ आने लगी...

कॉल सेंटर की नौकरी से हाथ धो चुके दो नौजवान भाइयों ने आज एक राह चलती औरत को लूट लिया!

इन्दिरा जलोटा ऑटो में बैठ कर सुबह-सुबह मुलुँड स्टेशन जा रही थी कि तभी दोनों भाई मोटरबाइक पर सवार होकर आये और पर्स छीन कर रफ़्तार से निकल गये। पर्स में चार सौ रुपये और मोबाइल फ़ोन था। लेकिन अपराध की दुनिया में ये भाई नौसिखिए थे। इन्दिरा जलोटा के मोबाइल फ़ोन के सिगनल ट्रेस करते हुए पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। कुछ ही घण्टों में दोनों सलाखों के पीछे थे।

आइए जानते हैं पुलिस ने क्या बताया...

दोनों हाई-फाई लाइफस्टाल मेंटेन करते थे, पार्टियाँ-पब-रेस्तरां-गर्लफ्रेंड्स...। लेकिन नौकरी छूट जाने के बाद उनका हाथ तंग हो गया। खर्चे नहीं निकल पा रहे थे, इसलिए उन्होंने ये रास्ता अख्तियार किया। वे सुबह जल्दी घर से निकले थे। अपने माँ-बाप से यह कह कर कि नौकरी ढूँढ़ने जा रहे हैं।

...तो देखा आपने!

नौकरियाँ कहीं नहीं हैं। भर्तियाँ बन्द हैं। मगर अपराध की दुनिया के रास्ते खुले हैं। जिसकी रंग-बिरंगी, झिलमिल स्वप्निल दुनिया की मृगमरिचिका आसानी से आकर्षित कर लेती है। यह दुनिया इच्छा करते ही जादुई ढंग से आपको ‘लिफ़्ट’ करती है। लेकिन इन युवकों ने जैसे ही इन्दिरा जलोटा का पर्स ‘लिफ़्ट’ किया, वे अँधेरी खाई में गिर पड़े! जुर्म की दुनिया की हकीकत बिल्कुल अलग है।

आप कहीं मत जाइए। हम अभी हाज़िर होंगे... बस एक छोटे-से ब्रेक के बाद। दो भाइयों के बाद आपको बतायेंगे, कैसे दो बहनों ने रिसेशन में अपने खर्चों को पूरा करने के लिए रईसजादों को बनाया अपने हुस्न का शिकार। पहले उनसे करती थीं दोस्ती, फिर अश्लील हरकत के आरोप लगा कर ऐंठती थीं पैसे...!

देखते रहिए, एक और जुर्म की सनसनी। हम यूँ गये और यूँ आये...।

दलाल ने उम्मीद नहीं छोड़ी। उसने यूरोलॉजिस्ट की रिपोर्ट की चिन्दियाँ कर दी। साइंस सब कुछ नहीं है। डॉक्टर भगवान नहीं है। अगर भगवान है भी तो इस मामले में उसके करने से क्या होगा? करना तो मुझे ही है! मुश्किल क्या है? कोई औरत मुझसे नाखुश हुई हो, आज तक ऐसा नहीं हुआ। मैं ख़ुद कभी अपने आप से मायूस नहीं हुआ! फिर...? मैंने ही नहीं सोचा इस बारे में...। सोचने से क्या नहीं होता? इंसान जो ठान लेता है, वह होकर ही रहता है।

दलाल ने ठान कर पत्नी को प्यार किया। ख़ूब प्यार...। लेकिन कुछ नतीजा नहीं निकला। दलाल की उदासी बढ़ी, खीझ बढ़ी। गुस्सा बढ़ता गया।

उसे अपने आप पर सन्देह हुआ... और बीवी पर भी!

फिर दलाल का मन ख़राब हो गया। बस, अब और नहीं।

...और एक दिन वह बीवी से बिना कुछ कहे मड आइलैंड चला गया। नेपालन को साथ लेकर।

उसने तय किया कि इसका सौदा नहीं करेगा। किसी कीमत पर नहीं। इसे अपने पास रखेगा। इससे बच्चा पैदा करेगा। इसे नहीं जाने देगा। ...लेकिन नयनानन्द को क्या जवाब देगा? उसके फ़ोन लगातार आ रहे थे। वह 'लौंड़िया' के लिए हर दिन नये लोग भेज रहा था। वह दलाल पर बरस रहा था कि आखिर वह कर क्या रहा है? दिन बीतने के साथ नयनानन्द राजी हो गया था कि इस मन्दी में नेपालन की जो भी कीमत मिले, उसे रख लेने में नुकसान नहीं। हफ़्ते भर में सौदा पट जाना चाहिए। नयनानन्द ने दलाल को सख़्त आवाज़ में निर्देश दिया।

दलाल ने मोबाइल स्विच ऑफ कर दिया।

वह किसी कीमत पर ऐसा नहीं होने देगा। वह नयनानन्द से साफ़ कहना चाहता था। ...लेकिन क्या कहे? नेपालन में उसे मेघना मोरे दिखती है? साइंस के हिसाब से उसके शुक्राणु गतिहीन हैं? उसे लगने लगा है कि उसकी बीवी में कमी है, इसलिए वह नेपालन से बच्चा पैदा करना चाहता है? नहीं, दरअसल वह सिर्फ़ यकीन करना चाहता है कि बच्चा पैदा कर सकता है। तो क्या नयनानन्द को उसे नेपालन से बच्चा पैदा करने तक की मोहलत देनी चाहिए? इसके बाद वह नेपालन का सौदा करेगा? यदि ऐसा हुआ तो बच्चे का क्या होगा? उसे माँ का प्यार कौन देगा? दलाल की बीवी...? वह क्यों किसी दूसरी औरत से पैदा हुए बच्चे को पालेगी? भले ही वह दलाल के वीर्य से पैदा हुआ है। फिर वह ख़ुद भी तो माँ बनना चाहती है! डॉक्टर की सारी रिपोर्ट उसने सँभाल कर रखी है कि उसमें कोई कमी नहीं है...।

दलाल का मोबाइल स्विच ऑफ आ रहा था। उसकी बीवी परेशान थी।

हफ़्ते भर से ऊपर हो गया। कहाँ है...? इससे पहले वह फ़ोन भले ही नहीं उठाता था, पर खाली होने पर पलट कर फ़ोन ज़रूर करता था। उसका डर बढ़ गया। कहीं रण्डी से उसे 'प्यार' तो नहीं हो गया! खेलने-खाने की बात अलग है।

अचानक उसके मोबाइल पर अनजान नम्बरों से कॉल आने लगे। अश्लील कॉल...! जाने कैसे लोगों को पता चल गया कि वह अकेली है...। गन्दी बातें... गन्दे लोग...। वह गालियाँ देती। उन लोगों को। अपने आप को। अपने अतीत को। अपने आज को। उसने कुछ भी नहीं चुना था। वह अब भी कुछ चुनने की स्थिति में नहीं है। वह सोचती तो डर बढ़ जाता। नया नम्बर देख कर वह फ़ोन नहीं उठाती। वह जानती थी कि दूसरी तरफ़ से अश्लील आवाज़ आयेगी, भद्दा इशारा होगा...। फिर घण्टी बजती। वह फ़ोन नहीं उठाना चाहती, पर सोचती... अगर नये नम्बर से उसने फ़ोन किया तो? लेकिन ऐसा नहीं होता। उसका कहीं पता नहीं था। एक दिन जब उसने फ़ोन उठाया तो दूसरी तरफ़ नयनानन्द था...! उसने सीधे पूछा, 'कहाँ है भड़वा...'

दलाल की बीवी ने पलट कर गाली दी, तो वह हँसा। उसकी हँसी अश्लील थी।

उसने और गालियाँ दीं। वह और हँसा।

उसकी हँसी गालियों से ज़्यादा गन्दी थी।

वह रो पड़ी। दूर से आ रही उस हँसी ने यह देख लिया। हँसी और गन्दी हो गयी।

उसने फ़ोन काट दिया। घण्टी बजती रही। उसने फ़ोन नहीं उठाया। वह बिस्तर पर पड़ी रोती रही।

उसे लगा आज फिर नयनानन्द की आँखों के आगे नंगी हो गयी।

कई बार वह उसके नयनों का सुख बनी थी। उस रात भी वह यही चाहता था, जब पूरी सोसायटी में सन्नाटा पसरा था कि दलाल के फ़्लैट से चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें आने लगी थीं। सबसे ऊँची आवाज़ दलाल की बीवी की थी...।

नयनानन्द कुछ नहीं कर पाता था। वह बस नयनों से आनन्द लेता था, करते दूसरे थे।

11.

दलाल को मड आइलैंड से भागना पड़ा।

सम्राट लॉज पर पुलिस ने छापा मार दिया था। मँगा ने सही समय पर ख़बर नहीं दी होती तो वह नेपालन समेत धरा जाता। मँगा ने लॉज ठेके पर ले रखा था और वहाँ कॉलगर्ल रैकेट चलाता था। उसके पास न ग्राहकों की कमी थी और न ही लड़कियों की। ग्राहक आकर लड़की की माँग करता तो वह उसकी पसन्द और रुचि के अनुरूप तुरन्त इन्तजाम कर देता। वह कमरे के किराये समेत ग्राहक से दलाली और लड़की से अपना कमीशन वसूल करता। यदि कोई जोड़ा ख़ुद आकर लॉज में कुछ घण्टे बिताना चाहता तो भी उसे ऐतराज नहीं होता। मँगा जानता था कि धन्धे को चलाने के लिए सिस्टम में कहाँ-कहाँ, किस-किस को हनी-मनी का भोग लगाना है। वह भोग लगाता था। अत: लॉज सुरक्षित था। उस पर बात यह भी थी कि लॉज का मालिक जाना-माना. फिल्म डायरेक्टर सम्राट अरोड़ा था। उसकी पहचान और पहुँच ऊपर तक थी। सम्राट अपनी. फिल्मों में काम करने की इच्छुक युवतियों को 'ऑडिशन' के लिए यहीं बुलाता और दो-तीन दिन के लिए कमरे में बन्द हो जाता। तब मँगा उसकी सेवा में हाजिर रहता और हर हुक्म का पालन करता। पाँच साल से ज़्यादा हो गये, मँगा ने सम्राट को शिकायत का मौका नहीं दिया। समय से पैसा बढ़ाया। नई लड़की रैकेट में आयी तो फ़ोन करके सम्राट को ख़बर दी। सबसे ख़ास कि पुलिस से कभी पँगा नहीं लिया।. फिल्मी स्टाइल में सम्राट कहता था, 'बोटी के लिए कुत्ते को कभी भौंकने मत दो, वो तुम्हारे आगे हमेशा दुम हिलाता रहेगा...।'

लेकिन उस दिन सुबह-सुबह सम्राट के फ़ोन ने मँगा को हिला दिया...।

मँगा सफाई देता रहा कि धन्धा मन्दा होने पर भी पुलिस का हफ़्ता बढ़ाया है भाई... फिर लोचा कैसा...?

लोचा था... और आदेश ऊपर से चले थे। सम्राट लॉज में. फिल्म प्रोड्यूसर मिलन कपूर की नाबालिग बेटी का रेप हुआ था...! मामला हाईप्रोफाइल था।

पुलिस लॉज पर छापा मारने के लिए निकल चुकी थी।

दलाल जिस हाल में था, उसी में भागा। नेपालन आधी नींद में थी। वह उसे लगभग घसीटते हुए लॉज से बाहर लाया। तब वह जागी और बदन के कपड़ों को ठीक किया। उसका हाथ पकड़े तेज़ कदमों से चलता दलाल वर्सोवा जाने वाली फैरी के नाके तक पहुँचा। मछुआरों की भीड़ और मछलियों की बू सिर घुमा रही थी। हर तरफ़ कीचड़ था। बिना धक्का-मुक्की और नाक को दबाए फैरी में घुसा नहीं जा सकता था। तभी नेपालन ने झटक कर हाथ छुड़ाया और भागी। दलाल ने लपक कर उसे पकड़ा और फिर खींचा। उससे छूटने का संघर्ष करती हुई नेपालन ने कहा कि वह नाव में नहीं बैठेगी। उसे नदी, तालाब, नहर, झरने और समुन्दर से डर लगता है। बहते पानी और अथाह जलराशि से डर लगता है। पानी की कलकल में दिल डूबने लगता है। उसने फैरी से विपरीत दिशा में मुँह घुमा लिया।

दलाल चिल्लाया... पागल है? कोई पानी से भी डरता है?

नेपालन ने पूरी ताकत लगा दी तो दलाल ने उसका हाथ तोड़ देने की हद तक मरोड़ दिया और फैरी की तरफ़ घसीटने लगा। दर्द से कराहती नेपालन दो-चार कदम बढ़ी और दलाल ने उसे पसीना-पसीना होते महसूस किया। वह थरथराने लगी। उसके गले से अजीब आवाज़ निकलने लगी। उसकी आँखों का रंग बदलने लगा। कुछ ही पल में उसने उल्टी कर दी और धम्म से जमीन पर गिर पड़ी। दलाल लड़खड़ा कर सँभला और देखता रह गया। कुछ लोग भी ठहर कर उन्हें देखने लगे। नेपालन जैसे होश खो बैठी थी। दलाल ने नाके से एक बोलत पानी लेकर उसका मुँह साफ़ कराया। उसे सामने एक टैक्सी खड़ी दिखी। उसने नेपालन को उठाकर टैक्सी में डाला और बोला, 'वर्सोवा...'

नेपालन को लेकर दलाल अपने एक दोस्त के फ़्लैट पर आया। कॉलबेल बजाई तो एक लड़के ने दरवाज़ा कुछ इंच खोला और एक आँख से झाँका। चेहरा जाना-पहचाना देख कर वह मुस्कराया और दरवाज़ा पूरा खोल दिया। दलाल अन्दर आया और बोला, 'ऋतु है...?'

'अन्दर हैं भैया... शूटिंग चल रही है...'

नेपालन भी पीछे-पीछे आ चुकी थी। लड़के ने दरवाज़े की चिटकनी चढ़ाई और चला गया। उसकी आवाज़ आई, 'भैया पानी लेंगे...?'

उसे जवाब नहीं मिला।

दलाल ने टीवी ऑन किया...। खबरिया रिपोर्टर चीख रहे थे...।

मुम्बई में खुल्ला घूम रहा है सीरियल रेपिस्ट...। लड़कियों और औरतों की आबरू को है ख़तरा...।

दस दिन में कर चुका है तीन लड़कियों से बलात्कार...। पुलिस अब तक है उस दरिन्दे को ढूँढ़ पाने में नाकाम..।

फिल्म प्रोड्यूसर मिलन कपूर की नाबालिग बेटी का बलात्कार सुर्खियों में छाया हुआ था। चैनलों के हाथ बिकाऊ स्टोरी लग गयी थी और सब इसमें तड़का लगाकर बेभाव बेच रहे थे।

दलाल के मुँह से एक भद्दी गाली निकली और टीवी ऑफ हो गया।

उसने उस कमरे में झाँका, जिसमें से रोशनी और आवाज़ें आ रही थीं। फिर इशारे से नेपालन को बुलाया। अन्दर झाँकते ही नेपालन को जैसे करंट लगा। उसके चेहरे का रंग उड़ गया। वह मुँह दबा कर लौट पड़ी। दलाल को हँसी आ गयी। वह नेपालन के पीछे आया और बोला, 'मेरी बात नहीं मानेगी तो तुझे भी यही करना पड़ेगा... समझ ले।' नेपालन ने गहरी आँखों से उसे देखा। उसके चेहरे पर बेबसी और आश्चर्य था। दलाल ने उसके कंधे पर हाथ धर कर जैसे अपने होने का अहसास कराया और कमरे के अन्दर चला गया।

ब्लू फिल्म की शूटिंग हो रही थी।

एक विदेशी गोरा और एक गहरे ताम्बई रंग वाली देसी युवती नंग-धड़ंग बिस्तर पर पड़े हाँफ रहे थे। दलाल को देख कर गोरा तो वैसे ही पड़ा रहा, युवती दो-चार पल को सिमटी-सकुचाई। फिर सामान्य हो गयी। दलाल का दोस्त कैमरामैन से बात कर रहा था। दलाल ने उसे हाथ के इशारे से 'हैलो' कहा और एक कोने में खड़ा हो गया। जिस लड़के ने दरवाज़ा खोला था, वह ट्रे में सजा कर सबके लिए चाय ले आया। सब चाय पीने लगे।

दलाल का दोस्त उसके पास आया और दोनों में खुसुर-फुसुर होने लगीं। कुछेक मिनट के बाद दोनों कमरे से निकले और नेपालन के पास आये। वह कुर्सी पर भावहीन बैठी थी। दलाल ने उसे अपने दोस्त से मिलवाया, 'ऋतु... मेरा फ्रेंड। यही बनाता है ये फिल्में। इनमें दूर-दूर से आकर लड़कियाँ काम करती हैं। इसकी फिल्में विदेश में बिकती हैं। इण्डिया में नहीं बेचता ये...।'

'मेरी फिल्म में काम करेगी...? ख़ूब सारा पैसा दूँगा...' ऋतु ने दलाल का हाथ दबाया और नेपालन से पूछा।

वह सहम गयी। उसका चेहरा देख कर दोनों खिलखिला कर हँस पड़े। नेपालन के चेहरे की रंगत उड़ गयी। ऋतु बोला, 'सही आइटम है बड़ी... तू मान जाये तो हम दोनों की बन आएगी। इसको गोरे के साथ लगा देते हैं, एकदम मस्त फिल्म बनेगी... हाँ बोल दे।'

दलाल मुस्कराया और सिर हिला कर इंकार किया। ऋतु बोला, 'तेरी मर्जी, तेरा माल...।' फिर उसने कमरे से निकल कर बाथरूम में जा रहे गोरे की तरफ़ इशारा किया और कहा, 'ये साला दो दिन और रहेगा... इसका टिकट करा दिया है मैंने। सोच रहा हूँ, एकाध फिल्म और बना डालूँ इसके साथ।'

गोरे का नाम था, रेनातो मिलानी। वह इटली का रहने वाला था। एक पुलिसवाले के साथ जब वह ऋतु के फ़्लैट पर आया था तब उसे सिर्फ़ इतना मालूम था कि यह आदमी उसके देश लौटने के टिकट का इन्तजाम कर देगा। अपने बुरे वक़्त में रेनातो को इससे ज़्यादा की दरकार भी नहीं थी। उसे लगा था कि भगवान ने उसकी सुनी ही नहीं, बल्कि साक्षात प्रकट हो गये हैं। ऋतु ने उसे सिर से पाँव तक देखा और अपने मोबाइल पर नम्बर मिलाया। बात की। बात खत्म होने के बाद उसे फिर देखा और बोला, 'आर यू रेडी टू वर्क इन माई फिल्म्स...?'

रेनातो उसका मुँह देखता रहा।

उसके साथ आया पुलिसवाला बोला, 'इसको अंग्रेजी नइ आता... साब बोला कि तुम अपने हिसाब से इसको सब समझा देना। ये राजी है...' फिर वह रेनातो की तरफ़ मुड़ा और बोला, 'बोल, यस...।' रेनातो पुलिसवाले को देख रहा था। पुलिसवाला उसे सिर के इशारे से 'यस' बोलने को कह रहा था।

रेनातो ने भी सिर हिलाया, 'यस... यस...।'

ऋतु का माथा ठनका। इंस्पेक्टर विजै ने ये किसे भेज दिया...?

रेनातो समझ गया कि बात गड़बड़ा रही है, तुरन्त बोला, 'आई... इटैलियन। लिटिल इंगलिश... आइ नो...।'

ऋतु ने गौर से उसका चेहरा देखा।

वह समझ गया कि इसे समझाने के लिए बहुत पापड़ बेलने पड़ेंगे। लेकिन रेनातो उसकी समझ से कहीं ज़्यादा समझदार निकला। भूख ने उसे बहुत समझदार बना दिया था।

चर्चगेट रेलवे स्टेशन के बाहर वह दो दिन तक भीख माँगता रहा... और अपने हाल पर रोता रहा। किसी को उस पर दया नहीं आयी। लोग उसे आश्चर्य से देखते और निकल जाते थे। कई लोगों को लगता कि यह फिरंगी भिखारी किसी टीवी चैनल के कॉमेडी शो का

हिस्सा है और कहीं कैमरा छुपा कर इसे शूट किया जा रहा होगा। यदि वे मदद करेंगे, तो 'बकरा', 'मुर्गा' या 'पोपट' जैसा कुछ बन जायेंगे! मटमैली और धूल से सनी टी-शर्ट, कई जगह से फटी जींस और खाली झोला लटकाए वह यहाँ-वहाँ भटकता था। लोगों को इशारों में समझाने की कोशिश करता, लेकिन किसी के पास वक़्त नहीं था। आखिरकार एक रात वह स्टेशन के नजदीक फुटपाथ पर सोते हुए पेट्रोलिंग करती पुलिस की नज़र में आ गया। सब इंस्पेक्टर चह्वाण ने उसे एक डण्डा जमाकर जगाया और हड़का कर सवाल दागे। रेनातो का मन रोने का हुआ। तब इंस्पेक्टर विजै आया तो उसने टूटे-फूटे लहजे में कहा, 'आई... इटैलियन। लिटिल इंगलिश... आइ नो...। माई नेम... रेनातो मिलानी... एज... थर्टी थ्री...'

फिर जैसे-तैसे अटकती-भटकती अंग्रेजी में जो बताया, उसका कुल जमा मतलब यह था कि वह पन्द्रह दिन के लिए हिन्दुस्तान घूमने आया था। जब वह जयपुर से दिल्ली और गोवा होता हुआ मुम्बई पहुँचा, तो कैब ड्राइवर उसका बैग लेकर चम्पत हो गया। बैग में उसके कपड़े, एयर टिकट, मोबाइल फ़ोन, दस हज़ार रुपये और क्रेडिट कार्ड्स थे। पासपोर्ट उसकी जेब में था, तो बचा रह गया। उसने यह भी बताया कि पिछली दो रातों में इलाके के भिखारियों ने उसे पीटा और वहाँ से चले जाने को कहा। लेकिन वह कहाँ जा सकता है, उसके पास न पैसे हैं और न ही क्रेडिट कार्ड्स।

पुलिस उसे अपने साथ थाने ले आयी।

इंस्पैक्टर विजै ने उसकी उलझी-बिखरी बातें ध्यान से सुनीं और उसी अन्दाज़ की अंग्रेजी में समझाया कि यदि उसका मामला दर्ज किया गया तो वह इण्डिया में लटक जायेगा। बात अदालत तक जायेगी। इटैलियन काउंसलेट भी पार्टी बनेगा। फिर सब निपटते-निपटते वक़्त लग जायेगा। सबसे अच्छी बात यह है कि उसके पास पासपोर्ट है। वह चाहे तो पैसे का इन्तजाम हो सकता है। हवाई जहाज के टिकट का इन्तजाम हो सकता है। हफ़्ते भर में वह अपने घर लौट सकता है। जब रेनातो राजी हो गया तो इंस्पैक्टर विजै ने सब इंस्पेक्टर चह्वाण के साथ उसे ऋतु के फ़्लैट पर भेज दिया।

रेनातो की शुरुआती झिझक जल्दी ही खत्म हो गयी। पूरी समझदारी से उसने हफ़्ते भर में अपने लिए हवाई जहाज के टिकट और कुछ पैसों का इन्तजाम कर लिया। 'कामासूत्रा कंट्री' में यह अनोखा 'एड़वेंचर' था। वह बेहद रोमांचित था। उसे बस एक ही डर था कि उसकी गर्लफ्रेंड को इसका पता न चल जाये। यह खयाल आते ही उसके हाथ-पाँव फूल जाते थे। शूटिंग करते करते वह 'बेकार' हो जाता। तब उसे तैयार करने के लिए इंजेक्शन देने पड़ते। दवाएँ खिलानी पड़तीं। इनका भी उस पर असर नहीं होता। इतनी घबराहट उसे होती। ऋतु उसे बार-बार विश्वास दिलाता कि उसकी फिल्में अमेरिकी बाज़ार में ही जायेंगी। यूरोप के नहीं। इण्डिया के नहीं। तब रेनातो ऋतु से पाँच मिनट का वक़्त माँगता, शान्त एकान्त में बैठने के लिए। ...और आश्चर्य कि जब अपने एकान्त से रेनातो लौटता, तो वह एक घबराया हुआ आशिक नहीं रह जाता और फिर रोके से भी नहीं रुकता...!! वह एक मदमस्त घोड़ा हो जाता, जो रफ़्तार से उड़ा जा रहा है। जिसे काबू कर पाना नामुमकिन है।

ऐसा क्या होता उन पाँच मिनटों में...?

ऋतु उससे जानना चाहता। रेनातो बस मुस्करा देता। ऋतु उससे बार-बार पूछता। वह बार-बार मुस्कराता। ऋतु ने अन्ततः पूछना बन्द कर दिया। हालाँकि ऋतु को इन्हीं पलों का इन्तज़ार रहता था। तब कमरे में लगे हुए गुप्त कैमरे भी ऑन हो जाते। रेनातो ने कैमरों को ऐसे दृश्य उपलब्ध कराए, जो पोर्न की दुनिया में दुर्लभ थे।

'कट...'

मदमस्त होने के बाद रेनातो को न तो ड़ायरेक्टर का निर्देश सुनाई पड़ता था और न जिस्म के नीचे दबी लड़की की कराहें और चीखें...! जब तक वह ठण्डा होता, लड़की के चेहरे पर ख़ौफ़ और आँखों में दर्द छलक रहा होता, त्वचा पर जगह-जगह गहरे लाल-हरे-बैंगनी निशान बन चुके होते और देह में कड़क रही बिजलियों से वह टूट रही होती। हालाँकि बाद में रेनातो को अफसोस होता। वह लड़की से माफी भी माँगता। लेकिन लड़की उसे माफ नहीं कर पाती। नफ़रत और आश्चर्य से उसे देखती, भविष्य में कभी किसी और के साथ 'ऐसा वहशीपन' न करने की हिदायत देती हुई विदा हो जाती...। रेनातो शर्मसार हो जाता। लेकिन ऋतु उसे शाबाशी देता। हौसलाअफजाई करता। फिर से तैयार करता। ऋतु ने उसे 'द नाइट ऑफ इटली' खिताब से नवाजा। रेनातो का यही 'निक नेम'. फिल्म के पर्दे पर भी उभरने वाला था।

आखिर दिन बीतते गये और रेनातो के जाने का वक़्त आ गया। ऋतु की जिज्ञासा अपनी जगह कायम थी। वह ख़ुद रेनातो को सान्ताक्रूज इंटरनेशनल एयरपोर्ट तक छोड़ने गया और आखिरी बार बहुत उम्मीद के साथ वही सवाल दोहराया...? रेनातो के होठों पर पुरानी मुस्कराहट फैली।

उसने बताया, एकान्त के उन पाँच मिनटों में वह कल्पना करता कि अपने देश का प्राइम मिनिस्टर बन गया है! सत्ता के गलियारों समेत सिनेमा, टेलीविजन, अख़बार, वित्त, बैंकिंग, बीमा से लेकर खेल की दुनिया तक उसका दबदबा है। बिल्डर, नेता, अधिकारी, प्रशासन और पुलिस से लेकर माफिया तक उसके आगे सिर झुका रहा है। ख़ूबसूरत कमसिन लड़कियाँ उसके इर्दगिर्द इकट्ठी होकर उसे तरह-तरह से रिझा रही हैं। वह हसीनाओं के बूब्स से लेकर बम तक मस्ती में दबा रहा है। वे भी शरारतन आहें भर रही हैं। बदले में वह महँगे उपहार दे रहा है। शानदार घड़ियाँ, चमकदार गहने, महँगी शराब, डिजाइनर लॉन्जरी, फैशनेबल कपड़े, फर्राटा कारें और अत्याधुनिक सुविधाओं, नर्म गद्देदार सोफों और नक्काशीदार पलँगों से सजे बंगले। हसीनाएँ उस पर मिटी जा रही हैं। अन्तहीन जश्न चल रहा है और वे उसके आलीशन महल में नाचती हु्इं एक-एक कर निर्वस्त्र हो रही हैं। वह उन्हें गोद में बैठा कर, उनके जिस्मों से खेल रहा है। उन्हें भोग रहा है। जैसे-जैसे वह उनसे सम्भोग करता, उसका चेहरा वैसे-वैसे दरियाई घोड़े के चेहरे में तब्दील होता जाता। उसकी मुस्कान चौड़ी होती चली जाती। उसकी शक्ति बढ़ती चली जाती। उसकी सम्पत्ति बढ़ती चली जाती। उसका प्रभाव बढ़ता चला जाता।

निरंकुश सत्ता, अकूत सम्पत्ति और अनन्त सम्भोग उसे असीमित ऊर्जा से भर देते!

गोरा भिखारी रेनातो मिलानी, इटली का प्राइम मिनिस्टर रेनातो मिलानी बन जाता...!

पता नहीं उसने सिर्फ़ ऋतु का मन रखने को ये बातें कही या यही हकीकत थी।

ऋतु ने बहुत गम्भीर चेहरे के साथ उसकी बातों को सुना और गर्मजोशी से गले लगा कर उसे विदा किया। लौट कर अपनी कार में बैठ उसके विमान के उड़ान भरने का इन्तज़ार करता रहा। विमान आसमान में नज़र आया तो ऋतु हाथ हिला कर देर तक उसे देखता रहा। फिर बुदबुदाया, ‘रेनातो... यू, द रेपिस्ट...!’

12.

‘गिरफ़्त में आया बलात्कारी!’

टीवी पर रिपोर्टर जोर से चीखा, ‘फिल्म प्रोड्यूसर मिलन कपूर की नाबालिग बेटी की अस्मत लूटने वाला पुलिस की हिरासत में है। मिलन कपूर के साथ पूरी फिल्म इण्डस्ट्री ने बलात्कारी को फाँसी की सजा देने की माँग की है। पुलिस का दावा है कि यही है सीरियल रेपिस्ट जिसने दस दिन में किए तीन बलात्कार। यही है जिससे था मुम्बई की लड़कियों को ख़तरा। इसकी पूरी कहानी हम आपको बतायेंगे। कहीं मत जाइए। लौटते हैं एक छोटे से ब्रेक के बाद।’

दलाल ने राहत की साँस ली।

मिलन कपूर की बेटी के बलात्कार के मामले में पुलिस ने जमीन-आसमान एक कर दिया था। हर उस आदमी तक वह पहुँच रही थी, जो कभी न कभी सम्राट लॉज में गया था। नए-पुराने सारे रजिस्टर जब्त करके पुलिस ने खंगाल डाले थे। जो नाम-ठिकाना मिला, उसी पर हाथ डाला। दलाल ऋतु के फ़्लैट पर ही था। उसका फ़ोन ऑफ था। टीवी ऑन था।

ब्रेक खत्म हो चुका था। रिपोर्टर फिर चीखा, ‘लड़कियों को फँसाने के लिए अपनाता था वह कई हथकंडे। पहले उनसे मिलकर उन्हें दिया करता था ख़ूबसूरत तोहफे। उनसे करता था दोस्ती। जान लेता था उनके राज। फिर करता था ब्लैकमेल।’

‘ऐसे ही फँसाया था उसने मंजरी कपूर को। जब लड़की ने किया इंकार तो उसने चली आख़िरी चाल। कहा कि वह जानता है मंजरी कपूर कब कब किस होटल में गयी, अपने दो बॉयफ्रेंड्स के साथ। वह बता देगा उसके माँ-बाप को।’

‘आखिरकार मंजरी कपूर ने डाल दिए हथियार और हो गयी उसके साथ जाने को तैयार। इसके बाद वह ले गया उसे सम्राट लॉज, जहाँ मजबूर किया उसे अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए।’

रिपोर्टर की साँसें फूल रही थीं, ‘यह शातिर पुलिस को चकमा देने के लिए बोलता रहा झूठ। उसने कहा कि मंजरी कपूर और उसके बीच है प्यार। सम्राट लॉज से पहले भी दोनों जा चुके हैं दूसरे होटलों में। दोनों ने सहमति से बनाए शारीरिक सम्बन्ध। जबकि मंजरी ने कहा, यह सफ़ेद झूठ है । पुलिस ने भी जब खंगाले फ़ोन रिकॉर्ड्स तो उसे नहीं मिला ऐसा कोई कॉल, जो उन्होंने किया हो एक-दूसरे को।’

दलाल ध्यान से सुन रहा था...।

‘शैतान का भी सिर शर्म से झुक जाये, ऐसी है इस दरिन्दे की करतूतें। कैसे हो जाती थीं लड़कियाँ इस दरिन्दे के आगे लाचार? कैसे इसने किये बाकी शिकार...? कहीं मत जाइए... मंजरी कपूर के बाद बाकी है दो और लड़कियों की दास्तान। जानने के लिए रहिए तैयार। हम हाजिर होते हैं बस एक छोटा-सा ब्रेक लेकर।’

दलाल ने टीवी का स्विच ऑफ कर दिया और गहरी साँस ली।

मँगा ने बलात्कारी को पहचान लिया। मिलन कपूर की बेटी और उससे पहले शिकार बनी दो लड़कियों ने भी उसकी शिनाख़्त की। उसने अपना नाम बताया, राजेंद्र कुमार। उम्र, तीस साल। लॉज में भी उसने इसी नाम से कमरा लिया था। मँगा ने कहा कि लॉज में ठहरने वालों के साथ अक्सर लड़कियाँ आती हैं। जो लड़की राजेंद्र कुमार के साथ थी, वह उसके साथ आराम से बात कर रही थी। अत: उसे कोई शक नहीं हुआ।

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार राजेंद्र कुमार पर लूट के भी मामले दर्ज थे और वह जमानत पर बाहर था। मलाड में उसने चेन स्नेचिंग की बीस से ज़्यादा घटनाओं को अंजाम दिया था। जिस दिन उसे गिरफ़्तार किया गया, वह अदालत में एक पेशी पर आया हुआ था। मंजरी कपूर के मामले की जाँच कर रहे क्राइम ब्राँच के अफसर शंकर शिन्दे और बालाजी भोंसले एक अपराधी को लेकर अदालत पहुँचे थे। वहाँ उनकी नज़र राजेंद्र कुमार के पैरों पर पड़ी। वह सैंडल पहने हुए था। जिन पर स्वास्तिक के चिह्न बने थे! उनका माथा ठनका। अमेरिका में स्वास्तिक वाले सैंडिल बनने की ख़बरें उन्होंने पढ़ी थी, जिन पर अच्छा खासा विवाद हुआ था। मंजरी कपूर और बाकी दो लड़कियों ने बलात्कारी के सैंडल पर यही निशान बताये थे। यह भी कहा था कि वह विदेशी लहजे वाली फर्राटेदार अंग्रेजी बोलता है।

इतना काफ़ी था। शिन्दे और भोंसले के इशारे पर राजेंद्र कुमार को तुरन्त हिरासत में ले लिया गया। बाकी का काम उसकी शिनाख़्त से हो गया। सख़्ती से हुई पूछताछ में उसने अपराध कुबूल कर लिया। उसने बताया कि वह चार महीने पहले ही अमेरिका से लौटा है। रिसेशन के कारण उसकी नौकरी चली गयी थी और कोई नया काम नहीं मिल रहा था। जब पैसे खत्म हो गये और नयी नौकरी की सम्भावना नहीं बची तो वह मुम्बई लौट आया। वह यहीं पैदा हुआ, पला-पढ़ा और बड़ा हुआ है। उसका बाप मलाड में रियल एस्टेट एजेंट है।

सुनते ही दलाल का माथा ठनका।

कमाल से पूछेगा। मलाड में ऐसा कोई रियल एस्टेट एजेंट नहीं, जिसकी कुँडली उसके पास न हो।

बिना कुँडली निदान पाएँ

सबको आजमाया बार बार, हमें आजमाएँ एक बार

पुरखों का मिला वरदान, हर समस्या का तुरन्त समाधान

खुला चैलेंज दो घण्टे में 101% निदान की गारण्टी

गृह क्लेश, किया कराया, जादू-टोना, सौतन/दुश्मन से छुटकारा, पति-पत्नी में अनबन से लेकर ए टू जेड समस्याएँ

*बाबा साबिरजी 987****789*

फीस : मात्र 101 रुपये

समय : सुबह 9.00 बजे से शाम 6.00 तक (रविवार को भी खुला)

912, एसवीटी एजेंसी, मलाड, मुम्बई-95

पंखे की हवा में सरसराता 'ख़बरदार' पत्रिका का पन्ना खुला। उसमें बाबा साबिरजी का विज्ञापन चमक उठा।

दलाल की बीवी को ऐसे आदमियों से सख़्त नफ़रत थी। ...और होती भी क्यों नहीं?

उसकी ज़िन्दगी के नर्क का दरवाज़ा भी तो ऐसे ही आदमी ने खोला था। जब वह सोचती तो अपने अतीत को आँखों के आगे तैरता हुआ पाती। उसे अकेले में डर लगता। अकेलेपन से नफ़रत होती। दलाल के बिन बताये चले जाने से उसे झटका लगा था। उसे बुरे बुरे सपने आने लगे। दिन तो बीत जाता था, लेकिन रात काटने दौड़ती थी। वह बाहर निकल जाना चाहती। पर कहाँ जाये...?

वह मन मार कर बन्द दरवाज़े में बैठी रहती। रोती हुई, कुढ़ती हुई, मरती हुई। घर में सन्नाटा पसरा रहता। वह सोफे पर पड़ी रहती। टीवी बिना आवाज़ के चलता रहता। ट्यूबलाइटें दिन-रात जलती रहतीं। जो जहाँ थी, वह चीज़ जाने कब से वहीं पड़ी थी। सन्नाटा भी जैसे अनन्त काल से पसरा था। हर चीज़ मुर्दा-सी हो गयी थी। दलाल की बीवी को अपने बारे में भी यही लगता था।

...और तभी पंखे की हवा में वह पन्ना खुला और सरसराया!

विज्ञापन में बाबा साबिरजी की तस्वीर आभा मण्डल में दमक रही थी। वह देखती रह गयी।

सब एक जैसे नहीं होते... अचानक उसके भीतर से आवाज़ आयी।

सबको आजमाया बार बार, हमें आजमाएँ एक बार

उसकी नज़र इस पंक्ति पर जम गयी...।

सच... एक और धोखा खा भी लिया तो क्या चला जायेगा? और खोने को अब है ही क्या...? फिर यह एक सौ एक रुपये ही तो लेगा! क्या पता, जिस रास्ते से नर्क का दरवाज़ा खुला, उसी रास्ते ज़िन्दगी सुधर जाये...! वह पता करायेगी दलाल का... नेपालन का...।

इस खयाल के साथ ही उसने मोबाइल उठाया और नम्बर मिलाने लगी...। उसकी अँगुलियाँ अचानक ठहर गर्इं। विज्ञापन की तस्वीर में बाबा साबिरजी के साथ कुछ लोग दिख रहे थे। कुछ सेविकाएँ भी थीं। उसने पत्रिका उठायी और गौर से तस्वीर को देखने लगी। एक चेहरा कुछ पहचाना-सा लग रहा था...!

उसने दिमाग़ पर जोर दिया। चेहरे के भाव बदले। आँखों में चमक पैदा हुई...

रूपा!!

रूपा ही है...?

सचमुच...?

पक्के तौर पर कह नहीं सकती थी, लेकिन एक धुँधला-सा चेहरा उसे रूपा जैसा ही लग रहा था।

जाने कब आँखों में आँसू छलक आये। हाय री किस्मत...!

रूपा अपनी किस्मत को ख़ूब कोसती थी।

बाप उसके पैदा होने के कुछ साल बाद ही मर गया था। माँ भी जब वह दस-बारह साल की थी, गुजर गयी। इसके बाद रूपा अपनी बड़ी बहन और जीजा के पास रहने इन्दरगढ़ आ गयी। उसका और कोई नहीं था। बड़ी बहन रूपा को ख़ूब प्यार से रखती। जीजा भी उसका खयाल रखता। रूपा से कुछ ही छोटे उनके दो बच्चे थे। तीन-चार साल तो ठीक गुज़र गये। फिर रूपा की बड़ी बहन की तबीयत अचानक ख़राब रहने लगी। कुछ ही महीनों में उसने खाट पकड़ ली। शहर जाकर अच्छे डॉक्टर की दवा लेने से भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बीवी की बीमारी ने जीजा को चिड़चिड़ा बना दिया। पहले वह कभी-कभार शराब पीता था, लेकिन फिर लगातार पीने लगा और घर से बाहर रहने लगा। कभी रात-रात भर, तो कभी दो-दो दिन बाहर रहता। घर की जिम्मेदारी रूपा पर आ पड़ी। वह घर भी देखती और बच्चों को भी। बड़ी बहन की सेवा में उसने कोई कमी नहीं छोड़ी।

रूपा धीरे-धीरे जवान हो रही थी, लेकिन जिम्मेदारियों ने उसे अचानक एक भरी-पूरी औरत बना दिया। साल भर में ही वह किसी गृहस्थिन की तरह दिखने लगी। उसे देख कर बड़ी बहन चिन्ता में और घुलने लगी कि कैसे होगा इसका ब्याह? वह ख़ुद तो बिस्तर पर पड़ी है और उसका पति शराब के नशे में यहाँ-वहाँ धुत पड़ा रहता है। उसने दो-एक बार पति को समझाया कि रूपा हमारी जिम्मेदारी है। शराब तुम्हें और इस घर को बर्बाद कर रही है। मैं जानती हूँ कि तुमसे मेरी यह हालत देखी नहीं जाती। लेकिन सोचो, भले ही मैं बीमार हूँ, भगवान की दया से तुम्हारी आँखों के आगे तो हूँ। हमारे दो बच्चे हैं। उनका क्या होगा? शराब किसकी सगी हुई है...? तुम्हें मेरी कसम, जो आगे कभी पी...।

यह सब सुन कर पति दो-तीन दिन शराब नहीं पीता, लेकिन फिर ठेके पर पहुँच जाता और रात भर या कुछ दिन के लिए लापता हो जाता।

ऐसे ही रात भर गायब रहने के बाद एक सुबह वह आया और बरामदे में बैठ गया। उस समय रूपा नहाई ही थी और अपने कपड़े सूखने डाल कर छत की सीढ़ियों से उतर रही थी। जीजा को देख कर वह रसोई में गयी और बिना कुछ कहे पानी का लोटा लाकर उसके नजदीक रख कर लौट गयी।

पानी पीने के लिए जीजा लोटा उठाने को हुआ कि तभी एक बूँद उसमें गिरी!

उसने सिर उठा कर देखा, तार पर कपड़े सूखने को पड़े थे।

तार छत की मुँड़ेर से हाथ भर आगे बँधा था। वह उसके नीचे बैठा था।

एक और बूँद लोटे में गिरी!

उसके चेहरे पर मुस्कान उभर आयी। तार पर टंगी रूपा की अंगिया से पानी की बूँदें गिर रही थीं। उसे लगा यह पानी नहीं, जवान हो रही रूपा के रूप का रस है! उसके बदन में सनसनी दौड़ गयी। उसने अंगिया पर नज़र गड़ा दी और देखने लगा कि अगली बूँद कब गिरती है? जैसे ही बूँद टपकी, उसने मेंढ़क की तरह छलाँग लगाई और लपलपाती ज़ुबान पर लपक ली। बूँद का खट-मिट्ठा-सा स्वाद उसकी ज़ुबान से होता हुआ तन-मन में तैर गया। हालाँकि तभी उसकी ठोकर से लोटा लुढ़का और पानी बरामदे में फैल गया। अन्दर से रूपा दौड़ती हुई निकली कि क्या हुआ...?

जीजा सँभला और बोला, ‘कुछ नहीं... तू जा और अपना काम कर।’

रूपा ने नाराज़गी भरी नज़रों से जीजा को देखा और बड़बड़ाती हुई चली गयी, 'जब सँभलते नहीं बनता तो पीते काहे हो...?'

उसका बड़बड़ाना जीजा को उस दिन अच्छा लगा। उसके कानों में रूपा की आवाज़ देर तक गूँजती रही। उसकी ज़ुबान पर बूँद का स्वाद बरकरार था। वह दो पल बरामदे में रुका और फिर जैसे आया था, वैसे ही वापस लौट गया।

बड़ी बहन रूपा पर थोड़ा बरसी कि आखिर क्या ज़रूरत थी अपने जीजा को जली-कटी सुनाने की? आखिर उससे पानी ही तो ढुला था। दिन भर पीता हुआ अब जाने कहाँ पड़ा रहेगा और कब लौट के आयेगा?

जीजा रात को लौटा। लेकिन उसने शराब नहीं पी रखी थी। उसने खाना खाया और चुपचाप सोने चला गया।

आधी रात को रूपा ने अपने बदन पर रेंगते हाथों को महसूस किया तो चीखने को हुई। लेकिन हाथों ने उसके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया। वह छटपटाती रही। उसके कानों में जो शब्द पड़े, उनका यही मतलब था कि वह खामोश रहे। इसमें उसकी भलाई है और उसकी बहन की भी। अगर उसका ब्याह हो भी गया तो क्या वह यही नहीं करेगी... किसी का चौका-बर्तन, बिस्तर और बच्चे! यहाँ किस बात की कमी है? वह चुप रहेगी तो उसे जितना है उससे ज़्यादा मिलेगा। जितनी अच्छी अब तक गुजरी, आगे उससे बेहतर बीतेगी। उसे और भी कुछ चाहिए तो कहे। सब हाजिर होगा। इस घर में अब हुकूमत किसकी है? वही रानी है। वही पटरानी है। आगे सोचना क्या?

उसने छूटने के लिए पूरा जोर लगाया। उसकी आँखों में अँगारे सुलग उठे।

तब शब्द सख़्त हो गये। मेरा खाती है, मुझे आँख दिखाती है। लात मार कर बाहर निकाल दूँगा। कोई एक टुकड़ा भी नहीं डालेगा तुझे। कुछ लेगा तो कुछ देगा। सबसे कह दूँगा कि इसका चरित्र ठीक नहीं। बहन के बिस्तर में पड़ते ही मुझ पर डोरे डालने लगी। बाहर के लोगों को छोड़, अपनी बहन को क्या जवाब देगी? चुपचाप पड़ी रह। सीधी उँगली घी निकलने दे। उँगली टेढ़ी करूँगा तो तू ही नुकसान में रहेगी।

रूपा बेसुध हो गयी।

सुबह रूपा भँवर में फँसी थी। रात को जो हुआ, वह चीख-चीख कर सबको बता देना चाहती थी। लेकिन यदि ऐसा किया तो उसकी बहन का क्या होगा? बच्चों का क्या होगा? ख़ुद उसका क्या होगा...? रात के शब्द उसके कानों में लगातार बज रहे थे।

अगर सबको पता चल गया कि उसके साथ क्या हुआ तो कौन ब्याह करेगा?

कहे तो किससे कहे...? और कहने से क्या फ़र्क पड़ जायेगा...?

वह घुटती रही।

...और तभी उसे पता चला कि आजकल एक तान्त्रिक आया हुआ है। उसके पास ज़िन्दगी की हर मुश्किल का हल है। वह सब कुछ ठीक कर देता है। रूपा के मन में उम्मीद की किरण जगी। वह गयी... लेकिन... नये जाल में फँस गयी।

हाय री किस्मत...!

दलाल की बीवी ने आँखों में आये आँसू पोंछे और गोद में बैठी बिल्ली से बोली, ‘कभी कभी सोचती हूँ तो लगता है कि हमारे नसीब में ही यह नर्क लिखा था... लेकिन हमने किसी का क्या बिगाड़ा था...?’

बिल्ली गोद से उतर आयी और चुपचाप खिड़की की तरफ़ चल दी।

खिड़की से बाहर छलाँग लगाने से पहले बिल्ली ने गर्दन घुमा कर दलाल की बीवी की आँखों में झाँका।

दलाल की बीवी को लगा कि बिल्ली कुछ कहना चाहती है। उसने अपनी जगह पर बैठे-बैठे पूछा, ‘क्या...?’

बिल्ली खिड़की से बाहर गैलरी में कूद गयी।

13.

रोज के मुकाबले उस रात वराण्डे में ज़्यादा गहमागहमी थी। बिल्लियों की संख्या अधिक थी। बिल्लियों का शोर अधिक था। बच्चे हमेशा की तरह उछल-कूद मचाने के बजाय अपनी माँओं से ऐसे चिपके थे, मानो कुछ भयानक घटा हो या घटने की आशंका हो। बिल्लियाँ भी कुछ सहमी हुई थीं। उनकी मद्धम म्याऊँ-म्याऊँ वाली फुसफुसाहटें कराहों की तरह थीं। साफ़ था, वे बेहद घबराई हुई हैं। आखिरकार कुछ देर में वे सामान्य हुर्इं और उनकी मन्त्रणा शुरू हुई। राज खुला...

—इलाके में कोई हत्यारा घूम रहा है...!

बिल्लियाँ एक-दूसरे का मुँह देखने लगीं। उनकी मूँछें नीचे झुक गर्इं और आँखों में डर उतर आया।

—वह बिल्लियों की हत्या कर रहा है!!

वे एक-दूसरे के और नजदीक खिसक आयीं। बच्चों को उन्होंने और अधिक कस कर छातियों से चिपका लिया।

—वह अब तक बारह बिल्लियों की हत्या कर चुका है। छह को उसने जहर का इंजेक्शन लगा कर मारा। चार को पत्थरों पर पटक-पटक कर। जबकि दो की जान उसने पानी में डुबा कर ली। तीन बिल्लियाँ लापता हैं... और डर है कि वे भी कहीं हत्यारे के हत्थे न चढ़ गयी हों।

...और फिर चर्चा छिड़ गयी तो हर बिल्ली अपनी-अपनी बात कहने लगी।

—कोई बिल्लियों की हत्या क्यों कर रहा है? क्या वह सनकी है? पागल है?

—यह बिल्लियों के सावधान हो जाने का समय है। अकेली कहीं न निकलें। अनजान गलियों और घरों में बिल्कुल न जायें। बच्चों को हर पल अपनी निगरानी में रखें। अगर किसी इंसान पर जरा भी सन्देह हो तो तुरन्त एक-दूसरे को ख़बर करें। बिल्लियों की आज़ादी और ज़िन्दगी पर यह बड़ा संकट है। चूँकि वे इंसानों के साथ रहती हैं, इसलिए इंसानों पर आये संकट से किसी न किसी रूप में वे भी प्रभावित होती हैं, यह नहीं भूलना चाहिए। सम्भव है कि बिल्लियों पर आया यह संकट इंसानों पर आये 'मन्दी' नाम के संकट से ही जुड़ा हो!

—इस 'मन्दी' के भूचाल का असर लाखों-करोड़ों लोगों पर हुआ है। हर कोई मुश्किल में है, लेकिन कुछ लोग अपना मानसिक सन्तुलन खो कर उल्टी-सीधी हरकतें कर रहे हैं। बिल्लियों का हत्यारा भी कोई ऐसा ही हिला हुआ इंसान हो तो आश्चर्य नहीं।

—क्या तुम इंसानों की फितरत नहीं पहचानती? निठल्ला इंसान क्या है? पूरा शैतान...।

—खाली बैठे अगर उसे कोई सनक सवार हो जाती है तो फिर वह बिना परिणाम सोचे बस करता चला जाता है। वह नहीं देखता कि इससे उसका और दूसरों का भला हो रहा है या बुरा? इंसान की प्रजाति भगवान ने ऐसी बनाई है कि उसके लिए काम ज़रूरी है। वर्ना वह पागल हो जाये।

—अभी कल तक ही एक बलात्कारी की ख़बरें सुर्खियों में थी। वह एक के बाद एक मासूम-कमसिन लड़कियों का बलात्कार कर रहा था। उसकी नौकरी छूट गयी थी... और...

—तू कमसिन लड़कियों की बात कर रही है... ये जो वराण्डे के आगे वाला घर है... इसमें रहने वाला वो आदमी आज जमानत पर छूट कर आ गया है, जिसे दो महीने पहले नन्हे-मुन्नों के साथ 'चॉकलेटबाजी' करने पर पुलिस पकड़ के ले गयी थी...

—माँ एक बात मैं भी बताऊँ..। एक बच्चे ने बिल्ली की पूँछ खींचते हुए कहा तो माँ ने डाँटा कि कितनी बार कहा है कि जब बड़े लोग बात करते हैं तो बच्चों को बीच में नहीं बोलना चाहिए। गंदी बात है।

—लेकिन माँ सुनो तो यहाँ पर एक लड़की है...

—खामोश... माँ ने थोड़ी सख़्ती दिखाई। फिर बोली कि सब बच्चे उस तरफ जाकर खेलो... वराण्डे के बाहर कोई नहीं जाएगा।

सब बच्चे उठ कर चले गये। बिल्लियाँ फिर बातों में लग गईं।

—अरे, मैं बताती हूँ, एक औरत यहाँ घूम रही है। उसे लाइलाज बीमारी है... क्या कहते हैं इंसान उसे... एड्स...। वह मर्दों को बाँट रही है। जिस क्लीनिक में मैं मँडराती हूँ, वहाँ यह औरत डॉक्टर को बता रही थी... उसका मर्द जाने किस औरत से यह बीमारी लेकर आया और उसे देकर मर गया...। उसे मर्दों से नफ़रत हो गयी है। वह अपने मर्द की बेवफ़ाई का बदला सारे मर्दों से ले रही है। उन्हें बीमारी बाँट रही है। उसने बताया कि साल भर में डेढ़-दो सौ मर्दों को वह यह बीमारी बाँट चुकी है...! सुन कर डॉक्टर के भी पसीने छूट गये।

—सचमुच। आजकल तो औरतों का भी भरोसा नहीं। यहाँ से चार गली छोड़ के तुझे एक दिखाऊँगी। उसका मर्द कहीं नाइट ड्यूटी करता है। रात में डर न लगे इसलिए वह पड़ोस में रहने वाली लड़की को बुला लेती थी। होते-होते हुआ यह कि औरत और वह लड़की एक-दूसरे को पसन्द आ गईं...! मर्द को पता ही नहीं कि उसकी औरत का स्वाद बदल गया है!

—बड़ा धोखेबाज और अश्लील समय है। बूढ़े-जवान, मर्द-औरत, घर-दफ़्तर, स्कूल-कॉलेज, अस्पताल-बाज़ार... हर तरफ़ से सिर्फ़ बुरी ख़बरें आ रही हैं।

बिल्लियों की मन्त्रणा जारी थी। बुरी ख़बरों का आना जारी था। चिन्ताओं की तपिश तेज़ थी। मजबूरियाँ थीं। मजबूरियों का फ़ायदा उठाने वाले थे। हत्यारे थे। बलात्कारी थे। आवारा थे। हरामी थे। लफँगे थे। लुटेरे थे। ठग थे। ढोंगी थे। पागलपन था। सनक थी। चिढ़ थी। कुढ़न थी। कुँठाएँ थीं। बीमारियाँ थीं। निठल्लापन था। उलझनें थीं। जालसाजी थी। पहचान खो रही थी। हाथ से जो निकल गया, उसका गुस्सा था। गुस्से को किसी पर निकलना था। सिर पर पड़े बुरे वक़्त का बदला लेना था। किसी का सिर फोड़ देना था। किसी को मार देना था। किसी से बलात्कार करना था। किसी को फाँस लेना था।

फिसल जाने में कोई शर्म नहीं थी।

ईमान का बाज़ार औंधे मुँह गिरा हुआ था।

चावल, गेहूँ, दाल, चीनी, तेल, फल और सब्जी महँगे थे। महँगे होते जा रहे थे। जनता के पास सवाल थे। जनार्दन के पास जवाब था, 'जनता नहीं खायेगी तो मर नहीं जायेगी।' जनता में जीजिविषा थी। वह भूखी रह कर भी जिन्दा थी। जनार्दन के पास जिद थी, उसके गोदामों में अनाज सड़ रहा था। जनता में कुपोषण और जनार्दन में मोटापे की बीमारियाँ एक

साथ बढ़ रही थीं। जनता ठन-ठन गोपाल हो रही थी और जनार्दन बड़े-बड़े घोटाले करके अपने घर भरने में व्यस्त थे।

महानगर की भीड़ भरी सड़कों से होते हुए सोसायटी में आने वाला एक बूढ़ा भिखारी पटरा-गाड़ी पर बैठी जर्जर बुढ़िया को खींचते हुए रोज गाता, 'अँधेर नगरी चौपट राजा... टके सेर भाजी टके सेर खाजा...।' ऐसा लगता कि दोनों इतिहास से निकल कर आये पात्र हैं, लेकिन उनकी त्वचा से उनकी उम्र का पता ही नहीं लगता।

एक दिन इस नाचीज़ लेखक ने जब बूढ़े से पूछा, 'बाबा, तुम लोग कौन हो?'

वह बोला, 'यह भारतमाता है और मैं इसका पूत हूँ। सपूत कहो, कपूत कहो। कपूत कहो, सपूत कहो। भारतमाता की... जय।' नारा लगा कर वह पलटा और कुछ कदम चल कर पटरा-गाड़ी पर बैठी जर्जर बुढ़िया समेत ओझल हो गया।

बाहर से आयी सारी बिल्लियाँ जा चुकी थीं।

वराण्डे के कोने में बच्चों का बिस्तर ठीक करती हुई बिल्ली ने उन्हे सो जाने को आवाज़ दी, 'चलो सब अपने-अपने बिस्तर पर।'

बच्चों ने एक स्वर में कहा, 'माँ बस थोड़ी देर और...।' बिल्ली मुस्करा कर बाकी काम निपटाने में लग गयी।

बच्चे बहुत ध्यान से सुन रहे थे और एक उनमें से कह रहा था, 'मैंने ख़ुद अपनी आँखों से देखा है। वह अँधेरे कोने में खड़ी रहती है। कोई भी मर्द उस गली से गुजरता है तो हाथ पकड़ कर खींच लेती है। फिर चुम्बन लेते हुए इतनी जोर से उसके होठों को काट खाती है कि वह डर कर भाग जाता है। कुछ तो ऐसे भागते हैं कि मुड़ के तक नहीं देखते। वह एकदम वहशी है। अजीब-अजीब हरकतें करती है। ऐसी आवाज़ें निकालती है कि तुमने कभी सुनी नहीं होंगी...।'

उनके कानों में माँ की आवाज़ पड़ी, 'चलो अब बहुत हो गया।'

बच्चों ने कहा, 'माँ सिर्फ़ दो मिनट। ये बात खत्म ही होने वाली है...।'

माँ ने कहा, 'ना अब और नहीं। बातों का क्या है जब निकलती हैं तो बस ऊन के गोले की तरह खुलती चली जाती हैं। पहले ही बहुत देर हो गई है।'

'माँ ऊन का गोला क्या होता है?' एक ने सवाल किया।

बिल्ली बोली, 'कल लाकर दूँगी, ख़ुद ही देख लेना। उससे खेलने में बड़ा मजा आता है।'

दूसरे की आवाज़ आयी, 'तब तो माँ अगर बातें ऊन के गोले की तरह होती हैं तो बातों से खेलने में भी बड़ा मजा आता होगा।'

माँ ने उसे लाड़ से देखा और बोली, 'क्यों नहीं...? अब इस लेखक को ही देखो... इस कहानी को लिखते हुए यह कितनी सारी इधर-उधर की बातों से खेल रहा है! अब अगर इस खेल में मजा नहीं आ रहा होता तो क्या यह घण्टों इस तरह अपनी मेज पर बैठ कर लिख रहा होता...?'

तीसरे बच्चे ने कहा, 'माँ मैं भी लेखक बनूँगा और बिल्लियों के लिए ख़ूब सारी किताबें लिखूँगा।'

माँ हँस दी, ‘ठीक है। लेकिन इस लेखक की तरह अपनी सेहत के प्रति लापरवाह मत रहना। यह घण्टों बैठा रहता है...। यदि कुछ दिन और इसी तरह बैठक करता रहा तो देखना, इसकी रीढ़ की हड्डी में दर्द पैदा हो जायेगा। आराम भी ज़रूरी है।’

बिल्ली की बात ने लेखक को चौंकाया। उसने वाकई अपनी रीढ़ में सूत बराबर बारीक दर्द की लहर महसूस की। प्रिय पाठक, यह दर्द बढ़ न जाये इसलिए यह नाचीज़ छोटा-सा विश्राम चाहता है। इस बिन्दु को कथा के बीच एक ब्रेक समझें और आप भी थोड़ा आराम कर लें। बैठे या लेटे हुए पढ़ते-पढ़ते आपकी भी पीठ और आँखों को आराम की ज़रूरत महसूस हो रही होगी।

14.

बिल्लियों की किस्मत अच्छी थी कि जल्द ही उन्हें चिन्ताओं और डर से आज़ादी मिल गयी। ख़बर आयी कि बिल्लियों की हत्या करने वाला पकड़ लिया गया है...।

नहीं, पकड़ ली गयी है...! हत्यारन!!

'म्याऊँ...म्याऊँ... हे बिलौटे देवता तेरा लाख-लाख शुक्र है... पूरी ग्यारह मछलियाँ चढ़ाऊँगी मैं। सच्ची... हर पल मन में डर बैठा रहता था कि पता नहीं किस गली से मौत निकलेगी और खा जायेगी...' आसमान की ओर नज़र उठा कर एक बोली।

'म्याऊँ...'

'म्याऊँ...'

'म्याऊँ...'

बाकी ने एक स्वर में सहमति दी।

—म्याऊँ... म्याऊँ... सच्ची, इंसान का पागलपन दिन पर दिन बढ़ रहा है...।

—म्याऊँ... म्याऊँ... इनके साथ रहना अब ख़तरे से खाली नहीं...।

—म्याऊँ... म्याऊँ... अजीब औरत थी... जाने क्या सनक उस पर सवार थी...।

बिल्लियों के डर में गुस्सा भी था और हैरानी भी...।

जिसने भी सुना, वह चकित था। बिल्लियों की हत्या सुर्खियों में तो थी, लेकिन किसी को कल्पना नहीं थी कि हत्या करने वाली एक औरत निकलेगी। पशु कल्याण के लिए काम करने वाले एनजीओ को उसके घर से बिल्लियों की तीन लाशें भी मिलीं। उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया। हत्याओं का जो कारण सामने आया, वह बेहद अजीब था और उस पर आसानी से विश्वास नहीं होता था।

मात्र तैंतीस साल की मिट्ठू कुमारी प्रीमैच्योर मेनोपॉज की शिकार होकर मानसिक विचलन के कगार पर थी!

वह एक चमचमाते मेगामॉल में मल्टीब्राण्ड रीटेल किराना स्टोर की ब्रांच में असिस्टेंट सेल्स मैनेजर थी। सुबह दस से रात के दस बजे तक अपनी हरे-नीले रंग की डिजाइनर यूनिफॉर्म में ग्राहकों के लिए 'बेस्ट प्राइज डील्स' और 'अफोर्डेबल गुड्स' के ऑफर्स को एक्जिक्यूट और प्रमोट करती। किस चीज़ के मार्केट प्राइस पर ग्राहक को कितनी सेविंग। किस चीज़ के टैग प्राइस का कितना ऑफर प्राइस। कौन-सी चीज़ एक के साथ एक फ्री... और कौन-सी कमोडिटी के साथ कौन सी दूसरी कमोडिटी...। साथ ही ग्राहकों के लिए स्मार्ट रिवार्ड्स। सेल्स को लगातार प्रमोट करने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा कस्टमर्स को वैल्यू कार्ड्स देकर मेंबर बनाने की योजनाएँ और उनके द्वारा किये गये प्रत्येक परचेज पर रिवार्ड्स पॉइंट्स की स्पेशल प्लानिंग...। हर आम और ख़ास फेस्टिवल, हर किसी स्पेशल डे पर आकर्षक ऑफर के आइडिये से लेकर उस ख़ास मौके के अनुकूल स्टोर को रंग-रूप देना, चीज़ें हमेशा स्टोर में रहें और उनका स्टॉक भी बना रहे, इसका ध्यान रखना और तमाम चीज़ों का रिकॉर्ड सँभालना... दर्जनों छोटे-बड़े काम उसके जिम्मे थे।

‘आई डोंट हैव टाइम टू रिलेक्स बिकॉज देयर आर टू मैनी थिंग्स आई हैव टू डू...।’ यह बात वह कुछ इस लहजे में कहती, मानो स्टोर ही उसका संसार है!

रिसेशन में सेल्स को लगातार इम्प्रूव करना कठिन चुनौती थी और इसके लिए हर दिन नये प्रयासों की दरकार थी। मिट्ठू कुमारी अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं रखती। उसे न भूख लगती, न प्यास। वह दिन-रात सेल्स को बढ़ाने की प्लानिंग में लगी रहती। यही कारण था कि जब दूसरों के पर्क्स घट रहे थे, कम्पनी ने उसे इंक्रीमेंट दिया। लेकिन मिट्ठू कुमारी को मालूम था कि उसे यहीं नहीं रुक जाना है। उसकी नज़रें मल्टीब्राण्ड रीटेल किराना स्टोर में फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट के दरवाज़े खुलने पर थी। उसे विश्वास था कि देश में देर-सवेर यह होना ही है। वह अपने करियर के लम्बे सफर और ऊँचे ओहदे का ख्वाब देख रही थी। लेकिन इस बीच वह महसूस करने लगी कि उसकी बॉडी का एनर्जी लेवल अचानक गिर जाता है। वह ख़ुद को बुरी तरह थकी हुई महसूस करने लगती। उसकी साँसें तेज़ और भारी हो जातीं। वह निढाल होने लगती। उसका मूड उखड़ जाता और शरीर का तापमान बढ़ता मालूम पड़ता। वह बेचैन हो जाती। उसे माथे, हथेली और छाती पर पसीना आता और मुँह सूख जाता। आँखों की कोरों में हल्की चुभन-सी पैदा होती और लगता कि अँधेरा छा रहा है। धीरे-धीरे वह अवसाद में डूबने लगती। तब कॉफी मशीन से अपना कप तैयार करती और स्मोकिंग जोन में चली जाती। रिलेक्स होने की कोशिश करती...।

ढेर सारे काम की चिन्ता के बीच रिलेक्स होना बेहद कठिन था। रिलेक्स होने की कोशिश एक अलग किस्म का तनाव पैदा करती थी...। मिट्ठू कुमारी जी-जान से रिलेक्स होने का जतन करती। ख़ूब गहरे कश खींचती। एक के बाद दूसरी सिगरेट जलाती। जब-तब कॉफी पीती। अगर भूख बहुत तेज़ लगती तो पित्जा मँगा लेती। फटाफट खाती। दिन भर के काम से निबटने के बाद रात को रूम में लौट कर रिफ्रेश होने के लिए चिल्ड बीयर के घूँट लेती हुई घण्टा भर शावर के नीचे रहती। तेज़ संगीत सुनती। ...और फिर जो कुछ भी फ्रिज में होता उसे खाती हुई अगले दिन सेल्स प्रमोशन की नई प्लानिंग का खाका खींच कर सोने चली जाती।

इस सब के बीच मिट्ठू कुमारी की बॉडी का एनर्जी लेवल तेज़ी से गिर रहा था...। तनाव बढ़ रहा था...। नींद खो रही थी...।

आखिरकार उसे डॉक्टर के पास जाना पड़ा। डॉक्टर ने देखा-जाँचा। टेस्ट लिखे।

टेस्ट हुए। रिपोर्ट आयी।

डॉक्टर ने कहा, ‘यू आर अ रेयर केस... इट्स टू अर्ली दैट यू आर गोइंग थ्रू प्रीमैच्योर मेनोपॉज...। योर फीलिंग्स ऑफ हॉट फ़्लैशेज, इमोशनल चेंजेस, सड़न डिप्रेशन, ड्राइनेस इन द बॉडी, स्लीपलेसनेस... ऑल दीज आर सिम्प्टम्प्स। योर क्लॉक इज टिकिंग...। इन द कमिंग ईयर्स इफ यू विश टू गेट प्रेगनेंट, यू आर लाइकली टू हैव ट्रबल...। यू मस्ट गेट रेस्ट एण्ड टेक मेडिसिंस...। स्टॉप स्मोकिंग, ड्रिंकिंग... टेकिंग हाई कारबोहाइड्रेट फूड्स...। दिस वे ऑफ लाइफ इज टेकिंग यू टू द डेंजरस एण्ड...।’

मिट्ठू कुमारी पर जैसे बिजली गिरी। उसका मन रोने को हुआ। लेकिन आँसू नहीं आये।

उसे याद नहीं आया कि आखिरी बार वह कब रोई थी?

‘वैन यू हैड योर लास्ट पीरियड्स...?’ डॉक्टर ने पूछा।
वह सोचती हुई बोली, ‘नो आइडिया...।’
उसे यह भी याद नहीं आया!
असल में मिट्ठू कुमारी ज़िन्दगी का कोई पर्सनल पल याद नहीं रखना चाहती थी। न बीता कल, न आज। वह आने वाले कल का भी नहीं सोचती। वह यह तक भूल जाना चाहती कि उसका नाम क्या है? इसीलिए जब भी कोई उससे नाम पूछता, वह बताती, ‘आई एम... एम।’
‘यस, ओनली कैपिटल... एम।’
अपने सहकर्मियों से वह ‘एम’ के अलावा ज़्यादा से ज़्यादा ‘मैम’ कहलाना पसन्द करती। सब कुछ भूलने की कोशिश में वह अपने अतीत से काफ़ी हद तक मुक्त हो चुकी थी। बहुत थोड़ी बातें याद रह गयी थीं उसे... जो उसकी स्मृति से कभी भी लुप्त हो सकती थीं!

मिट्ठू कुमारी एक ‘मिस्ट्री’ थी।
वह बिहार के मोतिहारी शहर के एक गरीब पुरातनपन्थी घर में पैदा हुई थी। पैदा होते ही वह तोते की तरह तीखी आवाज़ में रोई थी तो माँ-बाप ने उसका नाम मिट्ठू कुमारी रख दिया। परिवार के बाकी लोगों से अलग मिट्ठू कुमारी आश्चर्यजनक रूप से गोरी और सुन्दर थी। जैसे-जैसे वह बड़ी होती गई, घरवालों के साथ आस-पास के लोगों का आश्चर्य भी बढ़ा क्योंकि मिट्ठू कुमारी फर्राटेदार अंग्रेजी बोलती थी! घर में कोई अंग्रेजी नहीं जानता था और न उसे किसी ने यह भाषा सिखाई थी। होते-होते सब इस पर सहमत हुए कि हो न हो, मिट्ठू कुमारी में किसी अंग्रेज मेम की आत्मा का वास है। आज़ादी से पहले के भारत में इस तरफ़ ख़ूब अंग्रेज रहा करते थे। उन्हीं में से किसी की भूली-भटकी आत्मा...!
समय तोतों के झुँड की तरह गोते लगाते हुए फर्राटे से उड़ान भर रहा था। मिट्ठू कुमारी पढ़ाई में तेज़ थी। पैदाइशी अंग्रेजी जानने के कारण वह फटाफट सारी किताबें पढ़ लेती। किताबें पढ़ने का असर यह हुआ कि वह सपने देखने लगी। ऐसे सपने जो गरीब घर और छोटे शहर में नहीं समाते थे। उन दिनों भारत की लड़कियाँ विश्व सुन्दरी जैसे खिताब जीत कर संसार भर में अपने सौन्दर्य का लोहा मनवा रही थीं। ...और एक दिन मिट्ठू कुमारी आँगन में खड़ी-खड़ी दोनों हाथों से आकाश में चुम्बन उछालती हुई घोषणा कर बैठी, ‘वन डे आई विल ऑल्सो बिकम... मिस युनिवर्स...।’ तब तक उसके पिता को थोड़ी-थोड़ी अंग्रेजी समझ में आने लगी थी और उन्हें मिट्ठू कुमारी के इरादे ठीक नहीं लगे। वह उसकी माँ से बोले, ‘लड़की हाथ से निकलल जा तिया। काबू राखीं। नाहीं त बाकी तीनों बेटियन के बियाह ना होई।’
पिता ने बिरादरी में तेज़ी से लड़के की तलाश शुरू कर दी। पता चलने पर मिट्ठू कुमारी ने बगावत का बिगुल बजा दिया। तब पहली बार पिता ने लड़की पर हाथ उठाया और कड़क कर कहा, ‘दुनों कान से सुन ल... तोरा बियाह के उमिर होता... केहू के मेहरारू बन जइबू त मिस-विस के भूत अपने आप उतर जाई। ज़्यादा चूँ चपड़ करबू त पढ़ाई-लिखाई बन्द करा दे अऊर चाची जवन पास के गाँव में रड़ुआ देखवले बाड़ी ओही से तोर बियाह करा देब।’ मिट्ठू कुमारी सिर से पाँव तक काँप गयी। तब उसे ज़िन्दगी में ‘सूटेबल बॉय’ की अहमियत

मालूम हुई और कोचिंग क्लास में साथ पढ़ने वाले ज्ञानू मिसरा की आँखों में लिखी अदृश्य लिपि का अर्थ समझ आया।

ज्ञानू मिसरा तीन बार मिट्ठू कुमारी को दिल से आर-पार हुए तीर वाला कार्ड देने की कोशिश कर चुका था और वह हर बार उसे छकाने में कामयाब रही थी। पिता के थप्पड़ के अगले दिन मिट्ठू कुमारी ने ज्ञानू मिसरा का प्यार कबूल कर लिया और गुहार लगाई, 'इफ यू रीयली लव मी फ्रॉम द बॉटम ऑफ द सोल... प्लीज सेव मी फ्रॉम माई फादर। आई डोंट वॉन्ट टू स्पॉइल माई लाइफ इन दिस स्मॉल टाउन...। आई जस्ट डोंट वॉन्ट टू बी 'समबडीज' वाइफ। आई वांट टू सी ड्रीम्स एण्ड फुलफिल दैम...। प्लीज टेक मी अवे फ्रॉम दिस प्लेस...। प्लीज ज्ञानू...।'

ज्ञानू मिसरा ने अपने फेवरेट फिल्मी हीरो की तरह सिर को हल्का-सा झटका दिया और कहा, 'क् क् क्... कॉल मी, जानू...'

मिट्ठू कुमारी लजा कर काँपते होंठों से बोली, 'जानू...'

...और जानू ने उसके होठों पर अपने प्यार की मुहर लगा दी। मिट्ठू कुमारी ने अपना मुँह उसकी छाती में छुपा लिया। उसे कसकर सीने से लगाते हुए जानू ने कहा, 'आज से मेरी आँखें तुम्हारी आँखों में बसा सपना देखेंगी। मैं तुम्हें यहाँ से दूर ले जाऊँगा...। तुम मिस युनिवर्स ज़रूर बनोगी...।'

इसके बाद सब कुछ प्लानिंग के मुताबिक हुआ। किसी को भनक तक नहीं लगी और मिट्ठू कुमारी ने घर से भागने की पूरी तैयारी कर ली। जानू भी अपना बैग पैक करके रेडी हो गया। पटना जाने वाली ट्रेन में फर्जी नामों से दो रिजर्वेशन टिकट ले लिए गये। कोचिंग क्लास जाने के बहाने ढलती शाम को घर से निकली मिट्ठू कुमारी दुपट्टे में चेहरा छुपाए तेज़ कदमों से रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ी। उससे थोड़ा आगे जानू था। उसने कस कर मिट्ठू कुमारी का हाथ पकड़ रखा था। दोनों सड़क क्रॉस करते हुए लगभग दौड़ रहे थे। ट्रेन उस दिन समय से पहुँची। दोनों शहर और परिवारों को छोड़ देने से बस कुछ ही मीटर की दूरी पर रह गये थे कि जाने कहाँ से एक बिल्ली निकल आयी और रास्ता काटते हुए आँखों से ओझल हो गयी...!!

जानू के पैर जहाँ थे, वहीं ठिठक गये। उसने आगे बढ़ती हुई मिट्ठू कुमारी को पीछे खींच लिया। बोला, 'घोर अपशकुन... जाना कैंसिल...।'

मिट्ठू कुमारी ठगी-सी रह गयी। बोली, 'व्हाट...?'

'यह अच्छा नहीं हुआ...'

'व्हाट आर यू स्पीकिंग...!'

'बिल्ली रास्ता काट गयी...'

'व्हाट रबिश... जानू...'

'हम गये तो ठीक नहीं होगा...'

'जानू... आई लव यू... प्लीज... ट्रेन इज देयर... वी हैव अ वेरी लिटिल टाइम लेफ़्ट...'

जानू जिद पर अड़ गया। मिट्ठू कुमारी को सपने चकनाचूर होते दिखे। उसने जानू को प्यार की कसम दी, अपनी कसम दी, लेकिन वह नहीं माना। उसने मिट्ठू कुमारी से कहा कि

वह सपने देखना छोड़ दे। पिता जो कहते हैं, मान ले। मिस युनिवर्स कोई ऐसे ही नहीं बन जाती...। ख़ूब पापड़ बेलने पड़ते हैं। धक्के खाने पड़ते हैं। ख़ुद को रगड़ना पड़ता है। ...और मिस युनिवर्स बन भी गयी तो आखिर में क्या करेगी... शादी... बच्चे... रोटी-पानी-गृहस्थी...!! मिट्ठू कुमारी को लगा कि उसका हाथ वह रण्डुआ थामे है जो चाचीजी ने पिताजी को दिखा रखा है! लम्पट, लिजलिजा और लार टपकाता...! ट्रेन सीटी देती हुई प्लेटफॉर्म छोड़ने के लिए खिसकने लगी थी। मिट्ठू कुमारी ने पूरी ताकत लगाकर झटके से अपना हाथ छुड़ाया और भाग कर चलती ट्रेन में सवार हो गयी...।

इसके बाद...

इसके बाद...

इसके बाद का कुछ याद नहीं...।

पुलिस इंटरोगेट करती रही और मिट्ठू कुमारी कहती रही, 'आई डोंट रिमेंबर...। रीयली...। प्लीज लीव मी...।'

लेकिन बिल्लियों की हत्या...?

हत्या...?

हत्या...?

मिट्ठू कुमारी रो पड़ी। फूट-फूट कर रोई...। मिनटों नहीं, घण्टों। उसकी आँखों से आँसू नॉनस्टॉप बहते रहे।

'योर क्लॉक इज टिकिंग...। इन द कमिंग ईयर्स इफ यू विश टू गेट प्रेगनेंट, यू आर लाइकली टू हैव ट्रबल...।'

अपने कमरे पर लौट कर आई मिट्ठू कुमारी के कानों में डॉक्टर के शब्द रह-रह कर गूँज रहे थे। हर पल उसके दिमाग़ पर अपना असर छोड़ रहे थे। उसे लगा कि दूर किसी निर्जन में अनन्त गहराइयों वाले घने अँधेरे कुएँ में कोई पत्थर गिरा है... और 'छपाक' की आवाज़ के साथ सदियों से सोए पानी की नींद टूटी है। मिट्ठू कुमारी को अपने मन की सतह पर हरी इच्छाओं की वे कोंपलें नज़र आईं, जो जाने कितने गुजरे हुए मौसमों में सूखे-चरमराए-पीले पत्तों के बीच दबी हुई थीं। उसे अपनी रूखी-संवेदनहीन त्वचा के नीचे नर्म मांस-मज्जाओं का अहसास हुआ। उसके जिस्म में दौड़ते ख़ून की गरमाहट कुछ बढ़ी। मिट्ठू कुमारी को लगा कि ज़िन्दगी में कुछ कमी-सी है...! उसे लगा कि निर्जन में अनन्त गहराइयों वाला घना अँधेरा कुआँ उसकी ही देह में है और 'छपाक' की आवाज़ से पैदा हुई गूँज उसके अस्तित्व पर छा रही है...।

वह डर गयी। उसने इस तरह अपने भीतर उठती किसी आवाज़ को पहले कभी नहीं सुना था। यह आवाज़ थी जिसे वह न दबा पा रही थी और न अनसुना कर पा रही थी। यह आवाज़ रोम-रोम से पैदा हो रही थी। इसमें आकर्षण था। इसमें डूब जाने का निमन्त्रण था। इसमें चाँद को पा लेने की पुकार थी। इसमें नर्म दूब-सी सुखद टीस थी। इसमें नशा था। इसमें कशिश थी। मिट्ठू कुमारी को आभास हुआ कि उसकी अँगुलियाँ देह के उन कोनों से खेल रही हैं, जो अब तक अछूते थे...! उसकी अँगुलियों की पोरों में ठण्डी चिंगारियाँ पैदा हो रही थीं और देह पर उसका नियन्त्रण छूट गया था...। देह उत्तेजना से थरथरा रही थी...।

साँसें गर्म और तेज़ हो रही थीं...। उसकी मुँदी हुई आँखों के आगे अनदेखे-अनजाने रंग तैर रहे थे...। अजनबी गन्ध आस-पास छा रही थी...। वह होश खो रही थी...। उसकी स्मृति में इस संसार के लोप होने का क्षण... क्षण भर ही दूर था कि वह घटना हुई, जिसने मिट्ठू कुमारी को सदा के लिए बदल कर रख दिया...

...एक बिल्ली की छवि उसकी आँखों के आगे तैर गयी!!

...बिल्ली, रास्ता काट कर जाती हुई!!

मिट्ठू कुमारी जैसे आसमान से जमीन पर आ गिरी। अकल्पनीय दर्द से उसकी देह दोहरी हो गयी। उसका मन शीशे की तरह चटका और आँखों में आँसू तैर गये। आँसुओं में ख़ून के कतरे निकले। मिट्ठू कुमारी तपती धरती पर पड़ी मछली की तरह छटपटाई। प्यास से जलते गले में थूक गटकती हुई... उसने नंगी ठण्डी जाँघों को देखा... और अपनी नज़रों में शर्म से पानी-पानी हो गयी।

...और फिर ऐसा कई बार हुआ!!

...बार बार हुआ!!

मिट्ठू कुमारी देर तक शॉवर के नीचे खड़ी रहती और अपनी तपती देह पर गिरते ठण्डे पानी को महसूस करती। गहरी साँसें लेती। लिपस्टिक लगाती। सजती-सँवरती। सड़कों पर निकल जाती और पैदल भटकती। कभी बस स्टैंड पर घण्टों खड़ी रहती और कहीं नहीं जाती। कभी किसी टैक्सी में सवार होकर घूमती रहती। वह एक के बाद एक सिगरेट फूँकती। एक के बाद एक बीयर की बोतलें खाली कर डालती। देर रात गये कमरे में लौटती और अपने आप को आईने में निहारती रहती। ख़ुद से बातें करती...।

वह डायरी में बेतरतीब लिखती... कुछ शब्द, कुछ वाक्य...

—द लोनलीनेस...

—द साइलेंस...

—आई नीड सम एयर...

—फीलिंग द वाटर...!

—हू आर यू...? बिच...?

—आई लाइक्ड हिम अ लॉट...

—इट हर्ट्स...!!...?? अबव ऑल आई एम अ वूमन...

—इट्स नॉट फेयर... दे आर पिग्स... यू गिव देम अ पार्ट ऑफ योर लाइफ एण्ड दे फायर यू...!! पिग्स!!

—आई कांट गेट सेक्स आउट ऑफ माई माइण्ड...

—दैट्स योर प्रॉब्लम इज...

—आई कांट कण्ट्रोल इट... आई नीड सेक्स... आई सी अ मैन एण्ड आई नीड हिम... बट नो वन अण्डरस्टेंड्स दैट...

—आई एम स्केयरर्ड... पीपल स्टेयर एट मी...

—स्केयर्ड ऑफ बीइंग हर्ट सम डे...

—आई एम एक्जॉस्टेड... कैट... सी... कैट... रन...
—सी ए टी... कैट... आर यू एन... रन...
—कैच द कैट... किल द कैट...
—किल द... कैट... ब्लडी...
—आई एम एक्जॉस्टेड...

पुलिस जाँच में पता चला कि मिट्ठू कुमारी को कुछ दिन पहले नौकरी से निकाल दिया गया था। उसका व्यवहार बहुत अजीब हो गया था। वह अकेले में असामान्य ढंग से बुदबुदाती रहती थी। डरावनी आवाज़ें निकालती थी। कुछ सहकर्मियों ने मैनेजमेंट से शिकायत की कि उन्होनें उसे स्टोर रूम में अपने आप से आपत्तिजनक हरकतें करते पाया...! मैनेजमेंट ने पुलिस से कहा कि सीसीटीवी कैमरों की रिकॉर्डिंग में शिकायतों को सही पाया गया।

पुलिस छानबीन में मिट्ठू कुमारी के मोबाइल में मरी हुई बिल्लियों की तस्वीरें मिलीं। इंटरनेट से डाउनलोड की जानकारियों के प्रिंट कमरे में थे... हाउ टू टॉर्चर अ कैट... हाउ टू किल अ कैट...। बिल्लियों की हत्याओं से जुड़ी अख़बारों-पत्रिकाओं की कतरनें उसने दीवारों पर चिपका रखी थीं...

—किटन किलर रिटर्न्स : इंटरनेट पर एक चीनी युवती का वीडियो आया है, जिसमें सेक्सी ड्रेस और हाई हील शू पहने वह बिल्ली के बच्चे को पैरों तले निर्मम होकर कुचल रही है। यह वीडियो कमजोर दिलवालों के लिए नहीं है...।

—किटन्स एब्यूड टू डैथ, बॉडी लेड बिफोर द मदर : ताइवान में किसी ने बिल्ली के चार बच्चों की मैटल टॉय गन से हत्या करके उन्हें बुरी तरह क्षत-विक्षत कर दिया। फिर वह इन्हें बिल्ली के सामने भी डाल गया...।

—पीपुल फ्राइटन्ड आफ़्टर कैट्स डिसअपीयर : यूके के हर्लेस्टन, नॉरफॉक में लोग डरे हुए हैं और अपनी बिल्लियों को बाहर नहीं निकाल रहे हैं...। बिल्लियाँ गायब हो रही हैं...। दो हफ़्ते में पुलिस कोई सुराग नहीं ढूँढ़ सकी है।

—कैट मीट इन इटैलियन मैन्यू : इटली में एक मास्टर शैफ, बेप्पे बिगाजी ने टेलीविजन शो में बिल्लियों का मांस पकाने की विधि बता कर हडकम्प मचा दिया। उसने कहा कि सबसे बढ़िया तरीका है, तीन दिन तक मांस को नल से बहते पानी के नीचे रखें। इससे वह बेहद मुलायम हो जायेगा और उसका स्वाद बढ़ जायेगा। बिगाजी ने दावा किया, 'आई हैव ईटन इट्स डिलीशियस ह्वाइट मीट मैनी टाइम्स...।' उसने कहा कि इटली में नाइंटीन थर्टीज और नाइंटीन फोर्टीज में वार और द ग्रेट डिप्रेशन के दिनों में जब खाने की चीज़ों का अभाव हो गया था तो कुछ इलाकों में लोग बिल्लियों को मार कर खाते थे...।

इस कतरनों से प्रेरित लगने वाली मिट्ठू कुमारी ने क्या कभी बिल्ली का मांस भी खाया...?

पुलिस और डॉक्टर परेशान थे। धीरे-धीरे उसकी मानसिक हालत बिगड़ रही थी और वह कुछ भी ठीक ढंग से बता पाने की स्थिति में नहीं रह गयी थी। डॉक्टरों ने गहन चिकित्सा के बाद कहा कि समय से बहुत पहले रजोनिवृत्ति का शिकार हो चुकी मिट्ठू कुमारी अब सीजोफ्रेनिया का केस है। अपने विखण्डित व्यक्तित्व के कारण वह सामान्य स्थिति में

यह बता पाने में नाकाम है कि उसने बिल्लियों की हत्या कब, कैसे और क्यों की...? डॉक्टरों के मुताबिक मिट्ठू कुमारी की यौन क्रियाओं और बिल्लियों की हत्याओं का सीधा सम्बन्ध है। जिसे समझ पाना कठिन नहीं है। उन्होंने मिट्ठू कुमारी के केस की सरल व्याख्या दी कि रजोनिवृत्ति से पैदा हुए शारीरिक बदलावों के कारण उसके लिए चरमसुख कठिन लक्ष्य था और सम्भवत: इसकी नाकामी से पैदा होने वाला क्रोध उसने बिल्लियों की हत्या से निकाला...!

लेकिन व्यक्तित्व विखण्डन की शिकार मिट्ठू कुमारी ने अपनी जो कहानी पुलिस को बताई, क्या उस पर विश्वास किया जाये? डॉक्टरों के अनुसार इस पर सन्देह करने से भ्रम ही पैदा होगा क्योंकि यहीं जिक्र आता है कि मिट्ठू कुमारी अपने प्रेमी के साथ घर की बन्दिशों से आज़ाद होने के मोड़ पर जब पहुँची तो ऐन मौके पर बिल्ली रास्ता काट गयी और इस कारण प्रेमी का उससे अलगाव हो गया। यह प्रेमी ही उसकी यौन आकांक्षाओं के केन्द्र में भी रहा होगा क्योंकि मिट्ठू कुमारी ने घर से दूर गुजारी लम्बी युवावस्था में किसी पर-पुरुष का नाम नहीं लिया। यौन क्रियाओं पर उसके बयान से जैसा कि स्पष्ट है, ज्यों ही वह चरमसुख पर पहुँचने को होती, रास्ता काटती बिल्ली की छवि उसे दिखाई दे जाती और वह असफल हो जाती। अत: चरमसुख सदा उसे मृगमरीचिका की तरह छलता रहा।

...और इसकी जिम्मेदार वह बिल्लियों को मानती रही!

रीयली हॉरीबल केस...!!

‘म्याऊँ...’

‘म्याऊँ...’

‘म्याऊँ...’

‘म्याऊँ...’

मिट्ठू कुमारी के डरावने रहस्य से पर्दा उठने के बाद सब बिल्लियों ने एक स्वर में सहमति की मुहर लगायी।

तभी बिल्ली के एक बच्चे की आवाज़ आयी, ‘मां उस दिन भैया आपको इसी मिट्ठू कुमारी के बारे में तो बताना चाह रहा था।’

सारी बिल्लियाँ आश्चर्य से आँखें फैलाए उस बच्चे को देखने लगीं।

15.

वैसे केस तो दलाल का भी हॉरीबल हो चुका था।

हवा में भारीपन था। साँस लेने के लिए कोशिश करनी पड़ती थी। दलाल बेचैन हो रहा था। पुलिस थाने की मच्छरों से भरी अँधेरी और पेशाब की बदबू से गंधाती कोठरी के दमघोंटू वातावरण में उसे दो बार उल्टियाँ हुईं। एकाध बार वह चिल्लाया लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया। वह सलाखों से सिर टिका कर जमीन पर बैठ गया। धीरे-धीरे उसके सारे अहसास खत्म हो गये। दो दिन बीत गये। दलाल की पीठ और पैरों में ऐंठन पैदा हो गयी। उसने कमर सीधी करने की कोशिश की तो तेज़ दर्द महसूस हुआ। उसने न कुछ खाया था और न पीया। उस पर हल्की बेहोशी-सी छाई थी। बीते कई दिन उसकी चेतना में तैर रहे थे। हालाँकि उनमें कोई सिलसिला नहीं था। उसने उन्हें जोड़ने और एक क्रम में रखने की कोशिश की। कुछ देर जूझता रहा, तो कामयाबी मिली।

उसके फ़ोन की घण्टी बजी थी। दूसरी तरफ़ कमाल की आवाज़ थी, 'तेरा वो स्वामी अरेस्ट हो गया है... टीवी पे देख... साले। अब वो तुझे भी फँसा देगा... निकल ले इधर से...।'

आँखें मूँदे दलाल के चेहरे पर हल्की मुस्कान आयी...।

उसकी आँखों के आगे अतीत का चलचित्र घूमने लगा...।

पुलिस ने नयनानन्द को अँधेरी पश्चिम के आदर्श नगर में रहने वाली आइटम गर्ल मोहिनी मजूमदार के फ़्लैट से उठाया था। उसकी गिरफ़्तारी की उल्टी गिनती उसी दिन शुरू हो गयी थी जिस दिन एक बीयर बार में बैठकर मोहिनी का दीवाना, दूरबीन सिंह दलाल को दुखड़ा सुना रहा था।

दलाल जानता था कि मोहिनी का असली धन्धा क्या है। उसे मोहिनी ने कभी आकर्षित नहीं किया। बावजूद इसके कि वह बी-ग्रेड की बॉलीवुड फिल्मों का जाना-पहचाना चेहरा थी। वह समझ नहीं पाता था कि भदेस और गँवार लगने वाली मोहिनी में लोगों को क्या अच्छा लगता है। एक डाँस बार में दूरबीन सिंह की दलाल से मुलाकात हुई थी और जान-पहचान धीरे-धीरे बढ़ी थी। वह शेयर मार्केट का छोटा खिलाड़ी था। उसकी पसन्द से दलाल जल्दी ही वाकिफ हो गया था। जब उसने दलाल से मोहिनी के बारे में इच्छा जाहिर की तो दलाल को आश्चर्य हुआ। वह उसके 'टाइप' की नहीं थी और फिर बहुत महँगी भी पड़ती। उसने समझाया, लेकिन दूरबीन सिंह जिद पर अड़ गया। उन दिनों मोहिनी का आइटम डाँस *बिछा ले चटाई मैं आई राजा...* धूम मचा रहा था। वह सबकी नज़रों में चढ़ी हुई थी। दूरबीन सिंह भी दीवाना हुआ जा रहा था। दलाल ने मोहिनी से फ़ोन पर बात की और दूरबीन सिंह के लिए टाइम फिक्स करा दिया।

...लेकिन मोहिनी के पास से लौट कर दूरबीन सिंह ने जो कुछ बयान किया, उसे सुन कर दलाल ख़ूब हँसा। हँसते-हँसते उसका नशा उतर गया।

हाथ में बैग थामे दूरबीन सिंह ने जब मोहिनी के फ़्लैट में कदम रखा तो उसे भरोसा नहीं हो रहा था कि उसका सपना साकार होने जा रहा है। नौवीं मंजिल पर लिफ़्ट से आने के बावजूद उसकी साँसें अनियन्त्रित हो रही थीं। उसके माथे पर पसीने की नमी थी। वह मोहिनी का रूप अपनी आँखों से देखेगा और उसके साथ मन की करेगा! उसने गौर किया कि फ़्लैट ख़ूबसूरत ढंग से सजा था। चारों दीवारों पर मोहिनी के पोस्टर साइज मादक फ़ोटो लगे थे। दूरबीन सिंह उन्हें जी भर के देख भी नहीं पाया कि मोहिनी आ गयी। ढीले पाजामे और एक्सएल साइज के कुर्ते में। लगता था कि वह नींद से जागी है। उसने गर्मजोशी से दूरबीन सिंह से हाथ मिलाया और बोली, 'क्या लेंगे...?'

मोहिनी ने इस अन्दाज़ में पूछा कि दूरबीन सिंह का दिल उछल कर मुँह को आ गया। वह मुस्करा कर रह गया। उसने मोहिनी के चेहरे पर नज़र गड़ा दी। फिर बोला, 'मैडम जी, मैं बहुत बड़ा फैन हूँ आपका...।'

मोहिनी मुस्कराई, 'तभी यहाँ बैठे हैं आप...।'

दूरबीन सिंह पर जैसे नशा छा गया और वह शुरू हो गया, 'आपकी जो भी पिक्चर आती है, मैं कई कई बार देखता हूँ। आपके डाँस तो कमाल हैं... और *बिछा ले चटाई मैं आई राजा...* मैंने डीवीडी में जाने कितनी बार रिवाइण्ड कर-कर के देखा है... बता नहीं सकता... उसमें जब आप कमर के नीचे जो झटका देती हैं ना... बाइ गॉड!'

मोहिनी मुस्कराती रही।

दूरबीन सिंह चालू रहा, 'आप इतनी ख़ूबसूरत हैं कि ऐसा लगता है बस आपको देखता रहूँ...। मुझे तो भरोसा ही नहीं हो रहा कि आप मेरे सामने बैठी हैं... मेरे हाथ-पैर ठण्डे हुए जा रहे हैं बाई गॉड!...'

'...लेकिन आप *उस समय* तो ठण्डे नहीं रहेंगे ना?' मोहिनी अदा से बोली और हँस पड़ी।

दूरबीन सिंह को लगा कि वह बिल्कुल ठण्डा हो जायेगा।

मोहिनी मुद्दे की बात पर आ गयी और बोली, 'हम काम की बात करें... तारीफ का क्या है, आप करते रहेंगे और वह खत्म नहीं होगी। फिर मेरे मूड का क्या भरोसा? अभी है, अभी नहीं रहेगा... बदन में नींद भरी हुई है... आपके कारण जागी हूँ... अपनी बाँहों में सुलायेंगे न मुझे...'

मोहनी ने भरपूर अँगड़ाई ली... तो दूरबीन सिंह के दाँत चमकने लगे। उसकी कल्पना को पंख लग गये और बदन में तरंग दौड़ गयी।

'चलें...'

'पहले पैसे...'

दूरबीन सिंह ने बैग खोला और पाँच सौ के नोटों की एक गड्डी टेबल पर रखी। बैग बन्द कर लिया। मोहिनी ने गड्डी पर उड़ती-उड़ती नज़र डाली और दूरबीन सिंह को देखने लगी। उसका चेहरा दमकने लगा था। मोहिनी बोली, 'मैं पूरे पैसे एडवांस लेती हूँ, बाद का कोई चक्कर नहीं रखती।'

दूरबीन सिंह ने गड्डी उठाई और मोहिनी की तरफ़ बढ़ाई, 'मैडम पूरे ही तो दे रहा हूँ...! पचास हज़ार हैं... चाहें तो गिन लें...।'

'ये मेरा पुराना रेट है... *बिछा ले चटाई...* के बाद मैंने रेट बढ़ा दिए हैं। एक गड्डी और रखिए...'

दूरबीन सिंह का चेहरा एकदम उतर गया। उसने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'मैं तो इतने ही पैसे लाया हूँ मैडम... और फिर पचास हज़ार भी क्या कम हैं... एक बार के?'

मोहिनी नाराज़ हो गयी और ऊँचे स्वर में बोली, 'तुमको पता है किससे बात कर रहे हो... आइटम गर्ल हूँ मैं, मोहिनी मजूमदार... किसी चकले की रण्डी नहीं, जिसका तुम मोल-भाव करो... पैसे हैं तो रहो, वर्ना निकलो यहाँ से...'

दूरबीन सिंह के हाथ-पाँव फूल गये...। उसे अपने हाथ से मौका निकलता मालूम पड़ा तो बिल्कुल दयनीय होकर बोला, 'देखिए, गरीब आदमी हूँ... यही बड़ी मुश्किल से जुगाड़ किए हैं... रिसेशन में तो आप जानती हैं कि कितना बुरा हाल है... मार्केट में मुझे दो बार झटका लग चुका है... अब क्या बताऊँ मैडम... सच्ची मैं बहुत बड़ा फैन हूँ आपका... मेरा दिल रख लीजिए...'

मोहिनी थोड़ी नर्म पड़ी। मुस्कराती हुई बोली, 'अरे, मैं तो आपकी पूरी क़द्र कर रही हूँ। ख़ुद को पूरा का पूरा परोस रही हूँ आपके आगे... इससे बढ़ कर क्या लेंगे... पाँच मिनट लगाएँ, चाहे दो घण्टे... मैं पूरा पैसा लेती हूँ और पूरा टाइम देती हूँ... आदमियों को मैं क्या पहचानती नहीं...? देने में तो ख़ूब कंजूसी करते हैं, लेकिन लेने में कोई कसर नहीं छोड़ते...। इसीलिए कहती हूँ कि रिसेशन की बहानेबाजी छोड़ कर एक और गड्डी निकालिए... क्यों मेरा और अपना वक़्त बर्बाद कर रहे हैं...'

'मोहिनी जी बाई गॉड कह रहा हूँ, इतने ही पैसे हैं मेरे पास...'

इस बार मोहिनी ने कोई जवाब दिए बिना अपने एक्सएल साइज के कुर्ते के ऊपर के दो बटन खोले और वह सरसराता हुआ गिर कर उसकी कमर में लटक गया... उसने अन्दर कुछ नहीं पहना था। दूरबीन सिंह की आँखें फटी रह गईं...। उसके मुँह से आवाज़ नहीं निकली। उसकी साँसें तेज़ हो गईं, और हथेलियों में पसीना महसूस होने लगा।

मोहिनी बोली, 'देखें हैं ऐसे कहीं...? रिसेशन हो या न हो, इनके मेंटेनेंस में पूरा खर्चा-पानी लगता है... रोज वर्जिश, मालिश और पॉलिश... छू के देखो...'

दूरबीन सिंह के माथे से पसीना चूने लगा। वह पक्का खिलाड़ी था, लेकिन मोहिनी का यह अन्दाज़ देख कर पानी-पानी होने लगा।

'छू के देखो...' मोहिनी ने फिर कहा तो उसकी हथेलियाँ कंपकंपाने लगी। वह जैसे सम्मोहन में बँध गया। उसकी सोचने-समझने की शक्ति चुक रही थी। वह कमरे से निकल जाना चाहता था, लेकिन उसकी निगाहें मोहिनी के खुले अंगों पर ठहरी हुई थीं। उनमें वाकई जादू था! दूरबीन सिंह काँपती हुई हथेलियों में उनके भार को महसूस कर ही रहा था कि पर्दा हिला... और स्वामी वेश में नयनानन्द बाहर आया। दूरबीन सिंह का सिर चकराने लगा। नयनानन्द के आने से मोहिनी पर कोई फ़र्क नहीं पड़ा और वह दूरबीन सिंह की सूरत देखती रही। दूरबीन सिंह अब बुरी तरह घबरा गया। उसके मन में जाने क्या आया कि झट

से झुक कर नयनानन्द के चरण छू लिए। नयनानन्द ने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाये और सामने सोफे पर बैठ गया। दूरबीन सिंह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे? मोहिनी से उसका ध्यान भटक गया। उसके दिमाग़ ने काम करना एकदम बन्द कर दिया।

दूरबीन सिंह के मुँह से निकला, ‘अन्दर चलें...?’

मोहिनी बोली, ‘पैसे...?’

दूरबीन सिंह बोला, ‘देखिए... विश्वास कीजिए...’

‘चल फूट यहाँ से...’ मोहिनी गुर्राई, ‘बहुत देर से ये सोच कर तेरी बकबक सुन रही हूँ कि कस्टमर भगवान होता है... अभी समझेगा, तभी समझेगा...’

दूरबीन सिंह गड्डी उठाने के लिए टेबल पर झुका तो मोहिनी बोली, ‘हाथ मत लगा पैसों को... तूने क्या ये सब फोकट में देखा...? टच करने का पैसा तेरा बाप देगा...? साले! फ़ोन करके पुलिस को बुलाऊँगी... और अन्दर करा दूँगी... बाहर निकलने के लिए बाँटते रहना फिर नोट हर दरवाज़े पर...’

दूरबीन सिंह भीगी बिल्ली बन गया। लाचार नज़रों से नयनानन्द को देखने लगा तो उसने फिर आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठा कर शान्त स्वर में कहा, ‘साक्षी भाव में ही परमानन्द है बेटा... भोग में सिर्फ़ कष्ट है... समझा?’

दूरबीन सिंह की आँखें खुल गर्इं। उसे ज्ञान प्राप्त हो गया। वह समझ गया कि दाल नहीं गलने वाली। बात का बतंगड़ बना तो नुकसान उसी का है। उसने चुपचान खाली बैग उठाया और बाहर निकल आया...।

दलाल पेट पकड़-पकड़ कर हँस रहा था। बहुत दिनों के बाद उसे इस तरह हँसी आ रही थी। इतनी खुली हँसी...। जैसे-जैसे दूरबीन सिंह सुना रहा था... वैसे-वैसे दलाल की हँसी बढ़ रही थी। दूरबीन सिंह बढ़ती हँसी के साथ लगातार दयनीय होता जा रहा था...। दलाल की हँसी में उसे मोहिनी मजूमदार और स्वामी नयनानन्द की हँसी भी शामिल लग रही थी। उसने दलाल से साफ़ कहा था कि मोहिनी मजूमदार से मन की न कर पाने से ज़्यादा गम उसे अपने पचास हज़ार रुपये बेकार चले जाने का है। हालाँकि दुखड़ा रोने के बाद उसने बार के बाथरूम में मुँह धोकर आईने के सामने अपने आप से यह स्वीकार किया कि मोहिनी ने कुर्ता गिरा कर थोड़ी भरपाई ज़रूर की...। वह जादू उसकी आँखों में बस गया था। दूरबीन सिंह जब उस जादू की कल्पना में तैर रहा था, तब बार में गाना बज रहा था... *बिछा ले चटाई मैं आई राजा...*।

16.

दूरबीन सिंह जब बीयर पीते हुए दलाल के आगे मन की भड़ास निकाल रहा था तो उसे नहीं पता था कि वह मोहिनी मजूमदार और नयनानन्द के लिए जेल की राह खोल रहा है। तेज़ संगीत में दूरबीन सिंह की आवाज़ भी तेज़ थी और नशे में उसे आस-पास की सुध नहीं थी। उसकी बातों पर दलाल के साथ पास की मेज पर बैठे एक शख़्स के भी कान लगे थे। यह व्यक्ति पुलिस का मुखबिर था। अलीमुद्दीन खान। हालाँकि वह. फिल्मी दुनिया की हकीकत से वाकिफ़ था, लेकिन उसके लिए यह ख़बर नयी थी।

आइटम डाँसर मोहिनी मजूमदार देह व्यापार में लिप्त है... और उसके साथ एक स्वामी भी है!

अलीमुद्दीन खान उसी रात मोहिनी मजूमदार के बारे में और जानकारियाँ जुटाने में लग गया। दो दिन में उसने सारे पर्दे हटा दिये और पुलिस कमिश्नर के दफ़्तर पहुँच गया। मोहिनी मजूमदार के देह-व्यापार की परत उघड़ती चली गयी। वह स्वामी नयनानन्द के साथ मिल कर काम कर रही थी।. फिल्म और टेलीविजन इण्डस्ट्री में स्ट्रगल कर रही दर्जन भर से ज़्यादा लड़कियाँ उनके रैकेट से जुड़ी थीं। बॉलीवुड के एक बड़े प्रोड्यूसर का भाई, बंटी उनका एजेंट था और लड़कियों को बुक करने के साथ ही पैसे के लेन-देन का काम भी देखता था।

पुलिस कमिश्नर ने अलीमुद्दीन की सूचना को गम्भीरता से लिया और दो दिन पहले ही ओशिवरा थाने का चार्ज सँभालने वाले इंस्पेक्टर विजै को बुलावा भेज दिया। हालाँकि इंस्पैक्टर विजै के पास मोहिनी मजूमदार की सूचना थी, लेकिन उसने जाहिर किया कि यह ख़बर उसे पुलिस कमिश्नर से ही मिल रही है। कमिश्नर ने उसे तेज़ी से इस रैकेट के खिलाफ़ काम करने का आदेश दिया और इंस्पैक्टर विजै ने अमल किया।

पुलिस ने दो बोगस ग्राहकों के माध्यम से बंटी से बात की। बंटी ने उन्हें एक बैंक अकाउंट नम्बर देकर उसमें ऑनलाइन एडवांस तीस हज़ार रुपये जमा करने को कहा। पैसा जमा होने के बाद बोगस ग्राहकों के पास बंटी का फ़ोन आया। एक 'सेक्स पार्टी' की तारीख दी गयी और एक कोड नम्बर भी। उन्हें निश्चित तारीख पर शाम आठ बजे मोहिनी मजूमदार के फ़्लैट पर पहुँचने को कहा गया।

पुलिस ने उस तारीख को दोपहर से ही अपने आदमी सादा लिबास में मोहिनी मजूमदार के अपार्टमेंट के बाहर लगा दिये, जिससे आने वालों पर कड़ी नज़र रखी जा सके। शाम होते-होते हसीनाएँ पहुँच ग्इं। कस्टमर भी पहुँचने लगे। पुलिस ने दो हैंडसम जवानों को तैयार कर रखा था। ठीक आठ बजे वे भी कोड वर्ड बता कर मोहिनी मजूमदार के फ़्लैट में प्रवेश कर गये।

अन्दर के हालात चौंकाने वाले थे।

विशाल हॉल में हल्की नीली रोशनी थी, जिसमें नहा कर सब कुछ नीला हो रहा था। दर्जन भर से ज़्यादा मर्द-औरत नीले रंग में रंगे थे। कोई किसी की बाँहों में तो कोई किसी की कमर में हाथों का घेरा डाले हुए। तेज़ धुनों वाले धीमे संगीत में हाथ जिस्मों पर रेंग रहे

थे। कहीं होंठों से होंठ जुड़े थे। कहीं जिस्म से जिस्म टकरा रहे थे। एक कोने में छोटा-सा बार बना था। जाम छलक रहे थे। हल्की मादक खुशबू हॉल में थी। कोई फर्नीचर नहीं था। सिर्फ़ सामने बन्द खिड़की के नजदीक एक बड़ा बिस्तर लगा था, जिस पर स्वामी वेश में नयनानन्द विराजमान था और सबको देख कर आनन्दित हो रहा था।

बोगस ग्राहकों को मोहिनी मजूमदार ने अटैंड किया और बार के पास खड़ी दो हसीन युवतियों के हवाले कर दिया। ग्राहकों ने अपनी जेब में रखे मोबाइल के बटन चुपके से दबा दिये और नीचे खड़ी पुलिस को छापा मारने का संकेत मिल गया। सादा कपड़ों में तैनात पुलिसवाले कुछ ही पल में मोहिनी मजूमदार के फ़्लैट पर पहुँच गये और फिर मची भगदड़...!

लेकिन कोई भाग न सका।

मोहिनी मजूमदार और नयनानन्द समेत सोलह लोग सेक्स पार्टी में पकड़े गये। फ़्लैट से पुलिस ने कई बोतल शराब, दर्जनों अश्लील वीडियो, यौन उत्तेजक दवाएँ, ड्रग्स, करीब ड़ेढ़ लाख रुपये नकद और चार डायरियाँ बरामद कीं। सबको थाने ला कर पूछताछ हुई। बॉलीवुड की आइटम डाँसर और एक धर्मगुरु के पकड़े जाने ने मीड़िया को हफ़्तों का मसाला दे दिया...। हर तरफ़ मोहिनी मजूमदार और स्वामी नयनानन्द की चर्चा...। सब 'लाइव' चलने लगा...।

मोहिनी मजूमदार ने थाने में मीडिया से कहा कि यह सब झूठ है। पुलिस ने मुझे. फिल्म इण्डस्ट्री के उन बड़े लोगों और राजनेताओं के इशारे पर फँसाया है, जिनके साथ मैंने 'कम्प्रोमाइज़' नहीं किया। मेरे फ़्लैट में कोई सेक्स पार्टी नहीं हो रही थी। मैं आपको ब्रेकिंग न्यूज देती हूँ। स्वामीजी के आशीर्वाद से मैं अपनी पहली. फिल्म प्रोड्यूस करने जा रही हूँ। उसके लिए हमें नये चेहरों की तलाश थी। उन्हें ही ऑडिशन के लिए बुलाया था। पुलिस ने बात का बतंगड़ बना दिया।

नयनानन्द ने कहा कि मैं संन्यासी हूँ। मेरे लिए भोग-विलास बेकार की बातें हैं। मैं इनसे ऊपर उठ चुका हूँ। पुलिस झूठा केस बना रही है। मेरे भक्तों पर अत्याचार किया जा रहा है। मैं चुप नहीं बैठूँगा। यह घोर कलियुग है। हमें फँसाया जा रहा है। देश के हर कोने में मेरे हज़ारों अनुयायी हैं। एक संन्यासी पर ऐसे लाँछन लगाना धर्म का घोर अपमान है। मैं पूरे देश के संन्यासियों से अपील करूँगा कि वे आगे आयें और पुलिस की मनमानी के खिलाफ़ प्रदर्शन करें।

पुलिस कमिश्नर ने कहा कि यह एक बड़ा सेक्स रैकेट है। हमने इस पूरे ऑपरेशन का गुप्त वीडियो तैयार किया है। ज़रूरत पड़ी तो उसे अदालत में पेश करेंगे और मौका आने पर मीडिया में भी जारी करेंगे।. फिल्म और धर्म की आड़ में गलत काम हो रहे हैं। हमें अभी-अभी पता चला है कि दो नाइजीरियाई ड्रग पैडलर्स भी इस रैकेट से जुड़े हैं, जो फरार हैं। जल्द ही वे भी पुलिस की गिरफ़्त में होंगे। इस रैकेट में बॉलीवुड, बिजनेस, ब्यूरोक्रेसी, क्रिकेट और पॉलिटिक्स से जुड़े लोगों के नाम भी सामने आ रहे हैं। हमें जो डायरियाँ मिली हैं, उनमें पाँच सौ से ज़्यादा नम्बर हैं। इन्हें हम खंगाल रहे हैं। जल्द ही सबका पर्दाफाश करेंगे।

तभी पुलिस कमिश्नर के मोबाइल फ़ोन की घण्टी बजी। उन्होंने फ़ोन उठाया और उठ कर खड़े हो गये। कुछ पल खामोश सुनते रहे। फिर धीरे-से कहा, 'ओके सर...। डोंट वरी। आई विल हेंडल केयरफुली।' फ़ोन कट गया। वह मीडिया से मुखातिब हुए, 'थैंक यू फ्रेंड्स। टुडेज ब्रीफिंग इज ओवर...।' फिर बिना किसी सवाल का जवाब दिये अन्दर चले गये।

न्यूज चैनल मनमानी गति से चल रहे थे। रिपोर्टर चीखने लगे। सबके चेहरे एक थे। सबकी आवाज़ एक थी। सबकी स्क्रिप्ट एक थी। सबके स्वर में उतार-चढ़ाव भी एक ही तरह का था।

मन्दी के इस दौर में है बॉलीवुड की हालत ख़राब। एक के बाद एक फ़्लॉप. फिल्मों ने तोड़ दी है इसकी कमर। निर्माता हो रहे हैं दीवालिये। फिल्में हो रही हैं बन्द। निर्देशक हैं परेशान। ऐक्टर हो रहे हैं बेकार। ऐसे दौर में जहाँ बॉलीवुड में ड्रग्स का इस्तेमाल बढ़ने की ख़बर है, वहीं सेक्स बिजनेस के फलने-फूलने की चर्चाएँ जोर पकड़ रही हैं। असल में बॉलीवुड ख़ुद अपने दुश्चक्र में फँसता दिख रहा है। सितारों द्वारा आसमान छूता मेहनताना लेने के कारण. फिल्मों की लागत बढ़ती ही जा रही है। घटिया. फिल्मों और मल्टीप्लेक्सों में महँगे टिकटों के कारण दर्शक दूर हो रहे हैं। उस पर पायरेसी का गुलजार होना कोढ़ में खाज की तरह है। हकीकत यह है कि मौके यहाँ बहुत तेज़ी से सिमट रहे हैं, लेकिन सपनों में जीने वालों की भीड़ बढ़ रही है। यहाँ काम न मिलने के कारण छोटे-मोटे एक्टर, स्ट्रगलर, एक्स्ट्रा, बेरोजगार निर्देशक और तकनीशियन पैसा बनाने के लिए दूसरे रास्ते तलाश रहे हैं। यह तलाश उन्हें सेक्स और ड्रग्स के बाज़ार में धकेल रही है। लेट नाइट पार्टियाँ लगातार बढ़ रही हैं और वहाँ ऐसे सौदे ख़ूब हो रहे हैं। एक आउट-ऑफ-वर्क एक्टर ने अपना नाम गुप्त रखने की शर्त पर इस रिपोर्टर से यह कबूल किया कि यदि वह कोकीन और मैरूवाना के पाँच ग्राम वजन के दस पाउच भी लेट नाइट पार्टी में निकाल देता है, तो पचास प्रतिशत कमीशन के हिसाब से उसका लाख रुपया बन जाता है। एक पाउच पन्द्रह से बीच हज़ार रुपये में बिकता है...।

कहते हुए रिपोर्टरों ने अपने-अपने कैमरों के सामने पाउच लहराये...!

एक है सुन्दरी, एक है संन्यासी। अब सामने आया गन्दा गठजोड़। ऐसे कठिन दिनों में यह. फिल्म इण्डस्ट्री को किस गर्त में ले जा कर डालेगा, यह हम बतायेंगे। लीजिए एक ब्रेक। लौट कर यहीं आइयेगा। आगे खोलेंगे संन्यासी के राज।

सारे रिपोर्टर एक साथ दर्शकों से बोले।

दलाल की बीवी को अपनी आँखों और कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसे समझ नहीं पड़ रहा था कि क्या करे और क्या नहीं? बस, उसकी नज़रें टीवी पर गड़ी थीं। वह फ़र्श पर बैठी-बैठी लुढ़की और पसर गयी। उसका चेहरा भावशून्य था। उसकी आँखें मुँदी थीं और कोरों से आँसू बह रहे थे। 'अब जेल में सड़ेगा कुत्ता...,' वह बुदबुदाई। कुछ मिनट यूँ ही बीते और फिर उसके होठों पर हल्की मुस्कान आयी। वह उठ कर बैठी और हँसने लगी। धीरे-धीरे कमरे में सिर्फ़ हँसी रह गयी। वह आवाज़ इतनी नयी थी कि टीवी के सामने बैठी बिल्ली

कुछ पल के लिए सहम गयी...। दलाल की बीवी ने बिल्ली को उठाया और इतने कस कर छाती से चिपकाया कि वह छटपटाई और उछल कर फिर फ़र्श पर जा पहुँची।

‘अरी, जाती कहाँ है... आ तुझे दूध पिलाऊँ...’

दलाल की बीवी ने बहुत लाड़ से कहा और दूध से भरी भगोनी बिल्ली के आगे रख दी।

‘पी... जितना मन है उतना पी आज...’

बिल्ली उसका मुँह देखने लगी। वह हँसती हुई बहुत ख़ूबसूरत दिख रही थी। अचानक कमरे में सब कुछ बदल गया। जाने कितने दिनों से पसरा नीम-अँधेरा देखते-देखते ताजा रोशनी में तब्दील हो गया। उसकी जद में आयी हर चीज़ नयी आभा से दमकने लगी। लेकिन जिस पर सबसे ज़्यादा नज़र ठहर रही थी तो वह दलाल की बीवी थी! उसके चेहरे की झाइयाँ छू हो गर्इं। गुलाबी रंगत उसके चेहरे पर छा गयी। उसकी उम्र पीछे लौट गयी थी।

उसने दो कदम बढ़ा कर बिल्ली को उठा सीने से लगाया और बोली, ‘मैं बहुत खुश हूँ... सच्ची!’

बिल्ली ने उसकी धड़कनों को महसूस किया। उनमें लय थी। संगीत था। बिल्ली ने बदन ढ़ीला छोड़ दिया। वह उसकी रोंएदार त्वचा पर हाथ फेरती हुई जैसे खो गयी। उसने महसूस किया कि गोद में बिल्ली नहीं, वह ख़ुद है! नर्म और मांसल...! अचानक उसे अपनी देह का खयाल आया। उसके भीतर पुराने, मैले और अँधेरे अस्तित्व की परतें उघड़ रही थीं। उन पर बहुत सारे घाव थे। वे परतें गिर रही थीं।

17.

बावजूद इसके कि दलाल ने कहा था, ‘औरत बहती नदी है...’ कमाल को पूरा भरोसा था कि वह उसकी बीवी को एक दिन ढूँढ़ निकालेगा। लौटा लायेगा। इसीलिए एक फ़ोन पर उसने माहिम में वर्षों से खाली पड़े अपने एनआरआई रिश्तेदार के फ़्लैट का दरवाज़ा धीरे-से दलाल के लिए खोल दिया। दलाल को ख़बर हो गयी थी कि नयनानन्द ने जेल से अपनी रिहाई का इंतजाम कर लिया है। साथ ही पुलिस अफसर से कहा है, ‘पक्का हरामी है साला। मिल जाये तो कमीने के अन्दर दो गोलियाँ मेरी तरफ़ से डालना।’

कमाल फ़्लैट को व्यवस्थित रखने के लिए दो-चार महीने में चक्कर लगाता रहता था। अन्दर रहने-खाने का बन्दोबस्त था। दलाल ने फ़्लैट में पहुँचकर बीवी को फ़ोन लगाया, ‘मेरा इन्तज़ार बन्द कर...। अब मैं वापस नहीं आऊँगा...।’

बीवी ने चीख कर पूछा, ‘उस छिनाल के लिए तू मुझे छोड़ रहा है...?’

उसने फ़ोन ऑफ कर दिया।

एकाध हफ़्ते ज़रूर दलाल इस डर में जीया कि कहीं पुलिस न पहुँच जाये, लेकिन धीरे-धीरे सामान्य हो गया। न कोई फ़ोन आता, न वह कहीं जाता। जिस सोसायटी में फ़्लैट था, वहाँ किसी को ख़बर नहीं थी। रात को ड्यूटी पर मौजूद सिक्योरिटी गार्ड को ज़रूर मालूम था। लेकिन कमाल ने उसकी मुट्ठी गर्म कर दी थी। किचन को छोड़ पूरा फ़्लैट खाली था। कोई फर्नीचर नहीं। हर कोना खाली। दीवारें झक्क सफ़ेद। रोशनी अन्दर आकर इस रंग को और निखार देती। सफ़ेद खुलेपन में दो लोगों की मौजूदगी पूरी शिद्दत से दर्ज होती और आवाज़ अक्सर खनखनाती। दलाल को कभी-कभी यह किसी सपने की तरह लगता।

वह, नेपालन और झक्क सफ़ेद एकान्त!!

सत्रहवीं मंज़िल से दूर तक फैली हुई माहिम की खाड़ी नज़र आती। जब रात उतर आती तो खाड़ी में चाँद की किरणें लहरों पर नाचती दिखतीं और नावें ऐसी नज़र आतीं, जैसे जलते दीये तैर रहे हों। दलाल ने महसूस किया कि जब रात का सन्नाटा गहरा जाता तो इतनी ऊँचाई पर भी लहरों के शोर को सुना जा सकता है। वह कभी आधी रात गये जाग जाता तो खिड़की के नजदीक आकर लहरों को देखता और उनकी आवाज़ को महसूस करता। खाड़ी से लगी बस्तियाँ झाड़ी पर लदे जुगनुओं-सी टिमटिमातीं। दिन में दलाल खिड़की से बाहर नहीं झाँकता क्योंकि तब जगमग झाड़ियों की जगह झुग्गी झोपड़ियाँ दूर तक दिखतीं और खाड़ी किनारे कचरे का ढेर आँखों के आगे सड़ता रहता, जिसकी दुर्गंध का भभका खिड़की खोलते ही अन्दर घुस जाता। दलाल कभी खिड़की नहीं खोलता।

दो-तीन दिन में कमाल आता, छोटी-बड़ी ज़रूरतों का सामान लेकर। साथ में शराब भी। फिर दोनों देर रात तक खिड़की के पास बैठ कर पीते। तब कमाल के दर्द का पुराना टेप चालू हो जाता। वह पीकर बहक जाता तो फूट-फूट कर रोता। दलाल के पैरों में लोट जाता।

‘भाई... ढूँढ ना उसको...(हिच्च)। मैं उसके बिना जिन्दा नहीं रहूँगा... जान दे दूँगा... (हिच्च)। मैं अब भी उसको प्यार करता हूँ...(हिच्च)। कितना करता हूँ... कैसे बताऊँ... उसके

बिना मैं...(हिच्च)।'

फिर बेसुध होकर पड़ जाता।

दलाल उठता और दूसरे कमरे में नेपालन के पास चला जाता। वह जागती रहती। दलाल चुपचाप उसके नजदीक लेट जाता। सोचता : निकाह के दो साल, पाँच महीने, अठारह दिन बाद जब कमाल की बीवी उसे छोड़ कर भागी थी, तो कुँवारी थी...। नेपालन जब मिली, तब कुँवारी नहीं थी...।

कौन था वह... सबसे पहले...?

उसने नेपालन से पूछा था...। वह न शर्माई। न झिझकी। आँखों में आँखें डाल कर सहज बोली, 'बीर... बीर बहादुर थापा...।'

उसने सब कुछ बताया...

हम गरीब थे। कच्चे मकान में रहते थे। मेरा बाप माँ को छोड़ कर दूसरी औरत के पास चला गया था। मेरी उम्र तब तेरह साल थी। माँ जनकपुर की एक सिगरेट फेक्ट्री में काम करती थी। थापा भी वहीं था। माँ के साथ कभी-कभी आता था। वह कहती, सुपरवाइजर है। उसकी उम्र माँ से बहुत कम लगती थी...। उसके साथ होने पर माँ के चेहरे पर अनोखी खुशी होती थी। मेरा मन पढ़ने में नहीं लगता था। माँ के काम पर चले जाने के बाद मैं स्कूल बीच में छोड़ कर घर आ जाती थी। माँ के आने तक घर के काम कर देती। शुरू में वह मुझे स्कूल छोड़ने के लिए डाँटती थी, लेकिन फिर धीरे-धीरे मेरे काम से उसे आराम मिलने लगा तो डाँटना बन्द कर दिया। पढ़ाई अपने आप छूट गयी। मैं घर पर ही रहती...।

थापा के आने के दिन तय थे। शनिवार और रविवार। वह अपने साथ शराब लेकर आता। माँ और वह दूसरे कमरे में बैठ कर शराब पीते। पीने के बाद माँ मुझे ख़ूब लाड़ करती। मेरी शादी की बात करती। थापा कहता कि वह ढूँढेगा अच्छा-सा दूल्हा मेरे लिए। वह मेरे गाल थपथपाता। मुझे ख़ूब शर्म आती। थापा सुन्दर था। माँ के साथ बैठे बातें करते वह जब मेरी तरफ़ देखता, तो मुझे अच्छा लगता था। मैं घर के काम करते हुए कोशिश करती कि उसकी नज़र मुझ पर पड़े। वह मुझे तब देखता था, जब माँ उसे नहीं देख रही होती। जब सब काम हो जाता तो माँ मुझे खाना खिला कर सामने रहने वाली तारा के घर भेज देती। मैं जानती थी कि मेरे जाने के बाद दोनों क्या करेंगे। दो-एक बार मैं चोरी से थापा और माँ को एक-दूसरे को चूमते हुए देख चुकी थी। मैंने अपने कानों में गर्मी-सी महसूस की थी।

सुबह मैं ख़ुद को घर में अपने बिस्तर पर पाती थी!

थापा देर रात अपने घर जाने से पहले मुझे तारा के घर से अपने कंधे पर डाल कर बिस्तर तक छोड़ जाता था। यह बात मुझे रोमांचित करती थी। मैं सोचती कि उस वक़्त मेरी नींद क्यों नहीं टूटती, जब वह मुझे अपने कंधे पर उठाता है?

मैं देर रात को लेकर कोई बात माँ से नहीं कर सकती थी। मैं यह भी नहीं कह सकती थी कि जब थापा चला जाता है तो मुझे तारा के घर से जगा कर ले आया करो। मुझे अच्छा नहीं लगता कि वह मुझे उठा कर बिस्तर तक छोड़ जाये। थापा से भी मैं कुछ नहीं कह सकती थी। लेकिन एक शाम मुझे मौका मिला। जब माँ थोड़ी देर के लिए किसी काम से घर के

बाहर निकली तो मैंने थापा से कहा कि वह मुझे तारा के घर से उठा कर न लाया करे। सिर्फ़ जगा दिया करे। मैं अपने आप आ जाऊँगी...।

उसने हँस कर कहा, 'सच...'

मैंने कहा, 'सच...'

उसने फिर जोर देकर कहा, 'सच...'

मुझे हँसी आ गयी।

इतने में माँ आ गयी। उसने पूछा, 'क्या हुआ...?'

थापा बोला, 'यह कह रही है कि मुझे तुम्हारे ही जैसा दूल्हा ढूँढ़ कर देना...'

माँ बोली, 'सच...'

मेरी हँसी और तेज़ हो गयी...।

जब मैंने तारा को यह बात बताई तो उसे हँसी नहीं आयी। बोली, 'तुझे फँसा रहा है वह।'

मुझे लगा वह मुझसे जल रही है।

तारा की उम्र मेरी माँ के बराबर थी, लेकिन वह उससे कहीं बड़ी बल्कि कुछ कुछ बूढ़ी नज़र आती थी। माँ कहती थी कि उसे मौसी बुलाऊँ, लेकिन सब उसे तारा कहते। मुझे भी उसे नाम से बुलाने में कोई बुराई नज़र नहीं आती थी।

तारा के माँ-बाप मर चुके थे और भाइयों ने उससे दूरी बना ली थी।

तारा बदनाम थी। वह दस बरस मुम्बई के कोठों पर रह कर लौटी थी। जब वह सिर्फ़ चौदह साल की थी, तभी उसकी शादी हो गयी थी। कुछ ही महीनों में वह गर्भवती हो गयी और उसका पति काम की तलाश में कोलकाता चला गया। पति के चले जाने के बाद ससुरालवालों का व्यवहार उससे ख़राब हो गया। वह उससे नौकरों की तरह बर्ताव और मार-पीट करने लगे। तारा माता-पिता के पास लौट आयी। चार साल तक वह इन्तज़ार करती रही, लेकिन उसका पति नहीं लौटा। किसी ने कहा कि वह तारा के चले जाने से नाराज़ हो गया और उसने किसी दूसरी औरत से शादी कर ली। तारा तब कालीन बनाने की एक फैक्ट्री में नौकरी पर लग गयी थी। साथ काम करने वाली एक औरत ने उसे समझाया कि पति के इन्तज़ार में बैठे रहने से ज़िन्दगी बेकार हो जायेगी। यदि वह चाहे तो उसका एक रिश्तेदार मुम्बई में है, जो उससे शादी करने को राजी है। वह उसके बच्चे को भी अपना लेगा। यहाँ उसका क्या रखा है... और अभी उम्र ही क्या है?

कुछ दिन बाद उस औरत ने तारा से कहा कि वह रिश्तेदार आया हुआ है और सड़क के पार पुल पर इन्तज़ार कर रहा है। वह चाहे तो मिल ले। यदि पसन्द आ गया तो वह उसके माँ-बाप से बात करेगी। तारा उस औरत के साथ पुल पर पहुँची। वह आदमी तारा को ठीक लगा। उसने अच्छे से बातें कीं। उसने कहा, यहाँ से हम दोनों पोखरा चलेंगे और वहाँ से होते हुए भारत...। इसके बाद उसने तारा को एक सिगरेट पीने को दी। सिगरेट पीते ही तारा का सिर चकरा गया।

तारा ने बताया था, कालीन फैक्ट्री में काम करने वाली कई औरतें सिगरेट-बीड़ी पीती हैं। उन्हीं में से किसी ने उसे सिगरेट पीना सिखाया था।

सिगरेट पीने के बाद क्या हुआ...? तारा को बहुत धुँधली-सी याद है। नहीं जैसी...। एक जीप आयी... फिर कोई बस...। जब होश आया तो सीमेंट के ठण्डे फ़र्श वाले एक बड़े से कमरे में वह बन्द थी। वहाँ चार पलँग पड़े थे। जिनके हर तरफ़ पर्दे टंगे थे। छत पर एक पंखा धीरे-धीरे चल रहा था। दरवाज़ा बन्द था। उस कमरे में छह औरतें थीं। जब तारा ने उनसे पूछा कि वह कहाँ पर है तो उन्होंने जिस भाषा में बात की वह तारा की समझ से बाहर थी। वह जैसे पागल हो गयी। थोड़ी देर बाद एक उम्रदराज औरत वहाँ आयी और उसने तारा को बताया कि वह मुम्बई में एक कोठे पर है। एक आदमी उसे यहाँ बेचकर गया है।

सुनते ही वह कटे पेड़ की तरह गिर पड़ी थी।

उसने अपने शरीर पर जाने कितने मर्दों को सहा। दस साल तक। फिर कोठे पर आने वाले एक नेपाली कुली से उसकी जान-पहचान बढ़ी। उसी की मदद से एक दिन वह निकल तो भागी, लेकिन पता चला कि गाँव में सबने उसे मरा हुआ मान लिया है। तारा के मन में भी डर बैठ गया कि माँ-बाप का सामना कैसे करे...? तब उसने अपने वापस आने का सन्देश भिजवाया। वे तीज पर्व के दिन थे। जब बेटियाँ ससुराल से माँ-बाप के घर, अपने गाँव लौटती हैं। सब उसे वहाँ लेने आये, जहाँ वह ठहरी थी। सब रोए। तारा को पता चला कि उसका बेटा तभी मर गया था, जब वह गयी थी। उसकी लाश गाँव के पास बहती नदी में मिली थी। इसी से लोगों को लगा था कि तारा ने बेटे के साथ नदी में कूद कर जान दे दी, लेकिन उसकी लाश बह कर कहीं दूर निकल गयी। तारा के पास रोने के लिए आँसू नहीं बचे थे। वह पत्थर की बन गयी। माँ-बाप ने उसे अपना लिया, लेकिन भाइयों और भाभियों को उसका आना अच्छा नहीं लगा। जब तक माँ-बाप थे, तारा उस घर में रहती रही। उनके गुजरने के बाद अपना मकान बना लिया। अलग हो गयी।

'तुम्हें पता है...' नेपालन बोली, 'जब यहाँ से लड़कियाँ लौट कर जाती हैं तो अपने मकान बना कर रहती हैं। पैसा ही सब कुछ है। पैसा होता है, तो गाँव में सब तुमको मान लेते हैं। आज के जमाने में सब पैसा देखते हैं। यह कोई नहीं देखता कि पैसा कहाँ से आया। नेपाल में ऐसा कोई नहीं है, जो मुम्बई और यहाँ के धन्धे के बारे में नहीं जानता। एक भी नेपाली नहीं... जिसे ये सब पता न हो...।'

दलाल ने सिर हिलाया।

'तुम्हें पता है...' नेपालन अपनी रौ में बोलती गयी...

दलाल हैरान हुआ कि क्या सचमुच इसे सिर्फ़ इतना ही पता है? तारा ने इसे और कुछ नहीं बताया...। मन्दी के इन दिनों में तो कोई लाख रुपये देने को राजी नहीं है और मिल भी जाये, तो यह पूरी ज़िन्दगी खटती रहेगी और रकम चुका नहीं सकेगी। इसे कभी सही-सही पता नहीं चलेगा कि इसके लिए कोठे के मालिक या मालकिन ने कितना पैसा लिया? हर दिन नौ-दस कस्टमर इसे रौंदेंगे... और कभी कभी ज़्यादा भी। इसे सिर्फ़ दिन में एक बार खाना मिलेगा और दूसरी बार कस्टमर से मिली टिप से खरीद कर पेट भरना पड़ेगा। अपने मेक-अप और कपड़े के लिए इसे ख़ुद का पैसा खर्च करना होगा। बीमार पड़ेगी तो इलाज कराया जायेगा लेकिन वह इसकी कीमत में जुड़ जायेगा, जो इसे चुकानी होगी। कस्टमर को कण्डोम पहनने के लिए यह मजबूर नहीं कर सकेगी और मालूम नहीं कब किससे गर्भ ठहर

जायेगा। बच्चा गिराने के लिए अपनी गाँठ से पैसा देना पड़ेगा और पाँच दिन आराम के बाद फिर काम पर लगा दी जायेगी...।

बच्चा...!!

दलाल की रगों में तनाव बढ़ा। वह खिसक कर नेपालन के नजदीक आया। उसकी कमर में हाथ डाला। उसकी जाँघें अपने पैरों के बीच दबायी। वह जाग रही थी।

अँधेरे के बावजूद कमरा इतना उजला था कि दीवार पर दो छायाएँ एक-दूसरे में गुँथी हुई साफ़ दिखतीं। उठती-गिरती साँसों के साथ छायाओं में हलचल होती और पल भर में आकार बदल जाते। धीरे-धीरे एक गुलाबी आभा छायाओं को घेर लेती और उनसे हल्का गुलाबी रंग झरता...। वह रंग पहले तो कमरे में भर जाता और फिर खिड़कियों से बाहर निकल कर हौले-हौले प्रकृति पर छा जाता...। गुलाबी सपने में डूबी नेपालन के गुलाबी होंठ हिलते, 'कौन...?'

जवाब आता, 'बीर... बीर बहादुर थापा...।'

थापा हमेशा की तरह हफ़्ते में दो ही दिन आता। बाकी दिन मैं उसका इन्तज़ार करती। वह आता तो मैं हमेशा की तरह खाना बना कर, खा कर तारा के घर चली जाती। माँ और थापा को घर में अकेले छोड़। सुबह ख़ुद को अपने बिस्तर पर पाती! मन में रोमांच पैदा होता। मैं थापा को कस कर छाती से चिपका लेना चाहती। मुझे अपनी नींद पर गुस्सा आता... कैसे बेहोश बना देती है! ऐसी ही बेहोशी में मैंने एक रात महसूस किया कि थापा मेरे ऊपर है... शरीर में कहीं दर्द की हल्की-सी लहर पैदा हुई... थोड़ी-सी ऐंठन... फिर एक तेज़ ठण्डी लहर ने भिगो दिया... यह मीठा सपना था...! इस सपने से जब मैं जागी तो डर गयी...।

थापा निश्चिन्त होकर मेरी बगल में सो रहा था!

मैंने गौर किया कि वह माँ को ज़्यादा शराब देने लगा है। माँ नशे में डूब जाती। कई बार मेरे तारा के घर जाने का वक़्त नहीं आता और माँ लड़खड़ाने लगती। मुझे उसे सँभालना पड़ता। थापा मेरी मदद करता। वह माँ को इतनी पिला चुका होता कि वह ज़्यादा देर होश में नहीं रह पाती और जहाँ होती वहीं लुढ़क जाती...। फिर रह जाते थापा और मैं...! थापा और मेरा सपना...!

पूरी रात हम सपने में होते...।

मुझे पता नहीं चला, लेकिन एक दिन माँ की नज़र जाने कब मेरे पेट पर गयी और उसने मुझे पीटना शुरू कर दिया। मुझे गालियाँ दीं। मैं रोती रही। थापा आया तो माँ उस पर भी चिल्लाई। उसने कहा कि वह मुझे डॉक्टर के पास ले जायेगा। सब ठीक हो जायेगा। माँ ने कहा कि नहीं, डॉक्टर के पास जायेगी तो बात फैल जायेगी। माँ ने ख़ूब गुड़ खिलाया, पपीता खिलाया, तेज़ मसाले, तीखी मिर्च पानी में मिला कर मुँह में भर दी...। कहीं से एक गोली भी लायी और मुझे खिलाई...। पन्द्रह दिन भी नहीं हुए कि बहुत सारा ख़ून बहा... और... मांस के कुछ टुकड़े जैसे...!

माँ ने राहत की साँस ली।

थापा पहली बार माँ की गैर मौजूदगी में आया तो उससे लिपट कर मैं ख़ूब रोई। उसने कहा कि तुझे यहाँ से दूर भेज रहा हूँ...। पीछे-पीछे मैं भी आ रहा हूँ...। हम मुम्बई में रहेंगे, ख़ूब पैसा कमायेंगे और वापस आकर अपना मकान बनायेंगे। मुझे लगा कि थापा के साथ ज़िन्दगी जीने का मेरा सपना दूर नहीं है, बस एक कदम बढ़ाना है...।

लेकिन नेपालन को जल्दी ही सपने की हकीकत मालूम हो गयी। बावजूद इसके वह न रोई, न चीखी, न चिल्लाई। भागने की कोशिश भी नहीं की। एक एजेंट की मदद से थापा ने नेपालन को नयनानन्द के हाथों बेच दिया था।

नेपालन बोली, ‘मैं पैसा कमा कर वापस जाऊँगी... और अपना मकान बनाऊँगी...। तुम भी मेरे साथ चलना...।’

दलाल के चेहरे पर मुस्कान आ गयी। वह बोला, ‘यहीं रखूँगा तुझे... मेरे पास।’

उसने खींच कर नेपालन को सीने से लगा लिया।

इस बात के साथ कमरे का गुलाबी उजास कुछ और बढ़ा।

सूरज की पहली गुलाबी किरण ने दीवार पर बनी छायाओं को सोख लिया।

18.

दस्तक सुन कर दलाल की बीवी ने दरवाज़ा खोला तो स्तब्ध रह गयी। सामने खड़े शख़्स को देख कर जैसे गाज गिरी। सिल्क की लाल धोती और कुर्ता, कंधे तक लम्बे बाल, चेहरे पर भरी हुई दाढ़ी-मूँछ और माथे पर घनी भौंहों के बीच लम्बा लाल टीका। उसकी आँखें भी लाल थीं, जैसे ख़ून उतरा हो।

वह काँप उठी।

नयनानन्द!

नये रूप में वह बहुत भयानक दिख रहा था।

उसने एक शब्द नहीं कहा और उसे लगभग धकेलते हुए अन्दर आ गया। उसके पीछे दो लोग और थे। उन पर नज़र पड़ी तो वह चौंकी... चहरे जाने पहचाने थे।

एक ऊँचा-पूरा, काला भुजंग, हट्टा-कट्टा...। उसने अन्दर आते हुए पीछे वाले से कहा, 'आ रे...।'

दूसरा भी वैसा ही लेकिन उम्र पहले वाले से कुछ कम।

भाऊ और नानू!!

दूसरे ने अन्दर आते ही दरवाज़ा बन्द कर दिया। वह सिर से पैर तक सिहर उठी। एक पल में उसके आगे वह पुराना कमरा तैर गया, जिसके मटमैले अँधेरे में एक पलँग पड़ा था... एक कोने में था छोटा-सा गुसलखाना, जिस पर टाट लटक रहा था... और...।

दलाल की बीवी ने महसूस किया कि वह सालों से उसी कमरे में बन्द है, जिसके एक पल्ले वाले लोहे के मोटे दरवाज़े से बाहर उसकी आवाज़ नहीं जाने वाली... चाहे वह कितनी ही चीख-पुकार मचा ले।

उसके माथे पर पसीना छलछलाया और शरीर ढीला पड़ता मालूम हुआ। तभी भाऊ के सख़्त और मजबूत पंजे उसकी बाँह में धँस गये। बोला, 'चल अन्दर...।'

वह चुपचाप सोफे की तरफ़ बढ़ी, लेकिन नयनानन्द ने कहा, 'यहाँ नहीं... बेडरूम में। फुर्सत में बातें करनी हैं...।'

वह आगे बढ़ी और बेडरूम में आ गयी। तीनों उसके पीछे-पीछे पहुँचे।

नयनानन्द डबलबेड पर पसर गया। उसका हाथ पकड़ कर पास बैठाया। भाऊ और नानू सामने पड़ी कुर्सियों पर बैठे।

'अब तो तुझे तेरी औकात समझ में आ गयी होगी... या कुछ बाकी है? वो तबेले का साँड है, जिसे तू खसम समझ रही है। तेरे को छोड़ के दूसरी को लेकर पड़ा है... कल तीसरी मिल जायेगी... लेकिन तेरा क्या होगा? मैं तुझको यहाँ लेकर आया और तू मुझको आँख दिखाती है... मैं चाहूँ तो तेरे सौ टुकड़े करवा के ऐसे गायब करा दूँ कि किसी को पता तक न चले... मेरा कोई क्या बिगाड़ेगा...? तूने टीवी पर देखा तो होगा... कितने दिन पुलिस रख पायी अन्दर...? मेरी पहुँच के बारे में तू सोच भी नहीं सकती...। उससे तो मैं निपट ही

लूँगा...। तू कहाॅ जायेगी...? डाॅस बार बन्द हो गये। धन्धे पर बैठेगी तो कितने दिन चलेगी...? सोच के देख...।' कमरे में नयनानन्द की आवाज़ गूँज रही थी।

नयनानन्द उसे उसकी ही आँखों के आगे नंगा कर रहा था।

आखिर वह और करने क्या आया था...?

वह कुछ नहीं कर सकता... वह अच्छे से जानती है, लेकिन साथ में भाऊ और नानू को लाया है...! वह उसके इरादे ख़ूब समझती है। नयनानन्द उसे अपमानित करना चाहता है।

अब क्या करे...?

उसकी आँखों से आँसू टप-टप टपकने लगे। वह कमजोर पड़ गयी। उसके भीतर जितने डर थे, सबने एक साथ सिर उठा लिया। जब तक अकेली थी, उसने उन सबको दबा कर रखा था। ज़िन्दगी उसके साथ चूहे-बिल्ली का खेल खेल रही थी... जब उसे लग रहा था कि सब ठीक हो रहा है... पुराने दुखों को भूल कर वह नई ज़िन्दगी जी सकती है... तभी अचानक उस रास्ते पर निकल आयी, जहाँ से चली थी...! कोई और राह नहीं...?

'बता... कहाँ है तेरा यार...' नयनानन्द ने शान्त स्वर में पूछा।

वह कुछ नहीं बोली।

कमर में हाथ डाल कर नयनानन्द ने उसे और नजदीक खींचा। बोला, 'हरामी है साला... कमीना...। तूने उसके लिए कितना कुछ किया... पर उसने तेरे एहसान को ठेंगे पे रखा। दो पैसे की लौंडिया के लिए तेरे पे मूत के चला गया... कुत्ता! लेकिन तेरे को बिना बोले नहीं गया होगा...।'

'मुझे नहीं पता...' उसने कहा।

सुनते ही भाऊ भड़क गया, 'ये ऐसे नहीं बतायेगी साली...।'

वह कुर्सी से उछल कर खड़ा हुआ और उसका हाथ हवा में लहराया। उसने पी रखी थी। हाथ के साथ शराब की बू का भभका लहराया। नयनानन्द ने उसे आँख के इशारे से रोका। नानू ने उसे पकड़ा और फिर से कुर्सी पर बैठाया।

'मुझे सचमुच नहीं बताया उसने। हाँ, उसका फ़ोन ज़रूर आया था... मैंने पूछा कि कहाँ है, लेकिन वह बोला मेरा रास्ता देखना बन्द कर, अब नहीं आऊँगा...। कसम खा के कहती हूँ...' वह रुआँसी हो कर बोली। भाऊ का रूप देख कर उसकी धड़कनें तेज़ हो गयी थीं।

'जब वो नहीं आयेगा तो तू मेरे साथ चल...,' नयनानन्द ने उसकी कलाई मजबूती से पकड़ी और बोला, 'मेरी सेवा करना। कोई तकलीफ नहीं होगी...। तू आँखों के आगे रहेगी तो मुझे भी सुख मिलता रहेगा। जब-जब तुझे देखा है, मन को बड़ी शान्ति मिली है...। यूँ भी आजकल बेचैनी बहुत है...।' उसके चेहरे पर कुटिल मुस्कान आयी।

उसका मन हुआ कि कमरे से निकल जाये, लेकिन कहाँ जायेगी? भाऊ और नानू भूखी नज़रों से घूर रहे थे। उन्हें एक इशारे का इन्तज़ार था। वह बेहद डरी हुई थी।

कमरे में खामोशी थी। हर बीतते पल के साथ ख़तरा बढ़ रहा था। वह अपने को और बेबस होता महसूस कर रही थी। आखिर उसने हिम्मत बटोरी और छत को देखती हुई बोली, 'थोड़ा सा टाइम दो, मैं ढूँढ़ती हूँ उसको... दोनों को...'

'जा ले ले... दिया...' नयनानन्द की आवाज़ आयी।

उसने गहरी साँस ली। छत पर टकटकी बाँधे उसकी आँखें मुँद गईं। लेकिन अगले ही पल अपने कंधे पर उसने मजबूत पंजे महसूस किये। उसकी साँस उखड़ गयी। सामने भाऊ खड़ा था। उसकी आँखों में वासना थी। जीभ लपलपा रही थी। मटमैले दाँत उसकी गर्दन में धँसने को बेकरार थे।

नयनानन्द डबलबेड के दूसरे कोने में खिसकते हुए भाऊ से बोला, 'ले ले...।'
उसके तन पर कुछ नहीं था। उसके मन में भी कुछ नहीं। नयनानन्द जो साबित करना चाहता था, उसने कर दिया।

हल्के विरोध से अधिक वह कुछ नहीं कर सकी थी। वह क्रूर पंजों में फंसी हुई चिड़िया थी। हाथों से उसने चेहरा ढंक लिया था। आँसू कनपटी से बहते हुए सूख चुके थे। बाल बिखरे हुए थे। उसके मन में मर जाने का खयाल आया। वह सोचने लगी कि उसने अभी तक आत्महत्या क्यों नहीं की...? वह सिर्फ़ शरीर थी... जिसमें जगह-जगह ज़ख़्म थे। ख़ून की कुछ रेखाएँ अब भी चमक रही थीं। कहीं रक्त नसों में जम गया था। देह हरी-नीली हो रही थी। उन रंगों में हल्के दर्द का भी अहसास था। उसकी शक्ति चुक गयी थी। उसका मन मर गया था। आत्मा तो जैसे थी ही नहीं। कमरे में वक़्त या तो ठहर गया था या फिर वह कभी था ही नहीं। वह अपनी इच्छा-अनिच्छा से, प्यार-जबर्दस्ती से जाने कितने मर्दों के साथ सो चुकी थी, लेकिन इतना बेबस उसने ख़ुद को कभी महसूस नहीं किया था। वह निरीह शिकार थी...। उससे बलात्कार हुआ...। उसे नयनानन्द से नफ़रत थी...। उसे दलाल से नफ़रत हुई...। उसे नेपालन से नफ़रत हुई...। उसे अपने आप से भी नफ़रत हुई...। सब बुरे हैं...। वह भी बुरी है...।

पता नहीं वह कितनी देर यूँ ही पड़ी रही।

खामोश और आहत।

वहाँ कोई नहीं था। धीरे-धीरे कमरे में अँधेरा उतर आया, तो वह थोड़ी सहज हुई। अब वह ख़ुद को भी नहीं देख सकती थी। वह अँधेरे में खो जाना चाहती थी, जहाँ किसी को उसका पता न चलता। ख़ुद उसे भी नहीं। अँधेरे में बेहोशी थी। असीम शान्ति थी। उसने ख़ुद को तिल-तिल डूबता महसूस किया। इसमें सुख था। मृत्यु का सुख...!

उसने सुख की डोर थामी... और डूबने लगी...!

सघन नीरव अँधियारे में वह अपने अस्तित्व को घुलता हुआ महसूस कर रही थी... वह खो रही थी... कि तभी दो तारे टिमटिमाए...!

गाढ़े अँधेरे में चमकती दो आँखें...!!

अचानक उसे जैसे किसी ने मृत्यु की गुफा से जीवन के खुले मैदान में ला पटका...!!

पल भर में उसने करवट बदली और चमकती आँखों को ध्यान से देखा... बेडरूम के दरवाज़े पर बैठी बिल्ली उसे ही देख रही थी...। बिल्ली खड़ी हुई और सधे कदमों से बढ़ती हुई छलाँग लगा कर पलँग पर जा चढ़ी।

बिल्ली से उसकी नज़रें मिलीं तो वह फफक कर रो पड़ी।

नहीं मालूम कि वह कितनी देर तक रोती रही। उसे यह भी पता न चला कि इस तरह रोना क्यों आया। वह इस तरह कभी नहीं रोई थी। वह बिल्ली के आगे रोती रही। उस रात

बिल्ली उसके पास से हिली तक नहीं।

19.

उसकी बात सुन कर अन्ना चौंका। उसे ऊपर से नीचे तक देख कर हँसा और बोला, 'ख़ुद को देखती नइ क्या शीशे में...? खल्लास हो गएली है साली...। टाइट छोकरी लोग रोज मार्केट में आरेली है। तेरे को फ़्लोर पे उतार के अपुन रिस्क नइ लेगा...। वैसेई सब आजकल अण्डरग्राउण्ड चल रे ला है। इल-लीगल...।'

'किधर भी लगा दे... तेरे इतने तो बार हैं...। किधर पे भी...' वह थोड़ा इठलाती हुई बोली।

अन्ना ने खीझ कर कहा, 'प्यार से समझ नइ रेली तो एकदम क्लीयर कट सुन... तू आउट ऑफ डेट हो गएली है... और धन्धा भी तेरे माफिक एकदम फुस्स हो गएला है...।' फिर उसने 'मद्रासी' में गाली दी...।

उसने बुरा नहीं माना। बस मुस्करा दी। वह जानती थी कि अन्ना कुछ ख़ास गलत भी नहीं है। लेकिन अगर अन्ना को वह न मना सकी तो उसका सोचा मन ही में रह जायेगा। पुरानी ज़िन्दगी में लौटते हुए उसने कुछ सोचा था... अपनी आगे की ज़िन्दगी को लेकर...। उसने अन्ना को पुराने दिनों और ज़िन्दगी में आये दुखों का हवाला दिया। दलाल से मिले धोखे को बयान किया और रो पड़ी...। उसके आँसुओं का असर हुआ...।

अन्ना पिघल गया। बोला, 'चल, बन्द कर रण्डी-रोना। इदर जित्ती आती है... सब साली अन्ना को एक इच हथियार से मारती है...। पर सुन ले, आज से तेरा नाम पुष्पा...। आजकल जितनी लड़की लोग को काम पे लगाया है, सबका नाम एक इच रखा है... पुष्पा। जब काम एक, तो नाम बी एक...। अबी ग्राहक लोग से डील करने का इस्टाइल बदल गयेला है। ध्यान रख, तू किसी लड़की के बीच में नइ आयेंगी...। जो मिलेंगा, वोइ लेंगी...। तेरा नम्बर सबसे लास्ट में होयेंगा...। मंजूर...?'

'मंजूर...'

वह पुष्पा बन गयी...!

उसकी आँखों में ठहरे आँसुओं को पोंछते हुए अन्ना ने एक पुरानी फ़िल्म का डायलॉग मारा, 'पुष्पा... आइ हेट टीयर्स...।'

पुष्पा के होठों पर हँसी तैर गयी।

उसने पाया कि बीते वर्षों में कुछ ख़ास नहीं बदला है। हाँ, इतना ज़रूर हुआ कि डाँस बार पर सरकार की रोक और पुलिस की सख़्ती के बाद सतर्कता थोड़ी बढ़ गयी। खुले-खाली फ़्लोर दिन में अजीब लगते। लड़कियाँ वेटर बन कर ग्राहकों को शराब और खाना परोसतीं। शाम ढलते-ढलते नजारा रंगीन होता। ग्राहकों का आना बढ़ता। ऑर्केस्ट्रा शुरू होता। गीत-संगीत की महफिल सजती...। वेटर लड़कियाँ, एक-एक कर भड़कीली साड़ियाँ पहन कर मदमस्त अन्दाज़ में ठुमके लगाना शुरू करतीं...। होते-होते साड़ी का पल्लू अपनी जगह से सरकता और कसे हुए गहरे गले के ब्लाउज में उभरे वक्ष ग्राहकों को आमन्त्रित करते। काली रात में शराब और सिगरेट की तीखी गन्ध के साथ संगीत शोर में बदलता और मद्धम-

चमकदार रोशनी के बीच माहौल में सुरूर चढ़ने लगता। *नाच मेरी बुलबुल तुझे पैसा मिलेगा..., लैला मैं लैला ऐसी मैं लैला...* गाने फिक्स थे। रेट भी फिक्स। तीन सौ रुपये से तीन हज़ार तक। हाथ लगाने, चुम्बन लेने, बाँहों में भरने और गोद में बैठा कर लिपटा-चिपटी के अलग-अलग रेट। बात इससे आगे बढ़ जाये तो बार में उसका भी इन्तजाम। बार देह व्यापार का अड्डा बन गये हैं! पहले भी धन्धा होता था, लेकिन ऐसी भी लड़कियाँ थीं, जो सिर्फ़ डाँस तक सीमित रहतीं। डाँस से उनका घर-बार चलता था। भाई-बहन, बाल-बच्चे पलते और पढ़ते थे। बड़े-बूढ़ों की दवा-दारू होती थी। मकान का किराया चुकता था।

'सरकार ने उजाड़ा, बेरोजगार किया... लेकिन बसाने को क्या किया? हम लोगों की मजबूरियाँ तो पहले जैसी ही हैं...!' पुष्पा ने जब एलिस मर्चेंट से कहा, तो बाकी सारी हैरान रह गईं। बोली, 'अरे वा... तू तो एकदम सोशलवर्कर लोग के माफिक सोचती...!'

पैंतीस साल की एलिस मर्चेंट अमेरिका से आयी थी। वह न्यूयॉर्क में पत्रकार थी। मुम्बई में डाँस बार बन्द होने को लेकर एक टेलीविजन रिपोर्ट देखने के बाद उसका बार डाँसरों पर किताब लिखने का मन हुआ। वह भारत आ गयी...। दो साल में वह किताब के लिए ज़रूरी लगभग पूरी सामग्री जुटा चुकी थी...। वह सैकड़ों लड़कियों की ज़िन्दगी खंगाल चुकी थी। आखिर में उसकी मुलाकात पुष्पा से हुई। पुष्पा की कहानी ने एलिस को चौंकाया। कुछ उदास भी किया। एलिस बार में काम करने वाली तमाम लड़कियों की ज़िन्दगी के रेखाचित्र खींचती हुई, ख़ास तौर पर ऐसी बार डाँसर की कहानी लिख रही थी, जो मुश्किल हालात पर जीत हासिल करती हुई, अन्ततः बार की ज़िन्दगी को अलविदा कह देती है।

लेकिन पुष्पा तो आज़ाद होने के बाद फिर से यहीं अपने लिए शरण ढूँढ़ रही है...!!

पुष्पा से मिल कर एलिस सोच में पड़ गयी कि इतनी भागदौड़ और मेहनत के बाद भी उसकी किताब बार डाँसरों की ज़िन्दगी की तल्ख सचाइयों से दूर रह जायेगी...? ऐसी किताब का क्या मतलब...??

एलिस ने उसकी हथेलियों को अपनी नर्म हथेलियों में दबाते हुए सादगी से सवाल किया... 'क्यों इस गन्दगी में लौट रही हो...?'

पुष्पा चुप रह गयी।

वह बताना चाहती थी कि उसे एक इंसान का बीज चाहिए... जिन्दा बीज... जो उसकी कोख में पड़े और... फले!

लेकिन वह चुप रह गयी।

उसने अपने मन की यह बात किसी के आगे नहीं खोली थी। मन के ठण्डे अँधेरे कोने में दबाकर रखी थी। एक बार उसकी कोख में अंकुर फूटा और वह सब कुछ छोड़ कर चली जायेगी... यहाँ से दूर... कहीं...। चुपचाप... दबे पाँव... एक नई दुनिया में...

कहाँ...?

जहाँ उसे कोई नहीं पहचानता होगा।

लेकिन कहाँ...?

जहाँ उसका अतीत साये की तरह पीछा नहीं करेगा।

ऐसा तो किस्सों में होता है... फिल्मों में होता है... कोई पक्का पता... कोई ठिकाना...?

कहाँ जायेगी वह...?

हल्का-सा कम्पन हुआ!

वह चौंकी। क्या है? वह सोचना चाह रही थी... लेकिन डर रही थी...। अगर उसका भ्रम हुआ तो...? वह आँखें मींचे पड़ी रही। अगले कम्पन की प्रतीक्षा में...। चारों तरफ़ अँधेरा था। बाहर-भीतर सन्नाटा...। आधी से ज़्यादा रात गुजर चुकी थी। उसे नींद लगने ही वाली थी कि उसके भीतर कुछ हिला था... या उसे लगा...! यह कोई सपना तो नहीं शुरू हो गया...?

एक और... नया धोखा...?

या अब उसके सपनों ने सच होना शुरू किया है...!

कमरे में अँधेरा छाया था।

बिस्तर पर लेटी वह सोच में पड़ी थी। उसका हाथ अपने आप पेट पर फिसलने लगा। उसके भीतर सन्देह से मिला-जुला खुशी का हल्का अहसास दौड़ रहा था। उसकी देह पर ओस की-सी ठण्डक तारी हो रही थी। अपने दिल की धड़कनों को वह महसूस कर रही थी। धड़कनों की रफ़्तार बढ़ी हुई थी। उसकी आँखों के आगे बीते कुछ दिन तैर रहे थे...।

उसने अन्ना से शिकायत की... बीस दिन में मुश्किल से सात बार मेरा नम्बर लगा...।

अन्ना ने खीझ कर कहा, 'अपुन तेरे को पैलेइ सब क्लीयर बोल दिया था... तेरे वास्ते अपना धन्धा खोटी नइ करेगा। सब तरफ़ रोना है...। अबी लोग बी कम हैं। पइसा बी कम।' अन्ना ने हर लड़की के लिए हर दिन दो ग्राहक की लिमिट लगाई हुई थी...। लड़कियाँ बारी-बारी से काम करती। कोई किसी के बीच में नहीं आती। अन्ना कहता, 'पेट पालने का सबको बरोबर चाँस मिलने को होना...।'

लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं था। वह जान चुकी थी कि इस ख़राब टाइम ने अन्ना का ईमान भी ख़राब कर दिया। कभी वह सीना ठोक कर कहता था, 'मय रण्डी का दल्ला नइ।' अब चुप रहता है। लड़की की शिफ़्ट खत्म होने के बाद अगर कोई ग्राहक उसे ले जाना चाहता, तो मैनेजर एडवांस में रकम ले लेता। जो लड़कियाँ ज़्यादा कमीशन देतीं, जिनकी डिमाण्ड ज़्यादा होती, अन्ना उनका नम्बर जल्दी-जल्दी लगाता।

अन्ना उसकी नज़रों से उतर गया। उसका मन ख़राब हो गया। फिर उसने अन्ना के बार का रुख ही नहीं किया। वह अन्ना का दिया नाम भी वहीं छोड़ आयी...।

...और तब ओसामा आया!

ओसामा... ख़ुद पानी लेकर आया। सँभल-सँभल कर बैसाखी के सहारे एक पैर से लँगड़ाता...। घुटने के नीचे उसका बायाँ पैर नहीं था। लेकिन उसका बाकी शरीर बहुत मजबूत था। उस दिन उसके सारे आदमी काम पर लगे थे और वह तीन बार फ़ोन कर चुकी थी, पीने के पानी के लिए...।

ओसामा के कान तेज़ थे। वह आवाज़ से इंसान की प्यास को पढ़ लेता था। उसकी आँखें तेज़ थीं। वह देख कर इंसान के भीतर पानी की गहराई माप लेता था। प्यास और पानी के रिश्ते का वह सफल कारोबारी था...।

दलाल की बीवी से नज़रें मिलते ही वह समझ गया कि उसकी प्यास को राहत पाने का एक और ठिकाना मिल गया है।

उसने हाथ बढ़ाया तो वह दो कदम पीछे हट गयी।

वह आगे बढ़ा और हँसा। बोला, 'तेरी प्यास मैं समझ गया हूँ। मेरे पास आ...।'

'मैं पराई औरत हूँ...'

'तू अकेली औरत है...'

'मैं किसी की बीवी हूँ... दूर हट...'

'तू ख़ुद को धोखा दे पर मुझे नहीं दे सकती...'

'मैं मर जाऊँगी लेकिन...'

'तू जैसे जी रही है ये ज़िन्दगी थोड़े है...'

उसे कोई जवाब नहीं सूझा। वह सोच में पड़ गयी।

मौका पाते ही ओसामा ने उसकी बाँह पकड़ ली। उसकी पकड़ मजबूत थी। वह छटपटाई, मगर हार गयी। वह उस पर छा गया...।

फिर ओसामा अक्सर आने लगा।

उसकी चाह दूसरे मर्दों से अलग नहीं थी। फिर भी वह दूसरों की तरह नहीं था। उसका अन्दाज़ जुदा था। वह सिर्फ़ अपनी प्यास नहीं बुझाता, उसकी हवस को भी हवा देता। भड़काता। उसकी रगों में मीठे दर्द की चिंगारियाँ फूटतीं। उसे अपनी देह टूटती मालूम पड़ती। वह उसे मसल कर रख देता। उसके तन पर अपने दांतों और नाखूनों के निशान छोड़ जाता। उसकी मजबूत बाँहों में वह होश खो देती। उसमें तूफान-सी ताकत थी। वह हैरानी में डूबी रहती।

वह अपने बंजर को उसके बीज से हरा बनाने का सपना देख रही थी।

अर्से बाद वह किसी पुरुष की तरफ़ खिंचने लगी। उसके लिए तैयार होने लगी। वह ख़ुद को आईने में निहारती। उसकी याद से अपने अकेलेपन को भरती। अपने आप को वहाँ छूती, जहाँ उसके निशान उसके बाद भी मौजूद रहते। जहाँ मीठा दर्द उठता। उसकी साँसें तेज़ हो जातीं। वह उसे अपने भीतर महसूस करती। वह आता और छा जाता। उसके गठीले बदन के नीचे दबी वह पसीने से तर-ब-तर हो जाती। उसकी सिसकियों को वह अपने होठों से पी लेता। पूरी ताकत से उसे बाँहों में कसता। वह कसमसा कर आज़ाद होना चाहती तो उसकी जकड़ और मजबूत हो जाती। वह उसके कान में फुसफुसाता, 'मेरी सोनमछली...!'

उसकी आवाज़ में नशा होता। वह निढाल हो जाती।

वह जोर से हँसता... और फिर नहीं ठहरता।

वह सँभल भी नहीं पाती... और वह चल देता।

वह हैरान होती... उसके भीतर अहसास पैदा होता अकेली रह जाने का... उसका मन तड़प उठता... उसकी प्यास और बढ़ जाती...। अकेली... बिखरी... अस्त-व्यस्त... वह पड़ी रहती। उसके लौट आने के इन्तज़ार में।

ओसामा सदा बेचैन रहता। उसके भीतर एक और प्यास थी...। पैसे की प्यास...!

उसने सरकारी पानी के अपने अवैध कारोबार को नकली मिनरल वाटर के धन्धे में बदल लिया और फल-फूल रहा था। घरों के साथ उसने दफ़्तरों में भी बोतल बन्द पानी की सप्लाई शुरू कर दी। झुग्गियों से गुजरने वाले पाइपों को काटने से मिल रहे पानी को वह नेशनल-इंटरनेशल ब्राण्ड के मिनरल वाटर की केन में भर कर सप्लाई कर रहा था। सैकड़ों छोटे-बड़े दफ़्तरों और घरों में यह 'ब्राण्डेड' पानी जा रहा था। एक एनजीओ की रिपोर्ट ने कहा कि महानगर में सौ अलग-अलग जगहों से लिए गये नमूनों में से करीब सत्तर संक्रमित पाये गये। लोग और चौकन्ने हो गये। उनका ओसामा पर विश्वास और बढ़ा। उसका 'मिनरल वाटर' पीकर वे स्वस्थ थे! ओसामा हँसता था और नोट गिनता था। एक-एक केन पर मोटा मुनाफा। ब्राण्ड के हिसाब से। वह जान चुका था कि सीलबन्द पानी दुनिया के सबसे तेज़ बढ़ते कारोबार में से है। वह तेज़ रफ़्तार से तरक्की के ख्वाब देखता। वह हर रोज बीते दिन से दोगुने उत्साह से काम करता। दोगुना कमाता। वह पानी का माफिया बनने की तरफ़ बढ़ चला था। जहाँ पानी की ज़रूरत नहीं थी... वहाँ पैसा पहुँचा रहा था। जब दुनिया के तमाम कारोबार ऊँची उड़ान में घायल होकर जमीन पर उतर रहे थे, ओसामा के सपनों को नये पंख लग गये थे...!

वह सपना देखता...।

उसके सपने में पानी की दुनिया होती। पानी की जमीन और पानी का आसमान। पानी के चाँद, तारे और सूरज। पानी के पेड़, पहाड़ और पंछी। यह दुनिया उसके कब्जे में होती। अनन्त आकाश जितनी बड़ी केन में बन्द पानी की दुनिया! जिसके मुँह पर बहुत बड़ा सोने का ढक्कन लगा होता और होती एक कुँड़ी, जिसमें बड़ा-सा ताला लटकता। इस ताले की बड़ी-सी चाबी उसके पास होती। सोने की चाबी... बड़े-से हीरे के छल्ले में लटकी हुई। उसके सामने इंसानों की लम्बी कतार लगी होती, जो जहाँ तक नज़र जाती, खत्म ही नहीं होती। मुँह माँगी कीमत देने को तैयार ये सभी लोग पानी की उम्मीद में कातर निगाहों से उसे देख रहे होते...। वह पानी से लबालब अनन्त विस्तार वाले बाथटब में लेटा अठखेलियाँ कर रहा होता... और उसके साथ होती, उसकी सोनमछली...!!

वह अपना सपना उसके कानों में कहता।

वह उसके सीने से लग जाती। वह उसके बदन से खेलता। चूमता। प्यार करता। कहता, 'मेरी सोनमछली...!'

सोनमछली के अन्दर सोनमछली...!!

उसने कल्पना की...। उसके होठों पर मुस्कान आ गयी।

उसका हाथ पेट पर फिसल रहा था। उसकी आँखों से नींद उड़ चुकी थी। उसकी पूरी देह जाग चुकी थी। उसकी आँखों के आगे देह धीरे-धीरे पारदर्शी होने लगी। वह अपनी पारदर्शी देह में झाँकना चाहती थी, लेकिन डर रही थी कि अगर उठ कर बैठी तो सोनमछली खो न जाये...! वह उसे पूरी शिद्दत से महसूस करना चाहती...। वह विश्वास करना चाहती...। वह सुबह का इन्तज़ार कर रही थी। वह ओसामा का इन्तज़ार कर रही थी...।

लेकिन ओसामा नहीं आया।

ओसामा की ख़बर आयी।

उसे चाकुओं से गोद डाला गया था।

पूरे बदन में बाईस घाव थे। ख़ून की एक बूँद नहीं बची।

ओसामा की लाश अपने ही ख़ून के तालाब में तैरती मिली।

20.

कमाल कमरे के अन्दर नहीं गया। दलाल की मजिस्ट्रेट के सामने पेशी हो रही थी।
वह गवाही देने आया था।
दलाल के खिलाफ़। पुलिस की तरफ़ से गवाही।

कमाल ने अदालत की गैलरी में खड़े-खड़े सिगरेट जलाई। उस दिन आम दिनों से कम भीड़ थी। सामने बैंच पर दो पुलिसवाले एक बन्दी के साथ बैठे हँस-हँस कर बतिया रहे थे। एक औरत वहीं खड़ी उनकी हँसी में शामिल थी। वह उस बन्दी की क्या लगती थी?

औरत...! कमाल की ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहेली। वह कभी नहीं समझ सका औरत को। औरत को लेकर उसका आत्मविश्वास सदा से डाँवाडोल था। औरत के सामने पड़ते ही वह घबराने लगता।

उस दिन भी यही हुआ था।

वह सिगरेट का धुआँ उड़ाते हुए उस मनहूस घड़ी को कोस रहा था जिस दिन बाज़ार में दलाल की बीवी से उसका सामना हुआ। ढलती शाम का वक़्त था और कुछ ही मिनटों में अँधेरा छा जाने वाला था। काश! मुँह फेर कर वह लोगों के झुंड में खो सकता। लेकिन नारंगी छटा वाली सूरज की रोशनी में ऐसा हो न सका। वह सीधे चल कर उसके सामने आ खड़ी हुई थी। उसके पास ढेरों सवाल थे, लेकिन वह अपने होंठ सिले हुए था। वह ऊँची आवाज़ में बोल रही थी। बाज़ार में भीड़ और गाड़ियों के शोर के बीच भी उसे साफ़ सुना जा सकता था। उसकी आँखों में गुस्से और तकलीफ को एक साथ पढ़ा जा सकता था। उसके दिल का दर्द उसके लफ्ज़ों में साफ़-साफ़ बयान हो रहा था। हालाँकि वह ऐसा कुछ नया नहीं कह रही थी। सब कुछ कमाल को पता था और वह चुप साधे खड़ा था। भीड़ के शोर-शराबे में भी एक सन्नाटे का घेरा उसके आस-पास था, जिसमें दलाल की बीवी की आवाज़ गूँज रही थी। बदले में वह सिर्फ़ सिर हिला रहा था या फिर हूँ-हाँ कर रहा था। वह बोलती जा रही थी। आस-पास से गुजरने वालों को उसकी आवाज़ का दर्द कभी छू जाता था और वे पलट कर उसे भरपूर निगाहों से देखते थे। वे उस आदमी को भी देखते जो पत्थर की मूरत-सा औरत के सामने खड़ा है।

कमाल मना रहा था कि वक़्त तेज़ रफ़्तार से चले और अँधेरा जल्दी हो जाये। उसे पता था कि औरत की आँखों में जादू होता है, जिससे वह जीते-जागते इंसान को कठपुतली बना कर नचा सकती है। दलाल की बीवी की आँखें आँसुओं से तर थीं और वह उससे नज़रें चुरा रहा था। तभी जैसे उसके कानों में धमाका हुआ...

'...और जब तू उससे कहेगा कि वो पेट से है... तब तो वो आयेगा ना... कि तब भी नहीं...?' यह कहते हुए दलाल की बीवी फूट-फूट कर रो पड़ी।

अच्छा खासा तमाशा खड़ा हो गया। कुछ लोग ठहर कर रोती हुई औरत को देखने लगे। कमाल उसका हाथ पकड़ कर आगे बढ़ गया। उसे लगा कि दलाल की बीवी अचानक कमजोर हो गयी है और उसके कदम सही नहीं पड़ रहे। उसे सहारे की ज़रूरत पड़ सकती

है। वह सावधान होकर कदम से कदम मिला कर उसके साथ बढ़ने लगा। वह रोए जा रही थी, जबकि कमाल के कान झनझना रहे थे...। उसे जैसे नींद से झकझोर कर जागाया गया था...।

उसका मन हुआ कि मोबाइल निकाल कर तुरन्त दलाल का नया नम्बर मिलाये, लेकिन कुछ मिनट पहले ही उसने औरत से कहा था कि वह दलाल का पता-ठिकाना नहीं जानता और उसका नम्बर भी अब नहीं लगता।

उसकी शाम ख़राब हो गयी।

सिगरेट खत्म हो गयी। कमाल ने कमरे में झाँका। पेशी चल रही थी।

बन्दी अब बैंच पर बैठा औरत से अकेला बात कर रहा था। दोनों पुलिसवाले कुछ हट कर खड़े हो गये थे।

कमाल कुछ भी सोचना नहीं चाहता था। लेकिन उसे वह मनहूस शाम याद आ रही थी।

दलाल के साथ फ़्लैट में बोतल लिए बैठा कमाल भावुक हो रहा था। वह परेशान था। समझ नहीं पा रहा था कि किन शब्दों में दलाल को समझाये कि अपनी बीवी के साथ वह गलत कर रहा है। नेपालन और अपनी ज़िन्दगी के साथ भी। उसे अब गलत छोड़ कर सही राह चुन लेनी चाहिए। आखिर ऐसा कब तक चलेगा और इसका हासिल क्या होगा? बुरे काम का अंजाम बुरा ही होता है। वह मन ही मन सोचता रहा... फिर बुदाबुदाने लगा और जब दो पैग अन्दर गये तो ये बातें उसकी ज़ुबान पर आ गर्इं...।

दलाल को लगा कि आज फिर कमाल बहक जायेगा। फूट-फूट कर रोयेगा। उसके पैरों में लोटते हुए शुरू हो जायेगा, 'भाई... ढूँढ़ ना उसको...(हिच्च)।' लेकिन ऐसा नहीं हुआ...। कमाल की ज़ुबान नहीं लड़खड़ाई। वह ऐसे बोल रहा था जैसे कोई बड़ा और समझदार व्यक्ति किसी अपने से छोटे और कम अनुभवी को ज़िन्दगी के पाठ समझाता है। उसकी आवाज़ बाकी दिनों से अलग और गम्भीर थी। उसमें बनावट नहीं थी। ज़िन्दगी की ऊँच-नीच की दर्जनों बातें करने के बाद आखिर उसने कहा, 'तू बाप बनने वाला है...'

उसका इतना कहना था कि दलाल ने जोरदार ठहाका लगाया। उसे विश्वास हो गया कि कमाल आखिरकार बहक गया। हाँ, उसका अन्दाज़ कुछ अलग है। यह सोच कर उसकी हँसी और तेज़ हो गयी।

दलाल की हँसी रुकी तो कमाल ने उसकी आँखों में आँखें डाल कर देखा। फिर लगभग फुसफुसा कर बोला, 'सच कह रहा हूँ... आज तेरी बीवी मिली थी...। वो...।' कमाल ने हाथ से पेट फूलने जैसा इशारा किया...! दलाल को लगा कि रात का सन्नाटा अचानक गाढ़ा हो गया है।

'यही तो चाहता था ना तू... ऊपरवाले ने सुन ली तेरी... अब ज़िन्दगी से खेलना बन्द कर... इस रास्ते पर चल कर कुछ हासिल नहीं होने वाला... सब कुछ तो देख लिया... क्या पाया आज तक... बहुत किस्मतवाला है तू... वह तुझ पर मेहरबान है... उसकी इनायत को सिर आँखों से लगा और नया रास्ता अख्तियार कर... नेकी का रास्ता... तेरी ज़िन्दगी में नई सुबह हो रही है... मैं भी अब कभी नहीं कहूँगा तुझसे कि भाई... ढूँढ़ ना उसको... सच्ची...,' कमरे में कमाल की आवाज़ जैसे गूँज रही थी। दलाल को विश्वास नहीं हो रहा था।

नामुमकिन...!

लेकिन ढाई-तीन महीने से उसने कोई ख़बर भी तो नहीं ली थी!

उसका नशा जैसे उतर गया। वह खिड़की से बाहर देख रहा था। अँधेरी रात और दूर-दूर तक फैला हुआ महासागर। दलाल ने गौर किया कि उस रात दो चाँद थे! एक आसमान में और दूसरा महासागर की लहरों पर। हर दिन की तरह लहरें आ जा रही थीं, लेकिन उनका शोर नहीं था। दलाल के मन में भी सन्नाटा पसरा हुआ था। किसी खयाल की आहट तक नहीं थी। उसने महसूस किया कि पल-पल सन्नाटा और बेखयाली बढ़ रही है। क्या वह होश खो रहा है...?

हिच... उसे हिचकी लगी और शब्द उसके दिमाग़ में कौंधा... 'बाप...'

उसे लगा कि तरोताजा करने वाला शराब का पहला घूँट अन्दर उतर रहा है। उस पर फिर सुरूर चढ़ने लगा। उसके चेहरे पर चमक आ गयी। उसकी खुशी को पंख लग गये। उसके दिल में अपनी बीवी के लिए प्यार उमड़ पड़ा...।

अदालत के कठघरे में खड़े कमाल ने गहरी साँस खींच कर छोड़ी और बोला...

जज साहब... वह हमारी दोस्ती की आखिरी रात थी। पहली और आखिरी बार हमारे बीच झगड़ा हुआ। जैसा कि हर झगड़े की जड़ में जर, जोरू या जमीन होती है... हमारे बीच भी नेपाली लड़की को लेकर बात बिगड़ी। मैं इसे सही राह पर चलने की बातें समझा रहा था और यह जिद पर अड़ा था कि नेपालन को नहीं छोड़ेगा। आप ही कहिए कि ऐसा कहीं होता है...? एक बोतल में दो तरह की शराब कैसे रह सकती है...? अय्याशी भी, गृहस्थी भी...! नेपालन के लिए ग्राहकों की कोई कमी नहीं थी, लेकिन पता नहीं इसे उसमें क्या दिखता था? मैं मानता हूँ कि उस रात थोड़ी ज़्यादा चढ़ गयी थी और मैं इमोशनल भी ज़्यादा था, लेकिन मैंने इतना ही कहा था कि इस हरामजादी में आखिर ऐसा क्या ख़ास है? बस, यह तो पागल हो गया।

सच्ची कहता हूँ कि पहली बार जब मैंने उसे इसकी बाइक पर पीछे बैठे देखा था तो उसमें ऐसी कोई ख़ास बात नहीं थी। इसके बाद भी वह जब कभी दिखी तो मेरा उस पर ध्यान नहीं गया। हाँ, जब वह इसके साथ माहिम वाले फ़्लैट में रहने गई, तब मैंने थोड़ा करीब से देखा। कारण कि फ़्लैट में हम तीन ही रहते थे। वह पहले जैसी दुबली-पतली और नाजुक भी नहीं रह गयी थी। उसका रूप-रंग और काया खिल गयी थी। मैं समझ गया कि यह इसके दिए दवाओं के इंजेक्शनों का असर है। वर्ना इतने कम समय में कमसिन लड़की कैसे भरी-पूरी-जवान जैसी नज़र आ सकती है?

नहीं... नहीं... यह झूठा आरोप है कि उसे लेकर मेरे मन में गन्दे खयाल थे। मैंने ईमानदारी से कहा ना कि जब मैंने उसे फ़्लैट में देखा तो ज़रूर उसकी तरफ मेरा थोड़ा ध्यान गया। उसका रंग ही ऐसा था... कुछ-कुछ सुनहरा। जब हम दोनों बैठ कर पी रहे होते थे तो वह आस-पास ही रहती। ज़रूरत की चीज़ें लाकर देती। यह कभी-कभी उसे एकाध पैग बना कर भी देता। ...और तब उसका रंग धीरे-धीरे ताम्बई होने लगता था! फिर जब वह मेरी तरफ़ देखती तो मेरी हथेलियाँ पसीने से भीगने लगतीं। मेरे तलवों में अँगीठी-सी सुलग

जाती। मुझे लगता कि बीमार हो रहा हूँ...। उसका देखना मुझे बेचैन कर देता था...। मेरे अन्दर डर पैदा कर देता था...।

कैसा डर...?

औरत का डर... और कैसा डर? आप कैसे समझेंगे... मैं बताता हूँ...।

मुझे मेरी सौतेली माँ याद आ जाती थी, जिससे मैं आज भी सख़्त नफ़रत करता हूँ। जबकि वह मर चुकी है। उसकी त्वचा भी ऐसे ही रंग बदलती थी...! कभी सुनहरी, कभी ताम्बई। वह जितनी सुन्दर थी, उतनी ही क्रूर। मेरी माँ के मरने के बाद वह घर में आयी थी। मुझे वह बात-बात पर मारती। कान खींचती। हाथ मरोड़ देती। उँगलियाँ कुचल देती। भूखा-प्यासा रखती। जिन्नात और चुड़ैल का डर दिखाती। जरा-सी गलती पर कड़ी धूप में तपते फ़र्श पर घण्टों नंगे पाँव खड़ा रखती। ...और तब मैं क्या था? छोटा बच्चा, छह-सात साल का! मैं उसे देख कर काँपने लगता था। वह घर का सारा काम मुझसे कराती।

मुझे याद नहीं कि मेरे बाप ने कभी मुझे प्यार किया हो। उसकी किराने की छोटी-सी दुकान थी। वह सुबह होते ही चला जाता। दिन में खाना खाने के लिए आता और फिर रात में देर से शराब पीकर लौटता। कभी मैं उसकी नज़रों में आ भी जाता तो वह ऐसे मुँह फेर लेता, जैसे मैं हराम का था। मेरे देखते-देखते उसने सौतेली माँ से चार बच्चे पैदा किये। जैसे-जैसे बच्चे होते गये, मेरी दुर्गति बढ़ती गयी। लेकिन फिर एक दिन ऊपर वाला मुझ पर मेहरबान हुआ। मेरे एक बेऔलाद मामा ने मुझे गोद ले लिया। लेकिन मैं सौतेली माँ को कभी नहीं भूला। सच तो यह है कि मुझे हर औरत उसी की याद दिलाती है...। औरत को सामने पाकर मुझे डर लगने लगता है...। कहीं किसी कोने में नफ़रत भी पैदा हो जाती है। मुझे कुछ हो जाता है जज साहब... जिसे मैं ठीक ठीक समझा नहीं सकता। मैं ख़ुद भी आज तक यह बात नहीं समझ पाया हूँ...। मेरे लिए भी यह एक पहेली है कि मैं क्यों उस औरत को भी प्यार नहीं कर सका, जिसको मैंने दुनिया में सबसे ज़्यादा चाहा...। खैर, यहाँ क्यों मैं अपना दुखड़ा सुनाऊँ...? मैं तो बता रहा था कि उस रात नेपालन को लेकर कैसे बात बिगड़ी...? ...और सच कहूँ तो इसका मुझे अब अफसोस भी नहीं।

यह मुझसे कई बार कह चुका था कि तू अपनी बीवी को भूल जा, मैं तुझे दूसरी औरत ला देता हूँ। मैंने हमेशा इनकार किया। लेकिन नेपालन की आँखों में मैंने ऐसा कुछ देखा था, जिसने मुझे उलझन में डाल दिया था। मैं विश्वास से तो नहीं कह सकता, लेकिन उसकी आँखों में कोई बात ज़रूर थी। दावत या दया...? मुझे नहीं पता कि इसने मेरी ज़िन्दगी का हाल कभी उससे कहा या नहीं... लेकिन कभी मुझे लगता था कि उसकी आँखों में मेरे लिए सहानुभूति है... और कभी-कभी उसकी आँखें मजाक उड़ाती-सी लगती थीं। दो-एक बार मेरा मन हुआ कि दिल में आ रही बात अपने इस दोस्त से कह दूँ। लेकिन चुप रह गया क्योंकि खुल कर तो लड़की ने भी मुझे कभी इशारा नहीं दिया था...! फिर इसका दिल उससे जिस तरह लगा था, वह देखकर भी मैंने जुबान बन्द रखी। इसकी बीवी की हालत देखने के बाद उस रात मेरे अन्दर कुछ गुस्सा भी भरा था। मुझे लगा था कि आज इसे सही रास्ते पर ले ही आना है। मैंने इसे हर तरह से दुनियादारी समझाई। यह भी कहा कि नेपालन की चिन्ता मत कर, 'मैं रख लूँगा इसको...।' यह बिफर गया। गालियाँ देने लगा।

...और तभी मैंने भी गुस्से में कहा कि इस 'हरामजादी' में आखिर ऐसा क्या ख़ास है? मुझे भी देखने दे...।

फिर तो यह पागल हो गया।

झन्न की आवाज़ के साथ मेरे सिर पर शराब की बोतल टूटी। चारों तरफ़ काँच बिखर गये। मैंने महसूस किया कि ख़ून की लकीरें मेरे माथे और चेहरे से होती हुई ठोढ़ी तक आ्ईं और बूँद-बूँद मेरे सामने गिरीं। मेरा होश धीरे-धीरे खोने लगा। मुझे याद है, मैं फिर लड़खड़ाती आवाज़ में बोला, 'देख, तू अपनी ज़िन्दगी सँभाल... इसको मैं सँभाल लूँगा... मुझे दे दे...'

...और झन्न की आवाज़ के साथ सिर पर दूसरी बोतल टूटी।

मुझे कोई होश नहीं रहा। पता नहीं यह मुझे मरने के लिए वहीं छोड़ कर कब निकल गया...।

'अब मैं ख़ुद तो किसकी कसम खाऊँ... आप चाहें जिस की कसम खिला लो... जो कुछ भी मैंने कहा, उसमें रत्ती भर झूठ नहीं है जज साहब... सची...।'

21.

झूठ!

अन्त की शुरुआत इसी से हुई...।

कमाल को रास्ते में मिली दलाल की बीवी जब यह कहती हुई फूट-फूट कर रो रही थी, '...और जब तू उससे कहेगा कि वो पेट से है... तब तो वो आयेगा ना...?' उसे मालूम था, वह झूठ बोली है।

लेकिन उसके पास यही रास्ता रह गया था, दलाल तक पहुँचने का।

महीनों से उसकी ख़बर नहीं। उसका फ़ोन लगता नहीं। उसके लौटने की उम्मीद धीरे-धीरे खत्म हो रही थी। कोई ठोस वजह भी नहीं थी कि वह लौट कर उसके पास आ जाता! एक नई जवान लड़की उसके हाथ में थी। समय आने पर वह उसकी दलाली भी खा लेगा। वह ख़ूब जानती थी। लेकिन वह ख़ुद क्या करेगी...? क्या उसने यह दिन देखने के लिए ही उस पर भरोसा किया था? अपनी सारी जमा पूँजी उसके कहने पर लुटा दी थी। उसके आसरे हो कर रह गयी थी। जैसा वह कहता गया, वैसा ही करती गयी। वह अब बदल चुका है। सब कुछ बदल चुका है। डाँस बार की दुनिया में फिर से उतर कर उसने देख लिया। नयनानन्द का शिकंजा कसता जा रहा है। कमीना तीन बार भाऊ और नानू को लेकर आ चुका है और हर बार... सिर्फ़ अपमान! किसके लिए सह रही है वह? अपनी जान के लिए...? दलाल के लिए...? उसका अपना है क्या...? पीछे कदम फेरने के लिए कुछ नहीं बचा। आगे क्या करे...? नयनानन्द ने अगर ज़िन्दगी तबाह की तो दलाल ने जीने की वजह ही छीन ली।

ओसामा से कुछ उम्मीद जागी थी, लेकिन उसके ख्वाब बहुत ऊँचे थे। समझ ही नहीं सका कि कब जमीन पैरों के नीचे से खिसक गयी। उसके भरोसे के लोग दूसरे पानीवाले गैंग से मिल गये। बचपन में अगर लोकल के नीचे आकर उसने पैर नहीं गँवाया होता तो शायद भाग कर बच भी जाता। लेकिन किस्मत फूटी। सबने घेर कर मारा।

जिस रात ओसामा मारा गया, उसी रात उसके भीतर कुछ हिला था!

कुछ नहीं..., था बस उसका भ्रम...! ख़ूबसूरत धोखा...!

दो दिन तो उलझन में रही, फिर प्रेगनेंसी किट लाकर ख़ुद जाँच लिया...।

नतीजा...। नेगेटिव।

वह चिड़चिड़ी हो गयी थी। हर समय थकी रहती। वह गहरे अवसाद में डूबने लगी थी। वह धीरे-धीरे जैसे होश खो रही थी। लेकिन उस शाम कमाल से हुई मुलाकात में पता नहीं क्या हुआ कि वह सच-झूठ... जाने क्या-क्या बोलती चली गयी! बाद में वह ख़ुद हैरान थी कि उसने क्या कह दिया! जैसे वह लम्बी नींद से जागी थी। अब अगर वह आ गया, तो...? तो... कैसे कहेगी कि जो उसने जाना, वह झूठ है। वह तो सिर्फ़ उसे बुलाने का बहाना था। लेकिन क्या यह जानकर वह रुकेगा...? नहीं, वह उसे अब नहीं जाने देगी। कुछ करेगी... कि झूठ बना रहे। लेकिन कब तक...? यह कोई सदा बने रहने वाला झूठ है...? इस सवाल के आगे वह बेबस हो गयी और फूट-फूट कर रो पड़ी। लेकिन कुछ देर में सँभल भी गयी। नहीं,

अब वह अपने हाथ से कुछ नहीं जाने देगी। अब तक तो वह सिर्फ़ खोती ही आयी है। आगे ऐसा नहीं होने देगी। कुछ करेगी...। कुछ भी...।

...और अगर वह आया ही नहीं, तो?

वह सोच में पड़ गयी। उसे कुछ सूझा नहीं। उसे लगा कि धीरे-धीरे फिर बेहोशी की तरफ़ जा रही है।

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई...!!

वह उसका चेहरा देखती रही...। कितना बदल चुका है! यह वो तो नहीं...। वह देखते ही समझ गयी कि लौट जाने के लिए आया है। फिर क्यों आया...? बच्चे के लिए आया...! उसका मन चीखने को हुआ। मन हुआ कि उसकी छाती पर मुक्के मारे। उसे नाख़ूनों से लहूलुहान कर दे। उसके भीतर नफ़रत जागी। फिर उसने देखा कि वह भी उसके साथ खड़ी है। उससे चिपक कर। कुछ सहमी-सी। कुछ अधिकार के साथ। उसकी आँखों में शर्मिंदगी और डर दोनों थे। थोड़ी दया की याचना भी। कुछ पल बाद जाने क्या सोच वह उसकी बाँह छोड़ कर खड़ी हो गयी।

दलाल की बीवी बिना कुछ कहे लौट कर अन्दर आ गयी। दोनों उसके पीछे-पीछे चले। दलाल ने साफ़ कहा कि अब यह कहीं नहीं जायेगी। यह मेरी है। तू भी रहेगी, यह भी। उसकी बीवी सन्न रह गयी। उसने देखा कि दलाल को नयनानन्द का ख़ौफ़ नहीं रह गया। वह तब भी कुछ नहीं बोला, जब उसे पता चला कि उसकी गैर मौजूदगी में वह आया था।

बीवी ने उसे समझाया कि नेपालन के रहते वे लोग चैन से नहीं रह सकेंगे। जब तक वह रहेगी, नयनानन्द पीछे पड़ा रहेगा। फिर अब तो वह माँ बनने वाली है...! उसके बच्चे की माँ...!

दलाल ने उसे गहरी निगाहों से देखा। उसके माथे को चूमा। उसके पेट पर हाथ फेरा।

वह भीतर तक काँप गयी।

वह नेपालन को देखती। वह सारा काम करती। उसने घर ऐसे सँभाल लिया था, जैसे हमेशा से यहीं रहती आयी थी। नेपालन उसे कई बार बच्ची की तरह लगती। रहेगी भी तो क्या लेगी...?

उसके पति को उससे छीन लेगी।

छीन क्या लेगी, छीन ही चुकी है! यह खयाल आते ही मन की तमाम आशंकाएँ उमड़-घुमड़ कर उसकी आँखों के आगे तैर जातीं। नहीं, वह उसे यहाँ नहीं रहने देगी। किसी भी हाल में नहीं। वह तो इसके जादू में जकड़ा है। वही कुछ करेगी...।

क्या...?

नेपालन का सौदा...!

अगर वह उसे यहाँ से दूर भेजने में कामयाब रही तो वह सिर्फ़ उसका होगा। वह उसे समझा-बुझा लेगी। बच्चे को लेकर भी कोई न कोई रास्ता ढूँढ़ ही लेगी। क्या अस्पतालों से बच्चे चोरी नहीं होते...? क्या घरों से बच्चे उठा नहीं लिए जाते...? यह भी तो हो सकता है कि उसका गर्भ गिर जाये...! वह कोई ड्रामा रच लेगी...। एक झूठ से दूसरे झूठ को ढंक देगी। लेकिन नेपालन को कैसे उसके अंजाम तक पहुँचाएगी...?

जब भी वह अकेली कमरे में होती, कोई राह निकालने की जुगत में रहती। उसे अपने पुराने सम्पर्क एक-एक कर याद आने लगे। वह सोचने लगी, नेपालन को ठिकाने लगाना आसान नहीं है। जितनी जगहें वह जानती थी, दलाल भी उन सबसे वाकिफ था। नेपालन को ऐसी जगह भेजना होगा, जहाँ दलाल न पहुँच सके।

लौट कर आने के बाद दलाल बहुत ज़्यादा बाहर नहीं निकला। वह बीवी के साथ रहने की कोशिश करता। कभी वह बाहर जाता तो नेपालन उसके पास आकर बैठ जाती। वह दलाल के साथ बीते दिनों समेत सारी आपबीती उसे सुना चुकी थी। दलाल की बीवी के मन में दया पैदा हुई। दोनों बैठतीं तो अपने-अपने अतीत की बातें करतीं। तब दोनों के दुख बहते आँसुओं में मिल कर एक हो जाते और वे बहनों की तरह गले लग जातीं।

इसके बावजूद दलाल की बीवी के मन में एक बात साफ़ थी कि नेपालन को जाना होगा। जल्दी से जल्दी।

वह उधेड़बुन में ही थी कि एक दिन बाहर से लौटकर दलाल ने कहा, वह नेपालन को लेकर हैदराबाद जा रहा है। दो दिन बाद। दो दिन के लिए।

क्या कोई शेख मिल गया? नेपालन का सौदा तय हो गया? सुख के दिन आने वाले हैं? पल भर में उसका मन उत्साह से भर गया। लेकिन अगले ही पल उसका दिल डूबा। कहीं हकीकत तो नहीं खुल गयी?

आखिर उसने सैकड़ों औरतों को देखा-परखा है, सच कब तक छुपा सकती है? हो सकता है कि सच जान कर भी वह बिना हँगामा किए चुपचाप चला जाना चाहता हो। वह चालाक है। झूठ भी बोल सकता है कि हैदराबाद जा रहा है। वह बदल चुका है। उसकी नज़रें बदल चुकी हैं। वह उसके साथ कमरे में होता है, लेकिन उसका मन नेपालन के पास रहता है। वह नेपालन के लिए उसे छोड़ सकता है। वह देख चुकी है। क्या वह उसे छोड़ कर जा रहा है? वह नहीं जाने देगी। बड़ी मुश्किल से वह उसे लौटा सकी है, अब नहीं जाने देगी।

वह असमंजस में पड़ गई। उस पर भरोसा कर ले या फिर से धोखा खाने को तैयार रहे!

ज़्यादा नहीं, सिर्फ़ दो दिन हैं।

उसे लगा कि ज़िन्दगी खत्म होने को है। वह चला जायेगा... सदा के लिए...। उसे लगा साँसें टूट रही हैं। वह जिन्दा रहने के लिए छटपटा रही है।

चारों तरफ़ ख़ून बिखरा था। वह अपने ख़ून में लथपथ पड़ी थी। साँसें अटक रही थीं। आँखें मुँदी हुई थीं। एक गोली उसकी बाँह में सुराख करती हुई निकल गयी थी। दूसरी ने उसकी पसलियों को तोड़ दिया था। वह उसके माथे पर पिस्तौल गड़ा रहा था... तीसरी गोली किसी भी पल चल सकती थी। उसकी बाँह और पसलियों में भयानक दर्द था। जैसे आग लगी थी। लेकिन मन में कोई डर नहीं था। वह असीम शान्ति महसूस कर रही थी। शान्ति...! वह तीसरी गोली के चलने का इन्तज़ार कर रही थी।

सब कुछ किसी सपने की तरह उसकी आँखों के आगे तैर रहा था...।

उसे कोई राह नहीं सूझ रही थी... और तब उसने नयनानन्द को फ़ोन लगाया, ‘वह जा रहा है... हमेशा के लिए... कभी वापस नहीं आयेगा... हाँ, दोनों... मैं बताती हूँ, कहाँ है... पर तू

उसको कुछ नहीं बोलेगा... वह मेरा है... तुझको सिर्फ़ लड़की से मतलब...'

वह घबरा रही थी। उसकी आवाज़ थरथरा रही थी। उसने अनजाने डर से फ़ोन काट दिया।

फ़ोन की घण्टी बजी। कुछ पल सोच कर उसने डरते हुए फ़ोन उठाया। उधर से जवाब आया, 'आखिरी बार भरोसा कर... वादा करता हूँ... उसको कुछ नहीं कहूँगा... मुझे मेरे माल से मतलब बस...'

उसने सोचा और बोली, 'घर आ जा...'

कुछ ही देर में नयनानन्द आधा दर्जन हथियारबन्द आदमियों के साथ आया। वे लोग धड़धड़ाते हुए सोसायटी में घुसे। फिर लोगों ने दलाल के फ़्लैट से आती नेपालन के चीखें सुनीं...। जिस रफ़्तार से वे लोग आये थे। उसी रफ़्तार से लौट गये। नेपालन मुर्दा-सी एक हट्टे-कट्टे आदमी के कंधे पर पड़ी थी।

अपने मोबाइल पर दलाल ने अनजान नम्बर देखा तो चौंका। यह नम्बर उसकी बीवी और नेपालन के सिवा किसी और के पास नहीं था। वह मण्डी में था। भीड़ बहुत थी। रिमझिम बरसात हो रही थी। चारों तरफ़ कीचड़ और शोर था। उसने फ़ोन काट दिया। शायद रांग नम्बर हो। लेकिन फिर घण्टी बजी। उसने रिसीव किया तो दूसरी तरफ़ हँसी थी...। जानी-पहचानी हँसी...। बरसात में उसने माथे पर पसीने की बूँदें महसूस कीं। उसे लगा कि भागे...। भीड़ को चीरता हुआ। वह फँस गया है। घेर लिया गया है। उसका दिल घबराया। पल भर में वह सारा माजरा समझ गया। धोखा हुआ...! छल...! हँसी और तेज़ हुई...। उस हँसी में उसने अपनी हार सुनी। हँसी ने उसके मन में वह डर पैदा कर दिया, जिसको उसने इतने दिनों से दबा रखा था। वह अचानक कमजोर पड़ने लगा। उसे लगा कि मण्डी के हर कोने से यह हँसी उठ रही है। हर चीज़ उस पर हँस रही है। उसने बाइक की रफ़्तार बढ़ा दी। लेकिन हँसी पीछा करती रही...।

वह ख़ून से लथपथ थी। आँखों के आगे धुँधलका छा रहा था। उसने पूरी ताकत लगाई और आँखें खोली, देखा पिस्तौल के ट्रिगर पर उसकी अँगुली थी...। चेहरे पर गुस्सा। आँखों में नफ़रत। उसके सिर पर ख़ून सवार था। उसके होंठों पर मुस्कान आ गयी। जीत की मुस्कान। उसने उसे समझाने की कोशिश की थी, लेकिन वह जैसे पागल हो गया था। मार-मार कर उसने लहूलुहान कर दिया था, मगर वह भी कमजोर नहीं पड़ी। उसने जमकर संघर्ष किया। जोरदार पलटवार किये। लेकिन दलाल के पास पिस्तौल थी। वह उसके चेहरे पर नज़र टिकाये रही। सीने में खिंचाव पैदा हो रहा था। साँसें अटक रही थीं। बहुत ख़ून बह चुका था। लेकिन उसकी आँखों में चुनौती थी। तभी गोली चली...।

खत्म...!!

माथे में सुराख हो गया। गर्दन लटक गयी। सुराख से ख़ून की धार बह कर फ़र्श पर गिरने लगी। उसकी आँखें खुली थीं।

दलाल जानता था कि अब नेपालन को पाना नामुमकिन है। वह खो चुकी है। सोसायटी में हल्ला मचा था। दलाल के फ़्लैट से तीन गोलियाँ चलने की आवाज़ आयी। लोगों ने पुलिस

को फ़ोन कर दिया था। दलाल भागा नहीं। पुलिस आयी तो वह अपनी बीवी की लाश के पास बैठा मिला। निर्विकार। शान्त।

22.

दलाल को सेंट्रल जेल भेज दिया गया था। मुकदमा जारी था। सारी गवाहियाँ और सबूत उसके खिलाफ़ थे। उसने भी कोई विरोध नहीं किया। सारे जुर्म कबूल कर लिए। पुलिस ने उस पर बीवी की हत्या समेत लड़कियों के अपहरण, उत्पीड़न, शोषण, धोखाधड़ी और साजिश रचने समेत वेश्यावृत्ति का रैकेट चलाने के आरोप लगाये। कभी-कभी वह सोचता कि जज साहब क्या सजा सुनायेंगे...? बीस साल बामशक्कत कैद, आजीवन कारावास या फाँसी...? जो भी सजा हो...। ज़िन्दगी में अब कुछ नहीं चाहिए। जो कुछ हो चुका था, उसके बारे में सोचना उसने बन्द कर दिया। हाँ, कभी-कभी ज़रूर उसे नेपालन के साथ गुजारे हुए दिन याद आते। तब उसे लगता कि कोई उसकी ख़बर ले आये...! लेकिन जब मिलने आये ऋतु ने बताया कि उसने नेपालन को एक पोर्न. फिल्म में देखा है तब उसे लगा कि ख़बर न मिलती तो ही अच्छा था।

ऋतु के ही हाथों नयनानन्द ने सन्देश भिजवाया कि अगर वह पिछला सब भूल कर साथ काम करना चाहे तो अब भी रास्ता निकल सकता है। वह बाहर निकलवा लेगा। लेकिन उसने इंकार कर दिया। ऋतु हैरान हुआ। उसने कहा कि नयनानन्द अब पुराना वाला आदमी नहीं रह गया है। वह सेलेब्रिटी स्वामी बन गया है। बड़े-बड़े लोग उसके पास पहुँच रहे हैं। वह एक आध्यात्मिक ब्राण्ड है। उसका शिष्य बनना फैशन है। उसके प्रवचन ख़ूब चल रहे हैं। मोहिनी मजूमदार ए ग्रेड की आइटम डाँसर हो चुकी है। उसका डाँस होना मात्र. फिल्म के हिट होने की गारण्टी है। ऋतु ने यह भी बताया कि इटली से रेनातो मिलानी का फ़ोन आया था। वह वहाँ पोर्न. फिल्मों के धन्धे में उतर कर ख़ूब पैसा कमा रहा है। अपनी. फिल्मों में वह देश का प्राइम मिनिस्टर बन कर लड़कियों के साथ सेक्स करता है... और ये फिल्में वहाँ धूम मचा रही हैं। असल में उसके देश का शक्तिशाली पीएम सिल्वियो बर्लुस्कोनी एक बड़े सेक्स स्कैंडल में फँस गया है और पीएम का रूप धरे रेनातो की 'पोर्न रियलिटी' ने लोगों को उसका दीवाना बना दिया है...! ...और ऋतु का धन्धा? ख़ूब फल-फूल रहा है। बहार आयी हुई है। उसने दलाल से कहा, 'तू भी बाहर आ जा। ज़िन्दगी में ख़ूब मजे हैं यार। क्यों जेल में सड़ रहा है? नयनानन्द के ऑफर में बुराई क्या है...? लाइफ में इमोशनल होकर सोचने का कोई फ़ायदा नहीं।'

दलाल को चुप देख कर ऋतु ने उसके कंधे पर हाथ रखा और बोला, 'टेक योर टाइम बडी। ठण्डे दिमाग़ से सोचना...।'

दलाल ने गहरी साँस लेकर छोड़ी और मुलाकाती कक्ष की खिड़की से खुले आसमान को निहारने लगा।

दलाल की कहानी पर यहाँ विराम लगने के बाद इस नाचीज़ लेखक के जीवन में खालीपन आ गया।

अब क्या लिखे...?

बुरी ख़बरों के दौर में एक अच्छी ख़बर की आस बाँधे कम्पनी-दर-कम्पनी कई आकर्षक रिज्यूमे भी लिखे और भेजे जा चुके थे। बैंक बैलेंस, टेंशन और ब्लड प्रेशर का हाल कहने-सुनने लायक नहीं रह गया था। नाचीज़ के भ्रम दूर हो चुका थे...

—कि रिसेशन का सामना कर रहे लोगों में वह दूसरों से अलग है।

—कि 'स्टडी की कस्टडी' उसे मन्दी की सुनामी से ज़िन्दगी पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से बचा लेगी।

—कि मन्दी के दिनों को भुगतते हुए उसके अनुभवों को लिखना 'राइटिंग थैरेपी' का काम करेगा।

कुछ नहीं बदला। न ही निकट भविष्य में बदलने के आसार दिखते थे। सब कुछ ज्यों का त्यों था। कहीं से रिज्यूमे का जवाब नहीं था। मोबाइल पर न कॉल आता था, न मैसेज। हर तरफ़ सन्नाटा था। शोर था तो सिर्फ़ उन ख़बरों का जो डर और चिन्ताएँ बढ़ाती थीं। कई ख़बरों पर तो विश्वास ही नहीं होता था, लेकिन उन पर अविश्वास करने का ठोस कारण भी नहीं होता था। एक बुरी ख़बर जाती थी, चार उससे बुरी ख़बरें आती थीं। निराशा चार गुना, तो हताशा सौ गुना बढ़ती...।

नाचीज़ चिन्ताओं में डूबा था कि वराण्डे में बिल्ली की आवाज़ आयी।

'म्याऊँ... म्याऊँ...।' वह बाहर से आयी थी। उसकी आवाज़ उस रात कुछ अलग थी, जिसे सुनते ही बच्चे खेल छोड़ कर उसकी तरफ़ लपके। उनके सामने उसने तीन मछलियाँ रखी दीं। देखते ही बच्चे खुशी से झूम उठे। उनके खिले चेहरे देख कर बिल्ली का मन भर आया। कितने दिनों के... महीनों के बाद... बच्चों की इच्छा वह पूरी कर पा रही है!

...और फिर माँ-बच्चों ने मिल कर जश्न मनाया। छक कर खाया, खेले और अपने-अपने बिस्तर पर पहुँच गये।

तभी एक बच्चे ने कहा, 'म्याऊँ... म्याऊँ... माँ आज मुझे राजा योगानन्द वाली कहानी याद आ रही है। तुमने उस दिन सुनाई थी, जब हम मछलियों के लिए जिद कर रहे थे और मछलियाँ नहीं मिली थीं...।'

माँ बोली, 'सो जाओ, अब तो पेट भर मछली खाई ना...!'

वह बोला, 'हाँ माँ... लेकिन तुमने यह नहीं बताया कि रानी भ्रष्ट हो गयी, यह जानने के बाद राजा ने क्या किया...?'

माँ बोली, 'उसे संसार से वैराग्य हो गया।'

दूसरे ने पूछा, 'वैराग्य क्या होता है माँ...?'

माँ बोली, 'वैराग्य मतलब मोह खत्म हो गया... रानी से... राज्य से... संसार से...। उसे किसी से प्यार नहीं रहा।'

तीसरा बच्चा माँ की बात खत्म होते ही बोला, 'और तुम लोगों को पता है... जब किसी के दिल में प्यार नहीं रह जाता तो वह बहुत ख़तरनाक हो जाता है...। वह फिर कुछ भी कर सकता है... जैसे राजा योगानन्द ने किया...।'

माँ चौंकी, 'क्या किया...?'

वह बोला, ‘हमारी क्लास के कुछ और बच्चों को भी राजा योगानान्द की कहानी मालूम है... वह कहते हैं कि राजा ने बदला लिया... रानी से भी और उसे भ्रष्ट करने वालों से भी...’

बाकी बच्चे टकटकी बाँधे उसे देखने लगे। उनके कान खड़े थे।

बच्चा बोलता गया, ‘राजा को जब रानी के सच का पता चला तो उसने राज्य के सबसे कुशल चित्रकार को बुलवाया और उसके सामने रानी को निर्वस्त्र बैठा कर उसका चित्र बनवाया...। चित्र बिल्कुल जीवन्त था। ऐसा लगता था, मानो रानी सामने प्रत्यक्ष बैठी है। चित्र में सिर्फ़ एक कमी थी जो चित्रकार ने राजा के कहने से छोड़ी थी...’

‘क्या...,’ उसके भाइयों ने एक साथ सवाल किया।

‘गोरी रानी की दार्इं जाँघ के अन्दर की तरफ़ एक भूरा तिल था। वह चित्र से गायब था...! चित्र पूरा होने के बाद राजा ने रानी को अपनी तलवार से मौत के घाट उतार दिया। किसी को कानोंकान ख़बर नहीं हुई। इसके बाद उसने रानी का चित्र एक कमरे में लगाया और एक-एक राज कर्मचारी को उसे देखने बुलाया...। जिन्होंने कभी रानी को देखा नहीं था, वे तो चित्रकार की सराहना करते हुए चले गये... लेकिन जिन्होंने रनिवास में सेंध लगाई थी, वे चित्र की सराहना करते हुए राजा को यह बताना नहीं भूले कि इसमें एक कमी है... चित्रकार रानी की दार्इं जाँघ के अन्दर की तरफ़ का भूरा तिल बनाना भूल गया है...! ऐसे सभी लोगों को राजा ने पकड़ कर ख़ुद अपने हाथ से सजा दी... मौत की नींद सुला दिया... समझे...!!’

बिल्ली सिर से पूँछ तक काँप गई...! बच्चे के मुँह से यह कहानी सुन कर उसकी नींद उड़ गयी। उसका मन बेचैन हो गया। वह कल स्कूल जाकर ज़रूर प्रिंसिपल से मिलेगी और शिकायत करेगी... क्लास में कैसी अश्लील और हिंसक बातें सीख रहे हैं बच्चे! फिर कुछ पल बाद वह सोचने लगी कि उसे जिस कहानी का पता था, वह सच है या जो बच्चे ने सुनाई वह? क्या योगानन्द की कहानी समय के साथ बदल गयी या हमारे समय में अश्लीलता और हिंसा हर तत्व में घुस चुकी है...? बच्चों की कहानी तक में!! वह उलझन में पड़ गयी।

बच्चे सो चुके थे। बिल्ली उनकी दिन भर की शरारतों और बातों को याद करती हुई स्नेह से उन्हें निहार रही थी। अचानक उसने महसूस किया कि बच्चे बड़े हो रहे हैं। वे अपनी आँखों से भी संसार को देख रहे हैं। अपनी बुद्धि से भी समझ रहे हैं। अब वे सिर्फ़ उस पर निर्भर नहीं रहे। उसके मन में खुशी पैदा हुई और और थोड़ी चिन्ता भी।

आभार

महानगर मुम्बई और जिला गाजियाबाद में लिखे गये इस उपन्यास की शुरुआत 2009 में हुई थी। यहाँ देखा-सुना-गुना इसमें बुना गया है। इन दोनों शहरों का मैं आभारी हूँ। इस दौरान ज़िन्दगी के रंग बदलते रहे। तमाम उतार-चढ़ाव के बीच कथानक गढ़ा जाता रहा। लोग मिलते और बिछुड़ते रहे। जिनसे इसमें आये विषयों पर संवाद हुआ। वे इस उपन्यास की यात्रा के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष साक्षी बने। उन्होंने देश-काल-स्थितियों को समझने में सहायता की। ख़ास तौर पर श्री राजेश रपरिया, श्री बृज बिहारी चौबे और श्री मनीष दीक्षित का मैं आभारी हूँ। उपन्यास को अन्तिम रूप देने में श्री हबीब कैफी और हार्पर हिन्दी की कमीशनिंग एडिटर मीनाक्षी ठाकुर ने मूल्यवान सलाह दी। अध्याय 14 में बिहारी भाषा के संवाद श्री बृज बिहारी चौबे की मदद से लिखे गये हैं। मेरे नन्हें बच्चों कोणार्क और यमन ने अपने हिस्से का चंचल समय मुझे यह लिखने के लिए दिया। यह सब असम्भव जैसा कुछ सम्भव न हो पाता अगर मेरी जीवन संगिनी सोनाली ने कठिन दिनों में साथ और साहस न दिया होता।

दलाल की बीवी
मन्दी के दिनों में लव सेक्स और धोखे की कहानी

आपके हाथों में रवि बुले का पहला उपन्यास है। नर्मदा नदी के तट पर बसे जबलपुर (मध्य प्रदेश) में 5 सितम्बर 1971 को रवि का जन्म हुआ। वहीं पढ़ाई की और लेखन की शुरुआत भी। हिन्दी साहित्य और भाषा विज्ञान में स्नातकोत्तर। बीते दो दशकों से पत्रकारिता में सक्रिय। 2008 में रवि का पहला कहानी संग्रह आया था, *आईने सपने और वसंतसेना*। 2012 में आये दूसरे संग्रह यूं न होता तो क्या होता में उनकी चार लम्बी कहानियाँ हैं। इन दिनों रवि प्रतिष्ठित हिन्दी दैनिक *अमर उजाला* के मुम्बई ब्यूरो प्रमुख हैं। ravibuleiy@gmail.com पर उनसे सम्पर्क किया जा सकता है।

हार्पर हिन्दी
(हार्परकॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया) द्वारा 2014 में प्रकाशित

हार्पर हिन्दी हार्परकॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया का हिन्दी सम्भाग है
पता : ए-75, सेक्टर-57, नौएडा—201301, उत्तर प्रदेश, भारत
ISBN : 9789351363088
e-ISBN : 9789351363095

टाइपसेटिंग : निओ साफ़्टवेयर कन्सलटैंट्स, इलाहाबाद
मुद्रक : थॉम्सन प्रेस (इंडिया) लि.